भूगोल-शिक्षण

(ट्रेनिङ्ग कालेज तथा नार्मल स्कूल के छात्राध्यापकों के लिये)

लेखक

सीताराम जायसवाल, एम.ए., एल.टी.

बनारस

नन्दकिशोर ऐण्ड ब्रदर्स.

प्रथम संस्करण] १९४८. [मूल्य डेढ़ रुपये

भूमिका

'भूगोल-शिक्षण' शिक्षण संस्थाओं के छात्राध्यापकों तथा भूगोल के अध्यापकों के लिए है। आधुनिक युग में भूगोल की शिक्षा का जो महत्त्व है, उसे देखते हुए कोई ऐसी पुस्तक का हिन्दी में न होना जो भूगोल के अध्ययन-अध्यापन में सहायता प्रदान करे, एक बहुत बड़ी कमी है। इसी कमी को पूरा करने का प्रयास मैंने किया है। अँगरेजी में भूगोल-शिक्षण पर अनेक पुस्तकें हैं। उनकी अलग-अलग विशेषतायें हैं। प्रस्तुत पुस्तक में मैंने उन विशेषताओं को अपनाते हुए भारतीय परिस्थितियों के दृष्टिकोण से भूगोल शिक्षण पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। आशा है 'भूगोल-शिक्षण' भूगोल के अध्यापन में इतना सहायक होगा कि प्रत्येक विद्यार्थी भौगोलिक प्रभावों को पूर्ण रूप से समझ लेगा।

श्रीनन्दकिशोर ऐण्ड ब्रदर्स ने इस पुस्तक को प्रकाशित कर 'भौगोलिक-भारत' की जो सेवा की है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। पुस्तक लिखते समय जिन लेखकों के ग्रंथों से मैंने लाभ उठाया है, उन्हें धन्यवाद देता हूँ। यदि किसी विद्वान् को इस पुस्तक में कोई त्रुटि मिले, तो उपयोगिता की दृष्टि से सूचना के लिए निवेदन करता हूँ।

काशी, शुक्रवार,
सौर १८ पौष, संवत् २००४ } सीताराम जायसवाल.

विषय-सूची

भूगोल का महत्त्व

शिक्षा के जो विषय हैं, वे वास्तव में मानवीय सभ्यता के विकास की कड़ियाँ हैं। मानव ने ज्यों ज्यों अनुभव प्राप्त किया, वह वस्तुओं की उपयोगिताओं को समझता गया और जीवन की आवश्यकताओं के विषय में भी धारणाएँ बनाता गया। इन्हीं के आधार पर मानव जीवन की गति निश्चित की गई। सभ्यता और संस्कृति के विकास में शिक्षा का महत्त्व ज्यों ज्यों स्पष्ट होता गया, मनुष्य शिक्षा-प्रणाली और विषयों में परिवर्तन करता गया। पहले विज्ञान का इतना विकास नहीं हुआ था, जितना कि आज हो गया है। इसलिए पुराने ज़माने में लिखना, पढ़ना और हिसाब लगाना ही शिक्षा में प्रमुख विषय थे। लेकिन जब दुनिया के सामने विज्ञान ने एक नई परिस्थिति ला दी तो उसके विचारों और मान्यताओं में भी परिवर्तन हुआ। परिस्थिति के बदले हुए रूप को देखकर शिक्षा के क्षेत्र में कई नये विषय आए। और इस प्रकार भूगोल का भी जन्म हुआ।

भूगोल शिक्षा के विषय में सबसे अन्त में सम्मिलित हुआ। इसका कारण हमें उस समय स्पष्ट हो जाता है जब हम भूगोल की रचना को देखते हैं। हमें भूगोल में विज्ञान के जितने विषय हैं सबकी बातें मिलती हैं। भूगर्भ विद्या, वनस्पतिशास्त्र, रसायन, तथा अन्य वैज्ञानिक विषयों की प्रमुख विशेषताएँ भूगोल में सम्मिलित हैं। इसी प्रकार भूगोल में अर्थशास्त्र, राजनीति, इतिहास और संस्कृति की भी बातें मिलती हैं। वास्तव में भूगोल

में ऐसी कोई भी चीज़ नहीं हैं जो किसी न किसी अन्य विषय से सम्बन्धित न हो। इसलिये जब हम भूगोल की सभी बातों को विविध विषयों के सम्बन्ध के अनुसार बाँट देते हैं, तो भूगोल के पास अपना कहने के लिये कुछ रह नहीं जाता। लेकिन विज्ञान और कला जो एक दूसरे से अलग है, एक ऐसे स्थल पर मिलते हैं जहाँ जीवन उपस्थित होता है। जब हम जीवन को अपने दृष्टिकोण में रखते हैं तब हम देखते हैं कि विज्ञान और कला जो विपरीत क्षेत्र के विषय हैं, वास्तव में एक हैं, क्योंकि जीवन का उद्देश्य उन दोनों को मिला देता है। भूगोल का महत्त्व जीवन के क्षेत्र में विज्ञान और कला की एकता को लेते हुए प्रकृति के साथ मनुष्य ने जो समन्वय किया है उसी को स्पष्ट करना है। इसलिये भूगोल में विज्ञान के विषयों की विशेषताएँ हैं और साथ ही सभ्यता और संस्कृति से सम्बन्धित विषय भी हैं। अतः भूगोल, शिक्षा के चरमोत्कर्ष की अभिव्यक्ति होने के कारण शिक्षा के विषयों में सबसे अन्त में सम्मिलित हुआ।

प्राचीन और नवीन भूगोल

लेकिन भूगोल का रूप सदा एक सा नहीं रहा। यद्यपि यह विषय अन्य विषयों की तुलना में नवीन है, फिर भी इसके सम्बन्ध में एक ही प्रकार की धारणाएँ नहीं रही हैं। भूगोल का पुराना स्वरूप आज बिल्कुल बदल गया है। विज्ञान की उन्नति के कारण जो नये नये आविष्कार हुए हैं, उनसे दुनिया की दूरी जाती रही है। वायुयान, तार-बेतार, टेलीविज़न तथा अन्य आविष्कारों के कारण संसार पहले की भाँति टुकड़ों में बटाँ नहीं

रहा। अब एक देश को उपज दूसरे देश को जहाज़ों द्वारा भेजी जाती है। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का प्राबल्य बढ़ा। ऐसी दशा में भूगोल का महत्त्व बढ़ गया। इसलिये उसके रूप में भी परिवर्तन हुआ। भूगोल की प्राचीन शिक्षाप्रणाली में भूगोल उस विद्या को कहते थे जिससे दुनियाँ का हाल मालूम हो। लेकिन आधुनिक भूगोल में केवल नदी, पहाड़, द्वीप और नगर की स्थिति जान लेना महत्त्वपूर्ण नहीं है। आधुनिक भूगोल पहाड़ और नदियों की स्थिति का जो प्रभाव मनुष्य के जीवन और सभ्यता पर पड़ता है, उस ओर भी निर्देश करता है।

नवीन भूगोल आधुनिक शिक्षा सिद्धान्त और मनोविज्ञान पर अवलम्बित है। इसलिए जब बालक शिक्षा का केन्द्र हो गया तब नवीन भूगोल में रटाई कम हो गई और बालक के मनोरंजन और रुचि को ध्यान में रखकर भूगोल का पाठ्यक्रम तैयार किया गया। विज्ञान का भूगोल से सम्बन्ध होने के कारण नवीन भूगोल ने प्रत्येक तथ्य के कारणों को बताना आवश्यक समझा। प्राचीन भूगोल का विद्यार्थी केवल यह जानता है कि बनारस गंगा नदी के किनारे पर बसा है, इलाहाबाद संयुक्तप्रान्त की राजधानी है, और कानपुर में कपड़े की मिलें हैं। लेकिन बनारस गंगा नदी के किनारे क्यों बसा, कानपुर में कपड़े की मिलें क्यों हैं, यह वह नहीं बता पाता। आधुनिक भूगोल का विद्यार्थी सभी भौगोलिक तथ्यों का कारण ढूँढ़ता है। वह जानता है कि भूगोल की प्रत्येक बात के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है, जिसका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है इसलिये आधुनिक भूगोल में उन बातों के बारे में पहले बताया जाता है,

जिनका प्रभाव दुनिया पर पड़ता है, जिनके कारण भौगोलिक ज्ञान का विस्तार होता है। भूगोल का अच्छा अध्यापक वही माना जाता है जो प्रत्येक भौगोलिक तथ्य को कारण सहित बताता है। कानपुर में कपड़े की मिलें हैं केवल इतना ही बता देना पर्याप्त नहीं होगा, वरन् इसका कारण भी बताना होगा।

आधुनिक भूगोल की शिक्षा का आधार

आधुनिक भूगोल की शिक्षा का आधार भूगोल की वे बातें हैं जो प्रत्येक भौगोलिक तथ्य पर प्रभाव डालती हैं। इन बातों को पाँच शीर्षकों के अन्तर्गत रखा जा सकता है :–(१) प्राकृतिक दशा, (२) स्थल की बनावट (३) जलवायु (४) वनस्पति (५) पशु-पक्षी। दुनिया के किसी स्थल के भूगोल के ज्ञान का आधार यही पाँच बातें हैं। इन्हें अब हम तनिक विस्तार से समझने का प्रयास करेंगे।

(१) प्राकृतिक दशा—किसी देश की प्राकृतिक दशा का रूप प्रकृति पर निर्भर है। प्रकृति ने अपनी इच्छानुसार पहाड़, मैदान, नदी आदि किसी देश के लिए बना दिया है। उसे मनुष्य घटा और बढ़ा नहीं सकता। किसी देश में पहाड़ ही पहाड़ हैं, तो कहीं रेगिस्तान ही है। वहां के लोग रेगिस्तान को उपजाऊ नहीं बना सकते। इस प्रकार प्राकृतिक दशा का किसी भी देश के भूगोल पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

(२) स्थल की बनावट—इस शीर्षक के अन्तर्गत पृथ्वी के भीतर पाई जाने वाली धातुएं आती हैं। कहीं लोहा, कहीं सोना या कोयला मिलता है। मनुष्य यदि चाहे भी तो वह कहीं

किसी धातु की खान नहीं बना सकता। इसलिए किसी देश के भूगोल की रूप-रेखा पर स्थल की बनावट का प्रभाव पड़ता है।

(३) जलवायु—जलवायु का प्रभाव भी भूगोल का आवश्यक अंग है। बंगाल में धान की खेती, पंजाब में गेहूँ की खेती और आसाम में चाय के बग़ीचे जलवायु के कारण हैं। हमारे दैनिक जीवन पर भी जलवायु का प्रभाव पड़ता है। जाड़े में हम ऊनी गरम कपड़े पहनते हैं, गर्मी के दिनों में हल्के सूती कपडे पहनते हैं। मौसम के अनुसार हमें कपड़ों की आवश्यकता होती है, जिसे पूरा करने के लिए ऊनी और सूती कपड़े के कारखाने हैं। यह सब जलवायु के प्रभाव के ही कारण है।

(४) वनस्पति—प्राकृतिक दशा और स्थल की बनावट पर जब जलवायु का प्रभाव पड़ता है तब वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं। पहाड़ों की तराई में घने जंगल वर्षा के कारण होते हैं। कहीं घने जंगल, कहीं काँटेदार झाड़ियाँ, कहीं सदाबहार के पेड़, कहीं चीड़ और देवदार के जंगल, यह सब अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ जमीन की बनावट और वहाँ के जलवायु के अनुसार उत्पन्न होती हैं। वनस्पतियों का प्रभाव भी प्रत्येक देश के भूगोल पर पड़ता है। कनाडा और स्वेडन में काग़ज बनते हैं क्योंकि वहाँ के जंगलों की लकड़ियाँ काग़ज बनाने के काम में आती हैं। ब्रह्मदेश से सागौन के लट्ठे दूसरे देशों को भेजे जाते हैं क्योंकि वहाँ सागौन के पेड़ उगते हैं। यह सब प्राकृतिक दशा, स्थल की बनावट और जलवायु के प्रभाव के कारण है।

(५) पशु-पक्षि—ऊपर बताए गये चार कारणों का सामूहिक प्रभाव पशु और पक्षियों के जीवन पर पड़ता है। बन्दर हमें जंगलों में मिलेंगे, रेगिस्तान में नहीं। ऊँट रेगिस्तान के लिए है। उसके पैर की बनावट बालू पर चलने लायक होती है। उसका कद, उसकी सांस लेने की क्रिया, उसके पेट में पानी की थैली इत्यादि इसलिए है कि मरुस्थल में ऊँट रह सके, चल सके। इसी प्रकार मानव पर प्राकृतिक दशा, स्थल की बनावट, जलवायु और वनस्पतियों का प्रभाव पड़ा है। मनुष्य ने अपने रहने के लिए घने जंगल नहीं चुना, वरन् मैदान चुना जहाँ वह रह सके। ज्यों ज्यों मनुष्य अनुभव प्राप्त करता गया, त्यों त्यों वह अपने रहन-सहन में सुधार करता गया और प्राकृतिक कठिनाइयों को कम करता गया। उदाहरण के लिए उसने जहाँ पानी कम बरसता है, खेती की सिंचाई के लिए नहरें निकाली हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि भौगोलिक प्रभाव के पांच कारण हैं। श्री डी० स्टैम्प ने इस भौगोलिक प्रभाव के पांच कारणों का एक रेखाचित्र दिया है जो इस प्रकार है :—
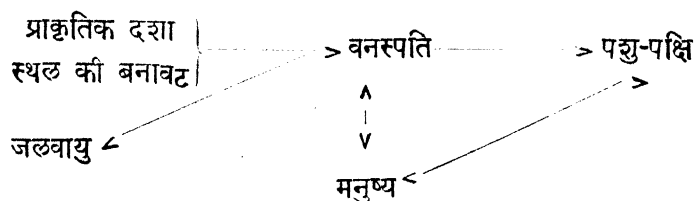
अतः भूगोल के अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह भूगोल पढ़ाते समय भौगोलिक प्रभाव के इन पाँच कारणों को ध्यान में रखे और भूगोल की सभी बातों को इनके आधार पर समझावे।

भूगोल की परिभाषा

इन सब भौगोलिक प्रभाव के कारणों को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि भूगोल वह अध्ययन है जिसके द्वारा यह ज्ञात होता है कि मनुष्य ने पृथ्वी को अपने रहन-सहन के योग्य कैसे बनाया और पृथ्वी की बनावट का मनुष्य के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा। प्राकृतिक परिस्थितियों के साथ किस प्रकार समझौता कर मनुष्य अपना जीवन व्यतीत करता है, यह भूगोल ही बता सकता है।

भूगोल-शिक्षण का उद्देश्य

भूगोल की शिक्षा क्यों आवश्यक है, और भूगोल की शिक्षा द्वारा किन उद्देश्यों की पूर्ति होती है? यदि हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं तो शिक्षा के उस साधारण उद्देश्य की ओर ध्यान जाता है, जिसमें जीविका पर अधिक जोर दिया जाता है। साधारणतः लोग शिक्षा इसलिए आवश्यक समझते है कि शिक्षित होने पर जीविका-निर्वाह का साधन मिल जायगा। अगर हम शिक्षा का उद्देश्य जीविका के प्रश्न को हल करना ही मान लें, तो हम देखते हैं कि भूगोल की शिक्षा के द्वारा हम उन वस्तुओं का ज्ञान करा सकते हैं जो जीविका के लिए अत्यन्त आवश्यक है। मनुष्य की जीविका का आधार व्यापार है। किसी तरह का व्यापार करके मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। नौकरी भी एक तरह का व्यापार है जो कि काम के बदले में दाम चाहती है। भूगोल की शिक्षा में देश विदेश की उन बातों का ज्ञान कराते हैं जो जीवन पर प्रभाव डालते हैं। भूगोल द्वारा हमें हर एक देश की प्राकृतिक दशा का

ज्ञान होता है। उसके आधार पर यह जान जाते हैं कि किस प्रदेश में किस वस्तु का बाहुल्य है और किस वस्तु की कमी। इस ज्ञान के आधार पर व्यापार बढ़ता है। जो बड़े बड़े व्यापारी हैं उन्हें मालूम होता है कि कपास कहाँ अधिक पैदा होती है, तेलहन की मांग सबसे अधिक कहाँ हो सकती है। इस प्रकार भूगोल प्रत्येक देश की प्राकृतिक बनावट और उसकी उपज का ज्ञान कराकर शिक्षा के 'जीविका-निर्वाह' के उद्देश्य की पूर्त्ति करता है।

लेकिन शिक्षा का उद्देश्य केवल रोटी कमाना नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का मानसिक विकास भी करना है। बिना मानसिक विकास के मनुष्य की सांस्कृतिक चेतना नहीं जागती। यदि रोटी कमाना ही शिक्षा का उद्देश्य मान लिया जाय तो मनुष्य पशु की भाँति अपना पेट भर कर निश्चिंत हो जायेगा। उसका स्वार्थ इतना प्रबल हो उठेगा कि उसकी मानवता नष्ट हो जायेगी और वह अपनी भूख मिटाने के लिए नीच से नीच कर्म करने के लिए तत्पर हो जायेगा। इसलिए शिक्षा मनुष्य का विकास इस प्रकार चाहती है जिससे मनुष्य में मानवता के प्रति प्रेमभाव उत्पन्न हो। वह अपने देश और समाज के प्रति उत्तरदायी हो। उसकी कल्पना इतनी विस्तृत हो जिसके द्वारा उसे बाहरी दृष्टि से भिन्न भिन्न रूप में दिखाई पड़ने वाली चीजें एक मालूम हों। शिक्षा के इस उद्देश्य को हम सांस्कृतिक उद्देश्य कहेंगे और इसकी पूर्ति भूगोल द्वारा पर्याप्त मात्रा में होती है। देश-विदेश का हाल पढ़कर बालक दूसरे देशों के लोगों के जीवन की कल्पना करता है। उनके खाने-पीने और रहन-सहन का ज्ञान मानवीय दृष्टि से करता है। उसे

जीवन पर भौगोलिक प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। इस प्रकार वह भूगोल के उस विस्तृत उद्देश्य की पूर्ति करता है जो विश्व में एकता और मानवता के प्रति सहानुभूति रखता है। इसके आधार पर वह केवल अपने देश ही का अच्छा नागरिक नहीं बनता, वरन् संसार का सुनागरिक हो जाता है। इस तरह विश्व में जनतंत्र बलवान् होता है और प्रत्येक देश के लोगों के लिए सुख और शान्ति की वृद्धि होती है।

भूगोल के दो उद्देश्य व्यवहारिक और सांस्कृतिक हैं जिनपर साधारण दृष्टि से विचार किया गया है। इनके द्वारा **जीवन पर भौगोलिक प्रभाव** स्पष्ट हो जाता है। लेकिन भूगोल के विशेष उद्देश्य भी होते हैं जो भूगोल के विभिन्न पाठों द्वारा पूरे किए जाते हैं। इन पर हम आगे चलकर विचार करेंगे।

भूगोल-शिक्षण की पद्धतियाँ

भूगोल को हमने स्थूल रूप से समझा। पर जब भूगोल का अध्ययन विस्तार से प्रारम्भ होता है तो उसके रूप में कई भेद उत्पन्न हो जाते हैं, जो इस प्रकार हैं:—(१) प्राकृतिक भूगोल (२) प्रादेशिक भूगोल (३) मानवीय भूगोल (४) तुलनात्मक भूगोल।

ये रूपभेद वास्तव में भूगोल-शिक्षण की पद्धतियाँ हैं। इन भेदों को हम और समझने का प्रयास करेंगे। पहले प्राकृतिक भूगोल को लीजिए।

प्राकृतिक भूगोल पद्धति—इस में **प्राकृतिक दशा, स्थल की बनावट, जलवायु, वनस्पति औरपशु-पक्षियों के विषय**

में बताया जाता है। प्रकृति ने पृथ्वी पर किस प्रकार और कितना प्रभाव डाला है और मनुष्य के लिए कैसे वातावरण का निर्माण किया है, इन सब बातों का अध्ययन प्राकृतिक भूगोल के क्षेत्र में आता है। भूगोल की समुचित-शिक्षा में प्राकृतिक प्रभावों का जो स्थान है, उसे देखते हुए प्राकृतिक भूगोल का अध्ययन आवश्यक है। प्राकृतिक भूगोल के विषय में हम पहले लिख भी चुके हैं। अतः यहाँ इतना ही पर्याप्त होगा।

प्रादेशिक भूगोल-पद्धति—भूगोल शिक्षण की दूसरी पद्धति प्रादेशिक है। किसी देश के भौगोलिक शिक्षण को भौगोलिक प्रदेशों के आधार पर भी करते हैं। भौगोलिक प्रदेश का तात्पर्य यह है कि एक प्रदेश दूसरे प्रदेश से भौगोलिक दृष्टि से भिन्न है। उदाहरण के लिए एक हिमालय प्रदेश और दूसरा गंगा के मैदान का प्रदेश है। इन प्रदेशों की सीमा को प्रकृति ने निर्धारित किया है। शासन-सत्ता द्वारा निर्मित सीमाएँ भौगोलिक प्रदेशों पर लागू नहीं होतीं। राजनीतिक दृष्टि से हिमालय, पंजाब, संयुक्तप्रान्त, नैपाल और भूटान में है। इस प्रकार हिमालय कई भागों में बँट जाता है। पर प्रादेशिक भूगोल में हिमालय को एक प्रदेश मानते हैं। ऐसा केवल अध्ययन की दृष्टि से करते हैं। किसी देश के इस प्रकार का प्रादेशिक विभाजन, इसलिए और भी करते हैं कि भूगोल में पृथ्वी को मनुष्य के घर के रूप में मानते हैं। प्रादेशिक भूगोल से यह लाभ है कि विद्यार्थी किसी देश के भूगोल को सरलता से और अल्पकाल में जान जाता है।

भौगोलिक प्रदेशों की सीमा के विषय में यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि वे सीमायें राजनीतिक सीमाओं की भाँति नहीं होतीं।

एक भौगोलिक प्रदेश की सीमा दूसरे भौगोलिक प्रदेश की सीमा के भीतर भी दिखाई देती है। इसलिए भौगोलिक प्रदेश की सीमा में इन छोटी छोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया जाता। किसी प्रदेश की मोटी मोटी बातों पर ध्यान देकर भौगोलिक प्रदेश की सीमा निर्धारित की जाती है। और यह कार्य किसी प्रदेश के प्राकृतिक दशा और जलवायु पर ध्यान देकर सरलता से किया जा सकता है। किसी प्रदेश की प्राकृतिक दशा और जलवायु पर वहाँ की वनस्पति और पशु-जीवन निर्भर है। **प्रादेशिक भूगोल के बड़े प्रदेश का विभाजन जलवायु और छोटे प्रदेश का विभाजन प्राकृतिक दशा के आधार पर किया जाता है।** प्रादेशिक भूगोल में दुनिया को बारह प्रदेशों में बाँटते हैं जो इस प्रकार हैं :—

(१) बर्फीले प्रदेश
(२) शीत वन प्रदेश
(३) चौड़ी-पत्ती के जंगलों का प्रदेश
(४) शीतोष्ण घास के मैदान
(५) भूमध्यसागर जलवायुवाले प्रदेश
(६) रेगिस्तानी प्रदेश
(७) विषुवत् रेखा के जंगली प्रदेश और उष्ण कटिबंध के मैदान
(८) मानसून प्रदेश
(९) प्रशान्त द्वीप समूह
(१०) ऊँचे पर्वत और पठारी प्रदेश
(११) यूरोप के उद्योगी प्रदेश
(१२) उत्तरी अमेरिका के उद्योगी प्रदेश

हिन्दुस्तान को निम्नलिखित प्रादेशिक भागों में बाँटते हैं:—

(१) हिमालय प्रदेश

(२) सिंधु और गंगा का मैदान

(३) पूर्वी और पश्चिमी किनारों के मैदान

(४) दक्षिणी पठार

मानवीय भूगोल-पद्धति—

मानवीय भूगोल, वह पद्धति है जो मनुष्य के प्राकृतिक वातावरण में किए गये परिवर्तनों का अध्ययन करती है। मनुष्य सम्पूर्णत: प्राकृतिक परिस्थितियों पर निर्भर नहीं रहता। वह कुछ सीमा तक स्वतंत्र है। चाहे तो वह प्राकृतिक परिस्थितियों के साथ अपने जीवन का सामंजस्य स्थापित करे या न करे। हम देखते हैं कि कुछ देशों के लोगों ने अपने देश की प्राकृतिक परिस्थितियों से लाभ उठाया है। ब्रिटिश द्वीप-समूह के लोगों ने अपने देश में कोयले को खानों को खूब खोदा है और कोयला निकाला है। लेकिन चीन देश के निवासियों ने अपने देश में पाये जानेवाले खनिज पदार्थों को खोद नहीं निकाला। उन लोगों ने अपने देश की प्राकृतिक परिस्थितियों से लाभ नहीं उठाया। यहाँ एक बात स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि ब्रिटेन की उन्नति इसलिए नहीं हुई कि वहां कोयले की खानें पाई जाती हैं। वरन् इसलिए हुई कि वहाँ के निवासियों ने अपने देश में पाये जानेवाले खनिज पदार्थों से लाभ उठाया। उन्होंने कोयले की खानों को खोदा और कोयले को निकाला। इस लिए उनके देश की उन्नति

हुई। यदि वे कोयले की खानें न खोदते तो वे भी चीनदेश की भाँति पिछड़े रहते।

मानवीय भूगोल के अध्ययन में हम यह भी देखते हैं कि मनुष्य ने अपने जीवन की उन्नति के लिए **प्राकृतिक कठिनाइयों का सामना** किया और विज्ञान के द्वारा उन्हें अपने अनुकूल बनाया। मनुष्य ने पहाड़ों में सुरंग बनाई जिससे वह पहाड़ के पार रेल या मोटरों को ले जा सके। मनुष्य ने जहाज़ बनाया जिससे वह अथाह समुद्र के मार्ग से एक देश से दूसरे देश में जा सके। पुराने ज़माने में जब जहाजों का आविष्कार नहीं हुआ था, समुद्र मार्ग को कोई जानता ही न था। लेकिन अच्छे जहाजों के बन जाने पर लोगों ने समुद्री यात्रायें प्रारम्भ कीं और नये नये देश ढूँढ़ निकाले। आधुनिक युग में वायुयानों का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। अब हिन्दुस्तान से चीन वायु-मार्ग से बहुत कम समय में जा सकते हैं। पहले जब वायुयान नहीं बने थे, भारत से चीन जाने में बड़े दुर्गम पहाड़ी मार्गों से होकर जाना पड़ता था और यात्रा में महीनों समाप्त हो जाते थे। लेकिन आधुनिक युग में मनुष्य ने वायुयान बनाया और वायुमार्ग से वह कम समय में दूर से दूर देशों में पहुँचाया जाता है।

लेकिन मनुष्य ने विज्ञान के द्वारा **प्रकृति पर विजय** प्राप्त नहीं कर लिया। प्रकृति अब भी मानव पर अधिकार रखती है। जहाँ बहुत पानी बरसता है, वहां मनुष्य गेहूं उत्पन्न नहीं कर सकता। रेगिस्तान में मनुष्य खेती नहीं कर सकता। हर स्थान से मनुष्य कोयला, लोहा या सोना खोद कर निकाल नहीं सकता। प्रकृति ने जिस स्थान को जिस योग्य बनाया है, मनुष्य उस स्थान से उसी प्रकार का लाभ उठा सकता है।

गंगा के मैदान में मनुष्य खेती कर सकता है, क्योंकि प्रकृति ने गंगा के मैदान को खेती के योग्य बनाया है।

मनुष्य की आबादी भी प्राकृतिक सुविधाओं पर निर्भर रही है। जिस प्रदेश में मनुष्य अपने जीवन का निर्वाह सुगमता से कर सकता था, उस प्रदेश में जन-संख्या बहुत अधिक हो गई। उदाहरण के लिए बंगाल में जन-संख्या राजपुताने की तुलना में अधिक है क्योंकि बंगाल में मनुष्य का जीवन-निर्वाह सुगमता से हो सकता है। वहाँ धान की खेती के लिए पानी खूब बरसता है और धरती भी उपजाऊ है। लेकिन राजपुताने में बंगाल की भाँति धान नहीं पैदा होता। न तो वहाँ की धरती उपजाऊ है और न खेती की सिंचाई के लिए पर्याप्त वर्षा ही होती है। इसी प्रकार पहाड़ों में भी मनुष्य अधिक संख्या में नहीं बसा क्योंकि वहाँ उसके रहन-सहन के लिए सुविधाएँ नहीं के बराबर हैं।

मनुष्य की आबादी की भाँति मनुष्य के **उद्योग-धंधों पर भी प्रकृति का प्रभाव** पड़ा है। जिस प्रदेश में वर्षा और गर्मी पड़ती है और धरती उपजाऊ होती है, वहाँ के लोगों का ख़ास पेशा खेती करना होता है। भारतवर्ष के गंगा के मैदान के रहनेवालों का मुख्य पेशा खेती है। जो देश पहाड़ी है और जहाँ खनिज पदार्थ पाये जाते हैं, वहाँ के लोगों का पेशा खान खोदना हो जाता है। खनिज पदार्थों में यदि लोहा और कोयला मिला तो कई कारख़ाने खुल जाते हैं। इस प्रकार वहाँ के लोग कारीगरी का काम और मज़दूरी करते हैं।

उद्योग-धंधों की प्रगति के कारण मनुष्य के **समाज में भी**

परिवर्तन हुआ । व्यापार और व्यवसाय वृद्धि के साथ लेन-देन की सुविधा के लिये बैंक खुले । माल को एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने के लिए रेल की पटरियाँ बिछाई गईं । भारतवर्ष की ई० आई० रेलवे व्यवसाय ही के कारण बनी । हमारे देश के जितने भी बन्दरगाह हैं, उनका सम्बन्ध रेलों द्वारा देश के सभी प्रमुख नगरों से है ।

मानव समाज की सभ्यता ज्यों ज्यों उन्नति करती गई त्यों त्यों मानव **जीवन में विभिन्नताएँ** उत्पन्न होती गईं । लोगों ने ख़ास ख़ास कामों को सीखना प्रारम्भ किया और उस कार्य में विशेष योग्यता प्राप्त कर लिया । आधुनिक युग की विशेषता यह है कि एक मनुष्य किसी ख़ास काम में उस्ताद होना चाहिए । यदि कोई मोटर बनाने जानता है तो उसे मोटर के कल-पुर्जों की पूरी पूरी जानकारी होनी चाहिए । इसीलिए इंजीनियरिंग की पढ़ाई रखी गई । लोगों के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए डाक्टर का पेशा बना । अदालतों में इंसाफ करने के लिये वकील साहब मानव समाज में आए । अतः हम देखते हैं कि **भूगोल का अध्ययन बिना मनुष्य के जीवन के विभिन्न रूपों के देखे हुए अधूरा है । मानवीय भूगोल के अन्तर्गत हमें यही ज्ञात होता है कि मानव जीवन पर भौगोलिक प्रदेशों का कितना और कैसा प्रभाव पड़ा है ।**

तुलनात्मक भूगोल-पद्धति

भूगोल के अध्ययन और शिक्षा के लिए तुलनात्मक प्रणाली के आधार पर तुलनात्मक भूगोल की रचना की गई है । मनोविज्ञान के विशेषज्ञों का कथन है कि शिक्षा के लिये 'जाने से अनजाने

की ओर' प्रणाली सुविधाजनक होती है। बालक का जो ज्ञान है, उसकी सहायता लेते हुए उसे नई बातों का ज्ञान कराना ठीक समझा जाता है। इसलिए भूगोल को इस दृष्टिकोण से भी देखने, समझने और अध्ययन करने का प्रयास किया गया। तुलनात्मक भूगोल का प्रारम्भ स्कूल की इमारत, खेल के मैदान, गाँव, पास की नदी और पड़ोस के रेलवे स्टेशन को लेकर होता है। विद्यार्थी जो वस्तुएँ अपने घर में देखता है, उनका सहारा लेते हुए, उसे नई भौगोलिक बातें बताई जाती हैं। **घर के आधार पर गाँव का, गाँव के आधार पर तहसील का, तहसील के आधार पर जिले का, जिले के आधार पर देश के भूगोल की शिक्षा दी जाती है।** इसलिए तुलनात्मक भूगोल में पहले विद्यार्थी को उसके पास-पड़ोसकी भौगोलिक दशा का ज्ञान कराया जाता है फिर एक कड़ी से दूसरी कड़ी पर होता हुआ, अपने पिछले भौगोलिक ज्ञान की, नये भौगोलिक ज्ञान से तुलना करता हुआ वह भूगोल का समुचित अध्ययन करता है।

भूगोल के तुलनात्मक अध्ययन में विद्यार्थी को ज्ञात होगा कि संसार के कई प्रदेशों में बहुत अंशों तक समानता है। वह देखता है कि भारत के मानसूनी प्रदेश की भाँति हिन्दचीन, चीन और उत्तरी आस्ट्रेलिया में भी प्रदेश हैं। वह देखता है कि इटली की नदी गङ्गा नदी की भाँति इटली पर प्रभाव डालती है। उसे गंगा के डेल्टा और सिक्यांग नदी के डेल्टा में साम्य दिखाई पड़ता है। लेकिन फिर भी उसे ऐसे कोई प्रदेश नहीं मिलेंगे जिनमें पूर्ण साम्य हो। इसलिए उसे साम्य के साथ साथ अन्तर का भी अध्ययन कराना पड़ेगा।

भूगोल-शिक्षकों का अनुभव है कि भूगोल की शिक्षा उस समय सुविधा-जनक होती है जब भूगोल के प्रादेशिक तथा तुलनात्मक पद्धतियों का सम्मिश्रण कर दिया जाता है। ऐसा करने में समय की बचत होती है। दुनिया के कुछ प्रदेशों का जलवायु एक प्रकार का होता है, अतः वहाँ की वनस्पतियां, पैदावार और रहन-सहन एक ही प्रकार के होंगे। उदाहरण के लिए भूमध्यसागर जलवायु वाले प्रदेशों को लीजिए। भूमध्यसागर जलवायु कैलीफोर्निया, मध्यचील, दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका, और पश्चिमी आस्ट्रेलिया के दक्षिणी-पश्चिमी भाग में पाया जाता है। इन प्रदेशों की वनस्पतियाँ और पैदावार उसी प्रकार के हैं जिस प्रकार हमें भूमध्यसागर वाले प्रदेश में मिलते हैं। इसी प्रकार हम साम्य और अन्तर पर ध्यान रखते हुए, अमेज़न नदी के मैदान की तुलना कांगो नदी के बेसिन से, अरब के मरुस्थल की तुलना सहारा के रेगिस्तान से, उत्तरी अमेरिका के घास के मैदानों की तुलना एशिया के स्टेपीज़ से और कनाडा के जंगलों की तुलना साइबेरिया के जंगलों से कर सकते हैं।

तुलनात्मक पद्धति से भौगोलिक ज्ञान भली भाँति बढ़ता जाता है क्योंकि इस प्रणाली में बहुत सी बातें दुहरा दी जाती हैं। इसलिए विद्यार्थी उन्हें भूल नहीं पाता। तुलनात्मक भूगोल में रेखाचित्र (स्केच) का प्रमुख स्थान है। रेखाचित्र के द्वारा विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों की बातों को तुलना के लिए एक साथ रखा जा सकता है और उनका अध्ययन सुगमता से किया जा सकता है। उदाहरण के लिए भारतवर्ष के साथ जो अन्य देशों का व्यापार होता है, उसका रेखाचित्र देखिए। जिस देश के साथ जितना अधिक व्यापार होता है, उस देश को रेखाचित्र में

अधिक स्थान मिला है :—

भारतवर्ष का अन्य देशों से व्यापार

ग्रेट ब्रिटेन	ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य देश	जापान	संयुक्तराष्ट्र अमेरिका	जर्मनी	इटली	फ्रांस	मिस्र	लंका [illegible]

प्रारम्भिक कक्षाओं में भूगोल-शिक्षण

भूगोल क्या है और उसका शिक्षण कितने प्रकार से हो सकता है, यह पिछले पृष्ठों में लिखा जा चुका है। अब हमें यह देखना है कि भूगोल बाल कक्षा, एक और दो कक्षाओं में किस प्रकार पढ़ाना चाहिए। इन कक्षाओं में भूगोल पढ़ाने का उद्देश्य क्या है और बालक के मनोविज्ञान के अनुसार भूगोल की कौन सी बातें इन कक्षाओं में पढ़ा सकते हैं। यह तो हम जानते हैं कि प्रारम्भिक कक्षाओं के बालकों की रुचि खेलने-कूदने में अधिक रहती है। वे मिट्टी के खिलौने और आर्ट के काम में अधिक दिलचस्पी लेते हैं। भूगोल जैसा कि वह है, उसे हम उसी रूप में बालकों के सामने उपस्थित नहीं कर सकते। इस लिए हमें बालकों को उनके प्राकृतिक वातावरण में खेलने-कूदने देना चाहिए और साथ ही **उन्हें प्रकृति की कुछ साधारण बातों को, कहानी के ढंग से बताना चाहिए**। पाँच और ६ वर्ष के बच्चों की दैनिक जीवन में होने वाली घटनाओं में बड़ी रुचि रहती है। उन्हें सूर्योदय, संध्या, वर्षा, और आंधी को देखकर आश्चर्य होता है और वे इन दैनिक प्राकृतिक परिवर्तनों

को अपनी कल्पना के आधार पर सोचने और समझने की कोशिश करते हैं। हाथी, भालू, सिंह जैसे जानवरों को जब बालक देखते हैं तो उन्हें ऐसा लगता है मानों कोई बड़ी घटना हो गई हो। छोटे पौदे में जब फूल खिलते हैं तो बालक का कौतूहल जाग उठता है। उसे प्रकृति की प्रत्येक वस्तु न्यारी और प्यारी लगती है। नदी के पानी, नदी के किनारे के बालू और कंकड़, नदी में चलने वाली नाव सड़क पर दौड़ने वाली मोटर और रेलगाड़ी बालक के संसार में आश्चर्य की वस्तुएँ हैं। बालक इन्हें अच्छी तरह से देखता है और अपनी कल्पना के अनुसार उन्हें अपने अनुभव के भंडार में भर लेता है। बालक की इन्हीं कल्पनाओं के आधार पर भूगोल की शिक्षा देना चाहिए। इसलिए प्रारम्भिक कक्षाओं के भूगोल के अध्यापक को बच्चों की दिलचस्पी प्राकृतिक वातावरण में बढ़ाना पड़ता है। बच्चों को **सैर के लिए** ले जाना पड़ता है ताकि उन्हें प्राकृतिक वस्तुओं को देखने का अवसर मिले। नदी के किनारे जाकर नदी को दिखाना, झरने के पास जाकर झरना दिखाना और स्कूल के करीब में पहाड़ हुआ तो पहाड़ की सैर कराना ही इन बच्चों की भूगोल की शिक्षा है। जहाँ प्राकृतिक वातावरण की सभी बातें प्रस्तुत न हों, वहाँ अध्यापक को चाहिए कि वह बालू की किश्ती की सहायता से, और स्कूल के बाग़ के पौदों को दिखा कर उन्हें समझा दे।

भौगोलिक कहानियाँ

प्रारम्भिक कक्षाओं में विदेशी बालकों की कहानियों द्वारा बालकों को भूगोल पढ़ाया जाता है लेकिन विदेशी बालकों की

कहानियों द्वारा भूगोल की शिक्षा की उपयोगिता में कुछ भौगोलिक विद्वानों को सन्देह है। उनका विचार है कि पाँच और सात बर्ष के बालक अपने पास-पड़ोस के वातावरण को अधिक चाहते हैं इसलिए उन्हें कहानी में दिलचस्पी होते हुए भी दूर देश के बालकों के जीवन में कोई दिलचस्पी नहीं है। इसका कारण यह है कि उनकी कल्पना में दूर देश के वातावरण की बातें आही नहीं सकतीं। छोटे बालकों का अनुभव और ज्ञान बहुत ही कम होता है। इसलिए वह टुंड्रा प्रदेश के रहने वाले एस्किमो और मध्य अफ्रीका के बौने के प्राकृतिक वातावरण की कल्पना नहीं कर सकते। इन विद्वानों का यह मत है कि देश-विदेश के बालकों की भौगोलिक कहानियाँ कक्षा तीन और चार में पढ़ाना चाहिए। उस समय बालकों का अनुभव बढ़ जाता है और चित्र, ग्लोब, नकशे और पुस्तकों की सहायता से विदेशी प्राकृतिक परिस्थितियों की कल्पना कर सकते हैं।

लेकिन दूसरा मत यह भी है कि प्रारम्भिक कक्षाओं में भौगोलिक कहानियों को स्थान देना चाहिए। इस मतानुसार ऐसी कहानियों का चुनाव होना चाहिए जिनमें कथानक हो और कहानी का अन्त कौतूहल पूर्ण हो। कहानी ऐसी हो जिसको सुनने के लिए बालक लालायित हो जाय और पूछे कि 'आगे क्या हुआ ?' बालकों को हाथी और शेर के शिकार की कहानियाँ बहुत अच्छी लगती हैं। छोटे बच्चे जंगली जानवरों की कहानियाँ, जिनमें जंगल का विशद् वर्णन होता है और जानवरों के स्वभाव का चित्रण होता है, सुनना बहुत पसन्द करते हैं। छोटे बालकों को भूले-भटके पथिकों की कहानी जो जंगलों में मारा मारा फिर रहा है, भूकम्प की कहानी, दावानल की कहानी,

समुद्र में डूबते हुए जहाज़ की कहानी और रोमांचकारी साहस की कहानी सुनने में आनन्द मिलता है। अत: ऐसे भौगोलिक प्रदेशों को चुनना चाहिए जिनके द्वारा ऊपर लिखे हुए विषयों की कहानियाँ कही जा सकें। इन भौगोलिक कहानियों में भोजन, मकान, रहन-सहन तथा सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले भौगोलिक प्रभाव का वर्णन होना आवश्यक है। उदाहरण के लिए टुंड्रा के सफ़ेद भालू, रेनडियर और सील मछली का वर्णन एक सुन्दर कहानी के रूप में किया जा सकता है। प्रारम्भिक कक्षाओं के भूगोल के अध्यापक का कर्तव्य है कि वह सुन्दर भौगोलिक कहानियों की अपनी कल्पना के आधार पर रचना करे और बच्चों को प्यार से कहानियाँ सुनावे जिससे वे प्रकृति के अद्भुत रूप को पहिचान सकें और अपने जीवन को प्रकृति के अनुकूल बना सकें। प्रारम्भिक कक्षाओं में भूगोल पढ़ाने का उद्देश्य केवल इतना ही है कि बालक दैनिक जीवन में घटने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों को पहिचाने और अपनी कल्पना को, अपने ज्ञान को प्राकृतिक वातावरण का निरीक्षण करके बढ़ावे जो उसे न केवल अपने देश के ही एक सुयोग्य नागरिक बनने में सहायक होंगे, वरन् वह विश्व का एक सुयोग्य नागरिक बन सकेगा।

कक्षा तीन और चार में भूगोल-शिक्षण

इन कक्षाओं में भी भूगोल का रूप प्रारम्भिक कक्षाओं सरीखा ही होता है। अन्तर केवल दृष्टिकोण के विस्तार के कारण उपस्थित होता है। इन कक्षाओं के बालक की निरी-

क्षण-शक्ति बढ़ जाती है और वह प्रत्येक वस्तु को सही सही समझने की कोशिश करता है। घर से स्कूल जाते समय या सैर के समय बालक प्रत्येक वस्तु को देखता है। उसके **इसी निरीक्षण के आधार पर इन कक्षाओं में भूगोल की शिक्षा होनी चाहिये।** बालक ने सूर्योदय देखा है। उसके आधार पर उसे गर्मी और ठंडक के मौसम की बात बताई जा सकती है। उसे हवाओं के चलने के बारे में बताया जा सकता है।

नक़्शा बनवाना--इनके अतिरिक्त बालकों से आसान ख़ाके भी बनवाना चाहिए। मास्टर साहब के मेज़ की लम्बाई चौड़ाई कक्षा की लम्बाई चौड़ाई और खेल के मैदान की लम्बाई चौड़ाई का ख़ाका बालकों से बनवाना चाहिए क्योंकि यहीं से उन्हें नक़शा देखने, समझने और बनाने की शिक्षा दी जा सकती है। इन कक्षाओं के बालकों की योग्यता प्रारम्भिक कक्षाओं के बालकों से अधिक होने के कारण इन्हें अन्य देशों के बालकों की भौगोलिक कहानियाँ अधिक विवरण के साथ सुनाई जा सकती हैं।

भूगोल की इतनी शिक्षा के बाद इन कक्षाओं में स्थानीय और ज़िले के भूगोल की शिक्षा को आरम्भ करना चाहिए। पर **ज़िले के भूगोल की शिक्षा इस प्रकार देना चाहिए जो कि आगे चलकर भारतवर्ष के भूगोल की शिक्षा में सहायक हो।** ज़िले का भूगोल भारतवर्ष के भूगोल की शिक्षा की एक सीढ़ी के समान हो। इसलिए जिले की प्राकृतिक दशा और प्राकृतिक विभाग पढ़ाते समय साधारण प्राकृतिक भूगोल का ज्ञान दिया जा सकता है। ज़िले में बहनेवाली नदी या नदियों का उल्लेख करते समय, नदी के उद्गम और जहाँ नदी गिरती है,

उसके बारे में भी बताया जा सकता है । ज़िले की पैदावार, व्यवसाय और आयात-निर्यात के सिलसिले में भारतवर्ष के भूगोल से सम्बन्धित बातों का ज्ञान देना समीचीन है ।

ज़िले और भारतवर्ष के भूगोल की शिक्षा के पश्चात् बालकों को दुनिया के प्रादेशिक भूगोल की शिक्षा प्रारम्भ करना चाहिए । दुनियाँ में स्थूल रूप से कितने भौगोलिक प्रदेश हैं, यह पहले बताया जा चुका है । इन प्रदेशों का ज्ञान बालकों को पृथ्वी के जलवायु के आधार पर कराना चाहिए । पृथ्वी कितने कटिबन्धों में बाँटी जा सकती है, और प्रत्येक कटिबन्ध के साधारण जलवायु का वर्णन, बालकों को भौगोलिक प्रदेशों से परिचित होने में सुविधा प्रदान करेंगे । **भौगोलिक प्रदेशों को बताते समय अध्यापक को चाहिए कि वह स्थानीय प्राकृतिक वातावरण से सहायता ले और तुलनात्मक आधार पर प्रादेशिक भूगोल की शिक्षा दे ।**

इन कक्षाओं में समुद्री मार्गों के विषय में भी बताना चाहिए। बालक आज विश्व के रूप से परिचित हो चुका है । वह जान गया है कि कौन कौन देश दुनिया में हैं । भारतवर्ष से कौन वस्तु कहाँ को जाती है, भारतवर्ष में मोटर किस देश से आती है । इन सब बातों के सिलसिले में प्रमुख समुद्री मार्गों का ज्ञान कराना चाहिए ।

इन कक्षाओं के बालकों को पृथ्वी के जलभाग और स्थल-भाग को बताने में भी कोई कठिनाई नहीं उपस्थित होती । उन्हें प्रसिद्ध अन्वेषकों की कहानियाँ सुनानी चाहिए जिससे वे अन्य देशों में अधिक दिलचस्पी रख सकें । वास्कोडिगामा,

मार्कोपोलो, मैगेलन, और कुक की कहानियों द्वारा भूगोल का अध्यापक कितनी ही भौगोलिक मनोरंजक बातें बता सकता है। इन अन्वेषकों की समुद्री यात्राओं में उत्तर और दक्षिण, पूर्व और पश्चिम दिशाओं में चलनेवाली हवाओं का क्या प्रभाव पड़ा। किस प्रकार ऊँचे पहाड़ों और रेगिस्तानों ने मनुष्य को उन्नति नहीं करने दिया, इन सब की कहानियों द्वारा अध्यापक बालकों को दुनिया को फिर से 'ढुँढ़वा' देगा। **यह आशा की जाती है कि भूगोल का योग्य अध्यापक प्रत्येक भौगोलिक परिस्थिति के प्रभाव और उसके फल को भी बताता जायगा।** इस बात को स्पष्ट करने के लिए बालकों से ऐसे प्रश्न किये जा सकते हैं :—पंजाब में गेहूँ क्यों पैदा होता है? कानपुर की आबादी इतनी घनी क्यों है? राजपुताने में पानी क्यों नहीं बरसता? इस प्रकार के प्रश्नों के द्वारा बालकों का ध्यान भौगोलिक प्रभाव के कारणों की ओर जायगा और वे भूगोल का ठीक ठीक अध्ययन कर सकेंगे।

पांच, छः, सात और ऊपरी कक्षाओं में भूगोल-शिक्षण

इन कक्षाओं के विद्यार्थियों को भूगोल की शिक्षा देने की प्रणाली पिछली कक्षाओं की प्रणाली से भिन्न होगी। इन विद्यार्थियों को भूगोल की पुस्तक, और एटलस की सहायता से भूगोल का अध्ययन कराना होगा। अतः इन कक्षाओं में भूगोल अधिक विस्तार से पढ़ाना होगा। दुनिया का भूगोल, भारतवर्ष

का भूगोल तथा अन्य भौगोलिक प्रदेशों का अध्ययन मनुष्य के भौगोलिक वातावरण के रूप में करना होगा।

दुनिया के भूगोल की शिक्षा देते समय अध्यापक को बड़े बड़े भौगोलिक प्रदेशों को चुनना चाहिए और साथ ही मनुष्य के जीवन पर इन भौगोलिक प्रदेशों का जो प्रभाव पड़ा है, बताते जाना चाहिए। शुद्ध वैज्ञानिक रूप दुनिया के भूगोल का इन बालकों के सम्मुख उपस्थित नहीं करना चाहिए। **दुनिया के प्राकृतिक भूगो की शिक्षा इन कक्षाओं में इस दृष्टि से देनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों को प्राकृतिक दशा का जो प्रभाव जलवायु, वनस्पतियों और जीव जन्तुओं पर पड़ता है स्पष्ट हो जाय।** भूगर्भ विज्ञान की बातें, तथा जलवायु के सम्बन्ध में प्राकृतिक वैज्ञानिक नियमों का उल्लेख जहाँ तक हो सके नहीं करना चाहिए। लेकिन किसी भौगोलिक प्रदेश की स्थिति और उसके जलवायु की अन्य प्रदेशों से समानता तथा भिन्नता का ज्ञान भली भाँति करा देना आवश्यक है।

दुनिया में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ कहाँ और क्यों पाई जाती हैं, विभिन्न प्रकार के जीव जन्तु कहाँ और क्यों पाये जाते हैं, स्थूल रूप में विद्यार्थियों को ज्ञान होना चाहिए। **लेकिन दुनिया के इस प्रकार के प्राकृतिक और प्रादेशिक भूगोल के अध्ययन में अध्यापक को चाहिए कि वह बालकों को दुनिया की 'एकता' को समझा दे।** विभिन्न प्रदेशों में जलवायु, वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं के कारण साम्य है, इनका मानव जीवन पर जो प्रभाव पड़ता है, वे दुनिया की एकता के सबूत हैं। आधुनिक युग की शिक्षा विश्वबन्धुत्व को

पुनः स्थापित करना चाहती है। भूगोल इस उद्देश्य की पूर्ति बड़ी सफलता से कर सकता है।

भारतवर्ष के भूगोल की शिक्षा दुनिया के भूगोल की शिक्षा के बाद प्रारम्भ करना चाहिए या पहले करना चाहिए या दोनों की शिक्षा साथ साथ शुरू करना चाहिए, इसका निर्णय भूगोल के अध्यापक के ऊपर है। उसे अपनी सुविधा के नुसार निश्चय करना चाहिए। अनेक अध्यापकों को पहले स्थूल रूप से भारतवर्ष का भूगोल पढ़ाना और फिर बाद में विस्तार-पूर्वक पढ़ाना सुविधाजनक प्रतीत होता है। चाहे जो भी तरीक़ा हो पढ़ाने का, लेकिन **इस बात पर अवश्य ध्यान रखना होगा कि भारतवर्ष के भूगोल के साथ विद्यार्थियों का अन्य देशों के साथ जो अपने देश का सम्बन्ध है स्पष्ट होता जाय और भारतवर्ष का व्यक्तित्व निखरता जाय।** प्राकृतिक दशा, जलवायु और देश की उपज का अध्ययन विस्तारपूर्वक कराना चाहिए। स्थानीय व्यवसाय या खनिज पदार्थ के द्वारा विद्यार्थियों को भारत के व्यवसायिक भूगोल का तथा अन्य भौगोलिक परिस्थितियों का तुलनात्मक पद्धति द्वारा शिक्षा देना श्रेयस्कर है।

भूगोल-शिक्षण के साधन

भूगोल की शिक्षा में माडल नक़शे, चित्र, एटलेस, ग्लोब और भौगोलिक पुस्तकों की आवश्यकता पड़ती है। पहले नक़शों पर विचार कीजिए। **नक़शा बनाने के दो उद्देश्य हैं। एक तो यह कि विद्यार्थी किसी स्थान की स्थिति, या किसी वस्तु के वितरण आदि को ठीक ठीक जान सके और दूसरे**

वह उसे अपनी कल्पना में भी स्थान दे दे। यदि विद्यार्थी की कल्पना किसी भौगोलिक परिस्थिति को स्वीकार नहीं कर पाती तो भूगोल की शिक्षा अधूरी रह जाती है।

प्रारम्भिक कक्षाओं में बालक जो नक़शे बनाता है, वह एक प्रकार का 'स्वतंत्र भाव प्रकाशन' है। भौगोलिक कहानियों का चित्रण करना ही एक प्रकार का नक़शा बनाना है। लेकिन कक्षा दो, तीन और चार के विद्यार्थियों से कक्षा, स्कूल और खेल के मैदान का और बाद में जिले और सूबे का नक़शा बनवाना चाहिए। कक्षा पाँच छः और सात के विद्यार्थियों से विशेष प्रकार के नक़शे भी बनवाना चाहिए। उदाहरण के लिए गर्मी सर्दी के तापमान का नक़शा, दुनिया में वर्षा का नक़शा, वनस्पतियों और खनिज पदार्थों का नक़शा बनवाया जा सकता है। प्रत्येक देश के नक़शे का रेखाचित्र अक्श करके उसमें उस देश की प्राकृतिक दशा, जलवायु, स्थल की बनावट, वनस्पति और जीव-जन्तुओं को दिखाया जाना चाहिए। भारतवर्ष का नक़शा बिना अक्श किए खींचने का अभ्यास कक्षा छः और सात के विद्यार्थियों को करा देना चाहिए। वास्तव में **बिना नक़शों के भूगोल की शिक्षा अधूरी रह जाती है।** भूगोल के किसी प्रश्न का उत्तर बिना रेखाचित्र के पूरा नहीं माना जाता।

भूगोल की शिक्षा में दीवार पर टाँगने वाले नक़शों की आवश्यकता पड़ती है। बड़े रंगीन नक़शों में प्राकृतिक दशा तथा अन्य स्थानों को दिखा कर भूगोल की शिक्षा सफलता से दी जा सकती है।

भूगोल के विद्यार्थी के लिए एटलस रखना आवश्यक है। लेकिन वह एटलस ऐसा होना चाहिए जिसमें सभी बातें स्पष्ट

रूप से दिखाई गई हों। विद्यार्थियों को एटलस के नक़शों को समझाने वाली सूची के विषय में भली भाँति बता देना चाहिए। नक़शों के पैमाना क्या है, ऊँचाई और निचाई दिखाने के लिए जिन रंगों का प्रयोग किया गया है, उन्हें भी समझा देना चाहिए। **एटलस के अध्ययन से विद्यार्थी अनेक भौगोलिक बातों को अपने आप जान जाता है।** कितने ही स्थानों की ठीक स्थिति उसे याद हो जाती है।

ग्लोब के बिना भूगोल की शिक्षा सन्तोषप्रद हो ही नहीं सकती। इसलिए वह ग्लोब जिसका व्यास बारह इंच का हो स्कूल में रहना चाहिए। अध्यापक को चाहिए कि वह स्थल और जल को बताने के लिए, दिन और रात, ऋतु-परिवर्तन आदि की शिक्षा के लिए ग्लोब का प्रयोग अवश्य करे।

भूगोल की शिक्षा की सुविधा के लिए एक भूगोल का कमरा होना चाहिए। प्राइमरी स्कूलों में तो भूगोल का कमरा नहीं हो सकता। लेकिन मिडिल स्कूलों में भूगोल का कमरा आवश्यक है। भूगोल के कमरे में प्रायः सभी देशों के मानचित्र हों, और चित्र हों। जिस स्कूल में भूगोल का कमरा नहीं होता, वहाँ के भूगोल के अध्यापक को ग्लोब, नक़शे आदि एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने में असुविधा होती है और वह अन्य भौगोलिक चित्रों को भी नहीं दिखा सकता जिन्हें वह भूगोल के पाठ को पढ़ाते समय भूगोल के कमरे में दिखा देता है।

भौगोलिक पाठ्य सामग्री का प्रयोग

यों तो किसी पाठ के पढ़ाने के लिये हम चाहे किसी पद्धति का अनुसरण कर सकते हैं और पाठ के पढ़ाने में सफलता प्राप्त

कर सकते हैं तथा बच्चों की रुचि पाठ में पैदा कर सकते हैं। क्योंकि शिक्षण का मुख्य उद्येश्य है बच्चों का विकास और उससे हमारे इस उद्देस्य की पूर्ति हो जाती है। तो हमारे लिये कोई आवश्यकता नहीं है कि हम और बाहरी आडम्बर को पाठ के बीच में बच्चों के समक्ष लाकर रख दें। परन्तु **पाठ में सजीवता लाने के लिये तथा पाठ की तरफ बच्चों को आकर्षित रखने के लिये यह आवश्यक हो जाता है कि पाठ्यसामग्री का प्रयोग करें** और उसके द्वारा पाठ को पढ़ाये तथा पाठ में बीच २ में परिवर्तन करता जाये। इसके लिये भी उसे कुछ नियमों का पालन करना होगा, और भिन्न २ कक्षाओं में उसे भिन्न २ पाठ्यसामग्री से काम लेना पड़ेगा।

भूगोल पढ़ाते समय नीचे लिखी पाठ्यसामग्रियों को बालकों की अवस्था, स्वभाव, ज्ञान तथा अनुभव के आधार पर अध्यापक को तीन श्रेणियों में बाँट लेना चाहिए। क्योंकि यदि वह अपने पाठ्यसामग्री का ऐसा क्रम नहीं बना लेता तो पढ़ाने में उसे कोई असुविधा तो नहीं होगी परन्तु बच्चों के समझने में कठिनाई अवश्य होगी। जैसे कक्षा एक के विद्यार्थियों को ग्लोब के द्वारा यदि हम भूगोल की शिक्षा दें तो यह असंगत होगा क्योंकि अभी उनका ज्ञान सीमित है और ग्लोब क्या चीज़ है उन्हें नहीं मालूम। उनका शब्दकोष छोटा है। किसी शब्द की व्याख्या यह स्वयं नहीं कर सकते इसलिये ऐसा ज्ञान उनके लिये हितकर न होगा।

इसलिये **लोवर प्राइमरी कक्षा में अलबम, वास्तविक वस्तु, चित्र, माडल, से शिक्षा दी जायगी।**

अपर प्राइमरी कक्षा में खाका, ग्लोब, चार्ट, नक्शा, तथा लोवर कक्षा से सम्बन्धित सामग्रियों को लेकर पढ़ा सकते हैं।

मिडिल कक्षा में चलचित्र, सिनेमा, मैजिक लैनटर्न और श्यामपट तथा लोवर व अपर कक्षाओं के पाठ्यद्वारा शिक्षा दी जा सकती है।

अब प्रश्न यह है कि इन पाठ्य सामग्रियों का कब और कैसे प्रयोग करना चाहिये। उसके लिये हमें मनोविज्ञान तथा वातावरण का सहारा लेना पड़ेगा क्योंकि बिना मनोविज्ञान के ज्ञान के हम अपना कदम नहीं उठा सकते। यदि उठायेंगे भी तो वह दिया हुआ ज्ञान परिपक्व न होगा और बच्चों की रुचि विषय से न होगी जो किसी विषय के सीखने के लिये आवश्यक है। **इसलिये लोवर प्राइमरी कक्षा के विद्यार्थी के लिये हमें देखना होगा कि इस अवस्था के विद्यार्थी में कौन सी प्रवृत्तियाँ रहती हैं।**

पाँच वर्ष के बच्चे में संग्रह भाव, अनुकरण, उत्सुकता, रचना, आदि प्रवृत्तियाँ रहती हैं। इसलिये अलबम के सहारे प्रकृति प्रेम तथा संग्रहभाव की प्रवृत्ति और उत्सुकता के लिये चित्र, रचना की प्रवृत्ति के लिये वस्तुओं का निर्माण आदि आसानी से कराया जा सकता है। तथा हर एक काम के करने के लिये उसमें रुचि पैदा कर सकते हैं।

अपर प्राइमरी कक्षा:—इस कक्षा के विद्यार्थियों के लिए ग्लोब, खाका चार्ट और नक्शा आदि का प्रबन्ध किया जाय क्योंकि अपर प्राइमरी कक्षा में पहुँचते २ बच्चों की अवस्था १० से १२ वर्ष या इससे भी अधिक हो जाती है। इस अवस्था में बालक में अपने वातावरण को समझने तथा किसी

वस्तु की वास्तविकता पर विचार करने की बुद्धि उत्पन्न हो गई होती है और वह समझने में तर्कशक्ति, निरीक्षण आदि से काम लेता है। इसलिये किसी वस्तु के ज्ञान के लिये बच्चों से बड़ा या छोटा खाका खिचवाया जाय। चार्ट के सहारे उनके आस पास के वातावरण का ज्ञान उन्हें दिया जाय तथा उसके अभ्यास के लिये समय २ पर नक्शा बनवाया जा सकता है।

एक ही विषय को बार २ बच्चे के समक्ष रखने से यह सम्भव है कि बच्चे में अरुचि उत्पन्न हो जाये इसलिये उसमें बाहरी ज्ञान को एकत्रित करने के लिये उसके आसपास के वातावरण के अलावा ग्लोब या नक्शे का प्रयोग कराया जाय और उन्हें बाहरी दुनिया का ज्ञान दिया जाय तभी वह अपनी सहायक सामग्रियों के मूल्य को समझेंगे और उनका अनुसरण करेंगें।

मिडिल कक्षा :—मिडिल कक्षा के विद्यार्थियों के लिये ऊपर बताई गई सहायक सामग्री के साथ २ चलचित्र-सिनेमा और मैजिक लैन्टर्न का प्रयोग कर सकते हैं। क्योंकि बच्चों को अब अधिक अनुभव हो गया होता है। वह वस्तु विशेष के अनुपस्थिति में भी अपनी कल्पना शक्ति द्वारा उस वस्तु के गुण दोष के बारे में अच्छी तरह योग्यता प्राप्त कर सकता है तथा सामयिक घटनाओं के अभिनय द्वारा ही उस वस्तु विशेष का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस अवस्था में उसकी रुचि के अनुसार हम चीजों का प्रयोग करके और पाठ्य सामग्रियों के साथ इन चीजों का भी प्रयोग कर सकते हैं। नहीं तो परिणाम अच्छा होने की जगह पर बुरा प्रभाव डालेगा। श्याम पट

प्रयोग हम वस्तु के अनुपस्थिति में कर सकते हैं क्योंकि बच्चे इस अवस्था में पहुंचते २ निरीक्षण आदि गुणों को सीख लेते हैं। अत: किसी भौगोलिक परिभाषा को लिखकर समझा सकते हैं।

भूगोल का सफल अध्यापक

भूगोल के सफल अध्यापक में निम्नलिखित विशेषताएँ होना चाहिए :—

१—**भूगोल की पूर्ण जानकारी**—भूगोल की पूर्ण जानकारी के लिये यह पर्याप्त नहीं है, कि कक्षा में प्रचलित पाठ्य पुस्तक को एक या दो बार पढ़ ले, बस उतनेही में अध्यापक का काम चल जायगा। इस बात को हम मानने के लिये तैयार हैं, कि अध्यापक अपने विषय का ज्ञाता होता है। वह बिना किसी अध्ययन के बच्चों को शिक्षा देने का कार्य कर सकता है। परन्तु कब तक ? वह बच्चों की जिज्ञासा को तृप्त नहीं कर सकता और वहीं वाक्य चरितार्थ होगा कि बच्चों की तरफ से कोई प्रश्न हुआ और उधर अनभिज्ञता से कहीं हमारी मानहानि न हो। अध्यापक महोदय के जुबान से शब्द निकला चुप रहो बैठ जाओ। बस वहीं पर शिक्षा का अन्त और विकास की इति हो जाती है। बच्चे सदा के लिये पनप नहीं सकते। इसलिये अपने विषय के विशेष अध्ययन के लिये अध्यापक को प्रचलित पुस्तकों के अलावा उस विषय से संबंधित अन्य पुस्तकों का अवलोकन करते रहना चाहिये तथा शिक्षण विधियों को ग्रहण करते रहना चाहिये। तभी वह बच्चों की रुचि विषय में ला सकता है और उनको विषय का पूर्ण ज्ञान दे सकता है।

२—**बाल मनो-विकास का ज्ञान**—भिन्न २ अवस्था में बच्चों की भिन्न २ प्रवृत्तियों का जोर रहता है और उनको संतुष्ट करना बच्चे के लिये अति आवश्यक है। अतः अध्यापक को मनोविज्ञान का जानना आवश्यक है, जिससे उसके सहारे यह मालूम कर सके कि, किस उम्र के लड़के को भूगोल की कैसी शिक्षा दी जाय, कि बच्चा आसानी से सीख सके और उसमें आगे बढ़ने का उत्साह उत्पन्न हो।

३—**निरीक्षण शक्ति**—प्राकृतिक वातावरण का मनुष्य-जीवन पर कैसा प्रभाव पड़ता है। विश्व में अनेक तरह के प्राकृतिक वातावरण हैं और उनका प्रभाव मनुष्य-जीवन पर वहीं के अनुरूप पड़ता है और वहाँ के प्राणीमात्र अपने को वैसा बनाने पर बाध्य हो जाते हैं। उदाहरण स्वरूप ठंडे देश के निवासी रेगिस्तान के तथा गर्म देश के निवासी अपने २ वातावरण के अनुरूप अपने जीवन के रहन सहन को बनाते हैं। इसका अध्ययन अध्यापक को सूक्ष्म रूप से करना होगा, क्योंकि वह बिना पूर्ण ज्ञान के बच्चों को संतुष्ट नहीं कर सकता। इसके लिये निरीक्षण ही की क्रिया उसे सफलता प्रदान करती है।

४—**माडल, नक्शा, भौगोलिक चित्र आदि बनाने अभ्यास**—चूँकि भूगोल की शिक्षा देते समय बच्चे की ज्ञान की पुष्टि करने के लिये यह आवश्यक हो जाता है, कि जिस पाठ को अध्यापक पढ़ा रहा है उसकी सहायक सामग्री तैयार रक्खे, ताकि पाठ में बच्चों की रुचि हो और स्पष्टतापूर्वक समझ में आ जाय। क्योंकि देखा गया है कि माडल, चित्र, नक्शा आदि से कठिन से कठिन विषय सरल बन जाते हैं और दूर से दूर की चीज हमारे सामने आ जाती है। उन चित्रों को देखकर,

तथा उनकी रूप रेखा पर विचार कर बच्चे वस्तु के अनुपस्थिति में भी वास्तविकता का अनुभव कर लेते हैं। यह कार्य अध्यापक सफलतापूर्वक तभी कर लेगा, जब कि उसे चित्रकारी का अभ्यास होगा।

५—**भूगोल शिक्षण पद्धति का ज्ञान हो**—विषय के पढ़ाने की बहुत सी शिक्षण पद्धतियाँ हैं। और उसी के सहारे अध्यापक गण बच्चों को शिक्षा देते हैं। इन पद्धतियों के अलावा हरएक अध्यापक की कोई शिक्षणशैली अलग से भी होती है। परन्तु सफलता तभी अध्यापक को मिलती है, जब उसे कई शिक्षणपद्धतियों का ज्ञान हो ताकि वह अपने तथा बच्चों की सुविधा के लिये उनका अनुसरण कर सके।

६—**भौगोलिक वस्तुओं के संग्रह की रुचि हो**—वास्तविक वस्तु तथा नमूना या माडल में बहुत अन्तर है। और जितना ज्ञान बच्चे किसी वास्तविक वस्तु को देखकर प्राप्त कर सकते हैं, उतना किसी बनावटी चित्र से नहीं ग्रहण कर सकते। इसलिये बच्चों की सुविधा के लिये भूगोल के अध्यापक को चाहिये कि, जो संग्रह करने की चीज़ है, और जो आसानी से मिल सकती है उसे खोजना चाहिये। जैसे विभिन्न तरह के चिड़ियों के पर, बीज, मिट्टी, और पत्थर के टुकड़े आदि। इससे उसे पढ़ाने में भी सुविधा होगी, और बच्चों के पढ़ने तथा समझने में आसानी और उन्हीं के सहारे बहुत से अन्य देशों के जलवायु तथा पैदावार आदि पर प्रकाश डाल सकता है।

७—**पाठ्यक्रम को ऋतुओं के अनुसार रखना**—जहाँ तक हो सके पाठ में वास्तविकता लाने के लिये वास्तविक वस्तु की उपमा देकर पढ़ाने से बच्चों पर दो तरह का बड़ा अच्छा

प्रभाव पड़ता है। १—मनोविनोद २—सामयिक दृश्यों द्वारा किसी वस्तु की विशेषता ध्यान में अच्छी तरह से चिरस्थाई हो जाना। इसके लिये जैसा भूगोल का पाठ होगा, उसके लिये मौसम का सहारा लेना पड़ेगा। जैसे नदी, टापू, और समुद्र का ज्ञान देना है, तो वर्षा का मौसम, अच्छा होता है। शीतकाल का दिन है, तो कुहरे तथा पाला आदि का ज्ञान हम अच्छी तरह से बच्चों को दे सकते हैं।

८ -**देशाटन प्रेमी**—सुनी हुई चीजों के ज्ञान को कोई व्यक्ति व्यक्त करता है, और उसी के सहारे दूसरे को उस वस्तु की विशेषता का ज्ञान देता है। इससे संभव नहीं कि, वह अच्छा ज्ञान उस विषय के संबंध में दे सके। लेकिन जब वही चीज़ अपनी आँखो देख ली जाती है, तो उसका मस्तिष्क अपनी निरीक्षण शक्ति द्वारा अच्छी तरह से उसकी विवेचना कर लेता है। तब उस वस्तु पर दिया हुआ ज्ञान अच्छा परिपक्व होता है, क्योंकि यह बात प्रमाणित है, कि सुने हुये ज्ञान से देखा हुआ ज्ञान अच्छा और उन्नतिशील होता है। अत: भूगोल के अध्यापक को वस्तुओं की विशेषता बतलाने तथा आयात निर्यात के साधन, प्रसिद्ध स्थान आदि का ज्ञान अच्छी तरह होना चाहिये और उसे देशाटनप्रेमी होना चाहिये।

९—**कहानी कहने का गुण**—कहानी का मुख्य गुण है, जिज्ञासा प्रवृत्ति का उत्कर्ष। इस प्रवृत्ति के संतुष्टि का गुण जिस अध्यापक में जितना ही अच्छा होगा वह अपने पाठ में उतना ही सफल होगा क्योंकि कम अवस्था के बालक कहानी को अधिक पसन्द करते हैं इस गुण के साथ कहानी में लघुता

तथा सरसता अवश्य हो इसके लिये भी अध्यापक को थोड़े अभ्यास की आवश्यकता होगी ।

१०. **कार्य और कारण को समझाना**—चूँकि ऊँचीं कक्षाओं में पहुँचकर बच्चे का मानसिक विकास बहुत हो गया रहता है। इसलिये उन बच्चों के लिये आवश्यक हो जाता है, कि उनको जो पाठ पढ़ाया जाय वह कार्य और कारण को लेकर पढ़ाया जाय, और उनसे जो प्रश्न हों वे 'क्योंकि' रूप में हों और उत्तर 'कैसे' के रूप में लिया जाय। जब तक वस्तु विशेष की पूर्ण जानकारी न होगी तब तक अध्यापक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

ये सभी गुण एक सफल भूगोल के अध्यापक में होने चाहिये।

भौगोलिक पाठ्यक्रम का मनोवैज्ञानिक आधार

स्कूलों में प्रचलित गणित, नागरिक शास्त्र, इतिहास, भूगोल, दस्तकारी का काम तथा और जितने अन्य विषय बच्चों के पाठ्य-क्रम में रक्खे गये हैं उनका कुछ न कुछ बच्चों के विकास के लिये उद्देश्य अवश्य हैं, जिनको अध्यापकगण अपना दृष्टिकोण मानकर उसके प्राप्ति के लिये बच्चों को उसके सहारे शिक्षा देते हैं कि बच्चा इनका ज्ञान प्राप्त करें। उन्हीं विषयों के अन्तर्गत भूगोल का विषय आता है जिसके पढ़ाने के भो कुछ उद्देश्य हैं और उनकी पूर्ति के सहारे बच्चों के ज्ञान की वृद्धि की जा सकती है तथा बच्चों को लाभ पहुँचाया जा सकता है।

लेकिन बच्चों के विकास तथा अवस्था के ऊपर हमें अवश्य

ध्यान रखना होगा क्योंकि एक ही विषय के किसी पाठ को शिशु कक्षा में भिन्न रूप से, कक्षा चार में दूसरी तरह तथा ऊपरी दर्जों में किसी और उद्देश्य से पढ़ाते हैं। इन सब का कारण हमें बच्चों का विकास तथा उनके ज्ञान का स्तर ही देखने में मिलता है। अतः भूगोल के उद्देश्य को सामने रख कर हमें प्राइमरी कक्षाओं में वर्गीकरण की आवश्यकता पड़ती है। क्योंकि इसके बिना हमारा काम नहीं चल सकता और हम अपने भूगोल के उद्देश्यों को पूरा न कर सकेंगे। हमारे मनोवैज्ञानिकों ने अनेकानेक जगह लिख दिया है कि अवस्था के साथ ही साथ बुद्धि का विकास होता है और अनुभव तथा निरीक्षण शक्ति की वृद्धि होती है इसलिये बच्चों की अवस्था का ध्यान रख कर उन को किसी विषय की शिक्षा दी जाय ताकि उनकी स्मरणशक्ति विषय के भार को सहन कर सके और आगे बढ़ने की शक्ति उनमें पैदा कर सके।

इसलिये प्राइमरी पाठशालाओं में भूगोल की शिक्षा देने के लिये हमें सभी विद्यार्थियों को तीन वर्गों में बाँट लेना पड़ता है।

१—शिशु कक्षा के बच्चे जिनकी अवस्था सिर्फ पाँच से सात वर्ष की है।

२—लोवर प्राइमरी कक्षा अर्थात् दर्जा १ व २ के विद्यार्थी गण।

३—अपर प्राइमरी कक्षा अर्थात् दर्जा ३ व ४ के विद्यार्थी गण।

इन बच्चों की अवस्था, अनुभव तथा ज्ञान के साथ विषय में भी विभाजन कर दिया जाता है। क्योंकि यदि ऐसा न किया जाता तो उद्देश्य को पूर्ति में सफलता प्राप्त नहीं होती।

शिशुकक्षा——शिशु कक्षा में जिस समय बच्चे पढ़ने के लिये आते हैं उनकी अवस्था पाँच छः वर्ष की होती है। उनपर जिज्ञासा उत्सुकता-रचनात्मक तथा संग्रहभाव की प्रवृत्तियों का अधिक प्रभाव रहता है। वह हर एक वस्तु के समझने तथा जानने के लिये कोशिश करता है। इसलिये अध्यापक को चाहिये कि जहाँ तक हो सके बच्चों को उसके आस पास के वातावरण ही से उन्हें भूगोल की शिक्षा दें और उन्हें प्रकृति-प्रेमी बनावे तथा चीजों के गुण दोष और नाम आदि की जानकारी की शिक्षा दे तथा उनमें उनकी रुचि अधिक से अधिक उत्पन्न करे। ताकि वह घर से पाठशाला तक आते समय रास्ते में मिलने वाली वस्तुओं को देख कर उनके बारे में समझें और पूछने पर यह बता सकें कि अमुक चीज हमारे रास्ते में आते जाते समय मिलती है। उदाहरण के लिये: नाला, टीला, जंगल, धान के खेत, करैली मिट्टी, बाजार और दर्जी की दूकान आदि। जानवरों के विषय में पूछने पर उनकी पहचान, रंग तथा रहने के लिये कैसे स्थान की आवश्यकता पड़ती है और क्या चीज खाते हैं आदि बातें बता सकें। बस यही उनके लिये पर्याप्त होगा और इतने ही से हम भूगोल का ज्ञान बच्चों को अच्छी तरह करा सकते हैं और अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकते हैं।

लोअर प्राइमरी——अर्थात् दर्जा एक और दो के विद्यार्थी। चूँकि दर्जा एक और दो में बच्चा पहुँचते २ बहुत से जानवरों का नाम तथा वस्तुओं के नाम जान लेता है और उसके गुण दोष को समझ लेता है। इसलिये अध्यापक को

चाहिये कि बच्चों को पैमाने, दिशा की जानकारी का अच्छी तरह ज्ञान करा दे और उचित अवसर पा कर निरीक्षण के लिये मौसम का अनुसरण करे तथा उन्हें प्रकृति प्रेमी होने की आदत को, जिसकी बुनियाद शिशु कक्षा से पड़ी है, प्रयोग में लावे। जैसे मान लीजिये बच्चों को नदी, टापू, समुद्र का ज्ञान कराना है जिसे अभी बच्चोंने देखा नहीं हैं और न उनकी कल्पना शक्ति ही इतनी प्रखर है कि वस्तु के अनुपस्थिति में अध्यापक के सम्भाषण के आधार पर अपने तर्क और निर्णय द्वारा उस वस्तु विशेष के बारे में जैसा चाहिये वैसा ज्ञान प्राप्त कर लें इसलिये अध्यापक को चाहिये कि इन चीजों के पढ़ने के लिये वर्षाऋतु का सहारा ले।

किसी दिन अधिक वर्षा होने पर पास के मैदान की सैर के लिये बच्चों को ले जाय, जहाँ दूर तक पानी फैला हो और उसे दिखा कर उसपर कुछ प्रश्न करे। जैसे बच्चो, इस फैले हुए पानी के आखिरी छोर को देख रहे हो, या इस पानी के आखिरी छोर पर आसमान तथा पृथ्वी कैसी मालूम होती है। इसी तरह के अनेक प्रश्न करके बच्चों को समुद्र का ज्ञान आसानीं से दिया जा सकता है।

किसी नाले के सहारे उस मैदान का पानी जहाँ से बाहर जा रहा हो उस स्थान पर बच्चों को ले जाकर पानी के बीच खड़ा करा के तथा बहते हुए पानी के ऊपर कुछ प्रश्न करे।

जैसे पानी इस नाले के सहारे कहाँ जा रहा है। पानी के तेजी से नाले की दशा क्या हो रही है आदि प्रश्न करके तथा उनसे प्राप्त उत्तर से बच्चे नदी का अनुभव अच्छी तरह कर सकते

हैं और उसकी परिभाषा अच्छी तरह स्वयं बना सकते हैं। इस क्रम से दिया हुआ ज्ञान बच्चों के लिये अधिक परिपक्व होगा।

पानी से भरे मैदान में किसी ऊँचे टीले के पास बच्चों को ले जाकर और उसकी स्थिति पर प्रश्न करे। जैसे इस टीले के कितनी ओर पानी है। पानी की सतह से यह टीला ऊँचा है आदि बातों को पूछ कर टापू का ज्ञान बच्चों को कराया जा सकता है।

बस इन कक्षाओं के बच्चों के लिये इतना ही पर्याप्त होगा और इस क्रम से दिया हुआ ज्ञान अधिक रुचिपूर्ण होगा।

अपर प्राइमरी कक्षा—चूँकि दर्जा ३ व ४ में पहुँचते पहुँचते बच्चों की अवस्था, ज्ञान का स्तर और अनुभव तथा निरीक्षण शक्ति का विकास हो गया रहता है और वह अपने आसपास के वातावरण को बहुत कुछ समझ लिये होते हैं इसलिये उनके बाहरी ज्ञान को बढ़ाने के लिये नक्शा के सहारे देश की स्थिति, प्राकृतिक भाग, जलवायु, खनिज पदार्थ, आने जाने के साधन, देश की पैदावार तथा दस्तकारी और प्रसिद्ध स्थान के विषय में ज्ञान करावें तथा उनके कार्य कारण पर विचार करावे और उनमे ऐसी रुचि पैदा करे कि वह स्वयं उन विषयों का ज्ञान हासिल करें और समझने की कोशिश करें और कारण को ढूढ़ें।

भूगोल का आदर्श पाठ्यक्रम

आधुनिक भूगोल की रूपरेखा देखते हुए और विभिन्न कक्षाओं

की भौगोलिक आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए, निम्नलिखित पाठ्यक्रम को व्यवहार में लाया जा सकता है :—

बाल कक्षा—सफ़ेद भालू की कहानी (एस्किमों), चीनी और अंगरेज बच्चों की कहानी।

कक्षा एक—(१) विभिन्न प्रान्तों के बालकों का जीवन—तामिल, भील, मालाबारी, गुजराती, पंजाबी और बंगाली।

(२) विदेशी लड़कों का जीवन—अमेरिकन, आस्ट्रेलियन, आफ्रींकन, और मिस्री।

(३) स्कूल का एक नक़शा बनवाया जाय जिसके द्वारा बालकों को नक़शे का अर्थ तथा प्रयोग समझाया जाय। दिशाओं का ज्ञान।

(४) गाँव के आस पास की सैर—फ़सल बोये जाने और काटे जाने के समय।

(५) अध्यापक गाँव का एक नक़शा बड़े पैमाने पर तैयार करे जिसमें गाँव की विभिन्न बातों को दिखाया गया हो। यह नक़शा दीवार पर लगा देना चाहिए।

कक्षा दो—(१) बालकों का जीवन—काश्मीरी, गोरखा, बिलोची, अफ़रीदी और रूसी।

(२) गाँव की और फिर ज़िले की विशेष भौगोलिक दशा, बालकों से गाँव का नक़शा बनवाना, जिसमें भिन्न भिन्न फ़सलें, गाँव की जनसंख्या, आने जाने के मुख्य साधन, आयात-निर्यात, गाँव का बाज़ार, दिखाना। बालकों को सैर और निरीक्षण के लिए उत्साहित करना चाहिए।

कक्षा तीन—(१) बालकों की कहानी-हिन्दुस्तानी चाय के बाग़ के एक लड़के की कहानी, न्यूयार्क, कनाडा, और आस्ट्रेलिया के बालकों की कहानी। ये कहानियाँ भाषा की शिक्षा के सिलसिले में भी पढ़ाई जा सकती हैं।

(२) ज़िले का निरीक्षण निम्नलिखित बातों को ध्यान में रख कर कराया जाय :—

ज़िले का खाका, प्राकृतिक दशा, जलवायु, उपज, ऐतिहासिक स्थान, आयात-निर्यात, तीर्थ और मेले के स्थान।

(३) प्रयोगिक कार्य-ज़िले के नक़शे में आवश्यक बातों को दिखाना। कक्षा, स्कूल और स्कूल के अहाते का नक़शा बनाना।

(४) ग्लोब का निरीक्षण। पृथ्वी की आकृति, स्थल और जल भाग। मुख्य-मुख्य समुद्री मार्ग ; हिन्दुस्तान से इंगलैंड, आस्ट्रेलिया, कनाडा, दक्षिणी अफ्रीका, और अरब, इंगलैंड से अमेरिका।

कक्षा चार—मनुष्य के भौगोलिक वातावरण का निरीक्षण।

(१) ज़िले की कृषि देखना। ज़िले के नक़शे बनाना।

(२) संयुक्त प्रान्त का भूगोल—प्राकृतिक विभाग, जलवायु, कृषि, व्यवसाय, उद्यम और आयात-निर्यात का विशेष अध्ययन।

(३) प्रांत की भौगोलिक बातों का नकशा बनवाना।

(४) भौगोलिक खोज करने वालों की कहानियां—वास्कोडिगामा, कोलम्बस, और फ्रांसिस ड्रेक।

(५) संसार के मुख्य समुद्री मार्ग--भारतवर्ष से चीन, यूरोप, दक्षिणी आस्ट्रेलिया, पूर्वी अफ्रीका और लन्दन से न्यूयार्क ।

कक्षा पाँच—(१) भारतवर्ष का भूगोल—जिसका ज्ञान वर्णन और कहानियों द्वारा कराया जाय ।

(२) कुछ दुनिया के अन्वेषकों और अन्य देशों के लोगों के जीवन-निर्वाह की कहानियाँ—(१) मैगेलन (२) कुक (३) चीन (४) इंगलैंड (५) अफ्रीका (६) टुंड्रा (७) भूमध्यसागर प्रदेश (८) यूरेशिया ।

(३) प्रयोगिक कार्य—गांव और जिले की भौगोलिक दशाओं का निरीक्षण और अध्ययन ।

कक्षा छः—(१) भारतवर्ष का भूगोल जिसमें प्राकृतिक दशा, जलवायु, वनस्पति, उपज, सिंचाई, आयात-निर्यात, उद्योग-धन्धे, व्यापार, जनसंख्या और रहन-सहन का विशेष अध्ययन किया जाय ।

(२) ध्रुव प्रदेश के अन्वेषण की कहानी, मध्य अफ्रीका, मध्य एशिया, और एवरेस्ट के अन्वेषणों की कहानियां ।

(३) दुनिया के सात बड़े भौगोलिक प्रदेशों की कहानियां—(१) उष्ण कटिबन्ध के घास के मैदान (२) मानसूनी प्रदेश (३) गर्म रेगिस्तान (४) उत्तरी पश्चिमी यूरोपियन प्रदेश (५) चीनी प्रदेश (छ) तिब्बत (७) नुकीली पत्तियों के जंगली प्रदेश ।

प्रयोगिक कार्य—फस्लों के नक़शे, फ़सलें बोने के समय और कटाई के समय के चार्ट । स्थानीय उद्योग-धन्धों के नक़शे ।

कक्षा सात—(१) एशिया का भूगोल जिसमें भौगोलिक प्रभावों के कारण अर्थात् प्राकृतिक दशा, स्थल की बनावट, जलवायु, वनस्पति और जीव-जन्तु का विशेष अध्ययन हो। एशिया के भौगोलिक प्रदेशों और मानवीय भूगोल का भी अध्ययन वांछनीय है।

(२) दुनिया के प्रादेशिक और आर्थिक भूगोल का प्रारम्भिक ज्ञान। इस सम्बन्ध में पिछली कक्षाओं में पढ़ाई गई कहानियों की सहायता ली जा सकती हैं।

(३) **प्रयोगिक कार्य**—स्थानीय डाकघर, रेलवेस्टेशन पंचायतघर की सैर और उनका निरीक्षण। इसके अतिरिक्त प्रत्येक भौगोलिक पाठ के आधार पर मानचित्र भी बनवाना चाहिए।

भूगोल के प्रश्नों की भूमिका

विद्यार्थियों के लिए परीक्षा की घड़ी बड़ी दुःखदाई होती है। लेकिन शायद बहुत कम अध्यापकों को ज्ञात है कि विद्यार्थी परीक्षा में इसलिए असफल होता है कि वह उत्तर ठीक ठीक नहीं देना जानता। उसे भूगोल की सभी बातें याद हैं, पर उसे किस प्रश्न का क्या उत्तर देना है, यही नहीं मालूम। विद्यार्थियों की यह असफलता वास्तव में अध्यापनशैली की असफलता है। भूगोल का सफल अध्यापक अपने विद्यार्थियों को ठीक ठीक उत्तर देने का तरीका बता देता है। वह विद्यार्थियों से कहता है कि पर्चे के ऊपर लिखी हुई बातों को अच्छी तरह पढ़ो और परीक्षक जैसा चाहता है वैसा ही करो। सफल अध्यापक के विद्यार्थी

भूगोल के प्रश्नों के उत्तर में मानचित्र अवश्य बनाते हैं। वह विद्यार्थियों से कहता है कि परोक्षा में मानचित्र बनाने के लिए पेन्सिल, पटरी, रंगीन पेन्सिल और प्रकार ले जाओ।

भूगोल के प्रश्न अन्य विषयों के प्रश्नों से भिन्न होते हैं। भूगोल के प्रश्न विद्यार्थी से रटी हुई बातें नहीं जानना चाहते, वरन् विद्यार्थी की सोचने और समझने की शक्ति की परीक्षा करते हैं। श्री डी० स्टैम्प का कथन है कि एक बार वे किसी भौगोलिक परीक्षा के प्रश्नों के उत्तरों की जांच कर रहे थे। एक विद्यार्थी ने उत्तर में लिखा कि अमुक प्रश्न का उत्तर भूगोल की पुस्तक के पृष्ठ २५६–५९ तक में लिखा है और साथ ही पुस्तक में तीन नकशे भी बने हैं। उस विद्यार्थी ने भूगोल की पुस्तक का अध्यथन इतना किया था कि उसे यह भी याद था किस पृष्ठ पर क्या लिखा है। पर उस बेचारे को मिला शून्य।

भूगोल की परीक्षा लिखित होने के अतिरिक्त मौखिक भी हो सकती है। अध्यापक को चाहिए कि वह कक्षा में पिछले पाठ के विषय में प्रश्न करे और विद्यार्थियों के उत्तर सुने। घर के लिए काम भी दे। घर से विद्यार्थी नकशे या रेखाचित्र बना कर लायें। अध्यापक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों को घर का काम अवश्य दे और जो विद्यार्थी उस काम को न करे उन्हें किसी न किसी प्रकार से काम कर के लाने के लिए उत्साहित करें। ऐसा करने से भूगोल का अध्ययन पूर्ण होगा और साथ ही भूगोल के प्रश्नों का उत्तर भी ठीक ठीक दिया जा सकेगा। भौगोलिक प्रश्नों का उत्तर देते समय भौगोलिक कारणों का मानव-जीवन पर जो प्रभाव पड़ता है, उसका उल्लेख अवश्य करना चाहिए। प्रश्नों की संख्या कुछ ऐसी हो जिसके

कारण विद्यार्थी-जीवन पर प्राकृतिक वातावरण के प्रभाव को अवश्य व्यक्त करें । भूगोल-शिक्षण विधि पर निम्नलिखित प्रश्न आवश्यक है :—

(१) भूगोल क्या है और इसकी शिक्षा क्यों दी जाती है ?

(२) भौगोलिक प्रभाव के कितने कारण हैं ? किसी प्रदेश पर जो भौगोलिक प्रभाव पड़ा हो उसका वर्णन करो ।

(३) भूगोल शिक्षण की कितनी पद्धतियाँ हैं ? भूगोल के तुलनात्मक पद्धति पर अपने विचार प्रगट करो ।

(४) प्रारम्भिक कक्षाओं में भूगोल की शिक्षा कैसी होनी चाहिये ; एक आदर्श पाठ्यक्रम देते हुए अपने उत्तर को लिखो ।

(५) दुनिया के भूगोल की शिक्षा देते समय स्थानीय भूगोल से क्या सहायता ली जा सकती है ?

(६) भौगोलिक मानचित्रों का भूगोल की शिक्षा में क्या स्थान है ?

(७) भौगोलिक कहानियों की क्या विशेषताएँ हैं ?

भूगोल का विस्तार

भूगोल का विषय कितना महत्त्वपूर्ण है, यह हमने प्रारम्भ ही में देख लिया है और भूगोल की शिक्षा के उद्देश्य की दृष्टि से भी भूगोल हमारे जीवन में क्या स्थान रखता है, यह भी हमने जान लिया है । भूगोल के अन्तर्गत मानव-जीवन की सम्पूर्ण चेष्टायें और कामनाएँ निहित हैं । प्राकृतिक वातावरण का मानव-जीवन पर जो प्रभाव पड़ता है और मनुष्य जिस प्रकार प्राकृतिक

तथा भौगोलिक परिस्थितियों से समझौता करता है यह सब भूगोल के क्षेत्र में है ।

भूगोल का विस्तार इतना व्यापक है कि मानव-जीवन का कोई अंग इससे अछूता नहीं रहता । मनुष्य जितने भी कार्य करता है, उनका रूप वातावरण से प्रभावित होता है । इसीलिए अमेरिका में भूगोल की शिक्षा का केन्द्र स्थानीय भूगोल है । दुनिया का भूगोल तथा भूगोल सम्बन्धी अन्य बातें स्थानीय भूगोल के आधार पर बताते हैं क्योंकि भूगोल का विस्तार व्यापक है और बालकों को स्थानीय उदाहरण की सहायता से भूगोल का अध्ययन सरल प्रतीत होता है । इसी प्रकार हम अपने देश में भी भूगोल की शिक्षा का आरम्भ गाँव, तहसील और ज़िले की भूगोल से करते हैं और फिर प्रान्त के भूगोल का अध्ययन शुरू करते हैं । प्रान्त के भूगोल के सहारे भारत का भूगोल और फिर एशिया और संसार के भूगोल के क्षेत्र में आते हैं ।

लेकिन भूगोल के इतने व्यापक विस्तार की सीमा कहाँ है ? जब सभी विषयों में इसका प्रवेश है तो किस सीमातक भूगोल अन्य विषयों से सम्बन्ध रख सकता है ? यह प्रश्न विचारणीय है । बहुधा यह देखा गया कि भूगोल के विस्तार का उचित ज्ञान न होने के कारण अध्यापक महोदय भूगोल विषय को छोड़कर अन्य विषय की शिक्षा देने लगते हैं । चट्टानों या ज्वालामुखी पहाड़ों की व्याख्या करते करते अध्यापक महोदय भूगर्भशास्त्र की शिक्षा देने लगते हैं । ऐसा नहीं होना चाहिए । यदि ज्वालामुखी पहाड़ों का विषय है तो हमें बालकों को भौगोलिक वातावरण पर उनका प्रभाव बताना चाहिए । ज्वालामुखी पर्वतों की स्थिति के कारण जीवन किस प्रकार व्यतीत किया जाता है,

इसे भी स्पष्ट करना चाहिए। ज्वालामुखी का जन्म तथा उसके सम्बन्ध में प्रचलित सिद्धान्तों की आलोचना साधारण भूगोल के विस्तार में नहीं आते। इसी प्रकार खनिज पदार्थों को पढ़ाते समय भूगोल के अध्यापक को चाहिए कि वह खानों की स्थिति और उनके कारण चलनेवाले अनेक धन्धों के बारे में बतलाए। उदाहरण के लिए टाटा नगर को लीजिए। टाटा नगर की स्थिति लोहे और कोयलों की खानों के कारण है। टाटा नगर में लोहे का कारखाना होने के कारण आसपास के लोगों के लिए मज़दूरी मिल गई। कारखाने में बने हुए सामानों से और दूसरे भी काम चलने लगे। इस प्रकार टाटा नगर के लोहे के कारखाने के कारण भारतीय उद्योग-धन्धों तथा अन्य व्यापारों पर बहुत प्रभाव पड़ा। इसे हमें स्पष्ट करना है। हमें यह नहीं बताना है कि लोहा कैसी ज़मीन में पाया जाता है। यह भूगर्भ शास्त्र वालों ही के लिए छोड़ देना चाहिए।

ऊपर लिखी गई बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि हमें भूगोल के विस्तार की सीमा कहाँ निश्चित करना है क्योंकि हम भूगोल की शिक्षा के द्वारा बालकों को यह भली भाँति समझा देना चाहते हैं कि दुनिया में रहने वाले लोग एक हैं और संसार के लोग निरन्तर भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार कार्य करते रहते हैं। संसार मनुष्य का घर है। घर के सम्बन्ध में मनुष्य के हृदय में जितनी भी भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, उन्हें उत्पन्न करना चाहिए। इस प्रकार बालक एक भौगोलिक दृष्टिकोण प्राप्त कर लेगा। बालकों को भौगोलिक दृष्टिकोण से देखने और समझने का अभ्यास देने के लिए उन अन्वेषकों की जीवन-कथाएँ सहायक होती हैं जिन्होंने संसार के द्वीपों तथा

देशों को ढूँढ़ निकाला है। उनकी जीवन-कथाओं को सुनकर बालक बीते युग की और दूर देश की कल्पना करता है। इस तरह भूगोल की शिक्षा के क्षेत्र और विस्तार के अन्तर्गत भौगोलिक दृष्टि से हर एक चीज़ सोचने और समझने की बात भी आ जाती है।

इतिहास-निर्माण में भूगोल

किसी देश की व्यवसायिक, तथा उद्योग-धन्धे सम्बन्धी उन्नति, देश की प्राकृतिक परिस्थिति पर निर्भर है। उसी के आधार पर मनुष्य अलग अलग पेशे अपनाते हैं। एक जर्मन विद्वान् का कथन है कि सामाजिक उत्पादन के दौरान में मनुष्य विशिष्ट सम्बन्धों में संयुक्त हो जाते हैं, जिनका निर्णय उनकी इच्छा से स्वतंत्र रूप में होता है। ये उत्पादन के सम्बन्ध उत्पादन की भौतिक (भौगोलिक) शक्तियों की निर्दिष्ट विकास की मंज़िल की अनुयायी हैं। उद्योग-धन्धों के इन सम्बन्धों के जोड़ से समाज का आर्थिक ढाँचा बनता है। यह वह वास्तविक आधार है जिनपर कानूनी तथा राजनीतिक ढाँचा बनता है।'

उद्योग-धन्धों तथा उत्पादन के लिए जो वस्तुएँ आवश्यक हैं उनके लिए भौगोलिक परिस्थिति का बड़ा महत्त्व है। रूस के महान् नेता श्री स्टालिन का कथन है, 'इसमें कोई सन्देह नहीं कि भौगोलिक परिस्थितियाँ समाज के भौतिक जीवन की अवस्थाओं में एक बहुत ही अपरिहार्य और धारावाहिक अवस्था है। ज़रूर ही इसका समाज के विकास पर असर पड़ता है।' एक दूसरे रूसी विद्वान् प्लेखनाफ का भी मत है कि भौगोलिक

परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। उनका कहना है 'हम सब इस बात को जानते हैं कि उत्पादन की शक्तियाँ भौगोलिक विकास की अवस्थाओं की विशेषताओं पर प्राथमिक रूप से निर्भर हैं।' लेकिन प्लेखनाफ भौगोलिक प्रभाव ही को मुख्य नहीं मानते। वे कहते हैं, 'ज्योंही कोई खास सामाजिक सम्बन्ध उत्पन्न हो जाते हैं, त्यों ही वे अपनी बारी में उत्पादन की शक्तियों के विकास पर एक विशेष प्रभाव डालते हैं। इसलिए जो प्राथमिक रूप से परिणाम था, वह अब कारण के रूप में परिणत हो जाता है। एक तरफ़ उत्पादन की शक्तियों के विकास तथा दूसरी ओर सामाजिक प्रणाली के बीच क्रिया प्रतिक्रिया होती रहती है जो विभिन्न युगों में विभिन्न रूप धारण करती है।'

इतिहास निर्माण में भूगोल का कितना स्थान है, इसे हम भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभाव के रूप में देख सकेंगे। इसलिए हम अब भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभावों के कुछ उदाहरण उपस्थित करेंगे।

भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभाव

अपने देश भारतवर्ष को ले लीजिए। हिमालय प्रदेश के लोग पहाड़ी जीवन की कठिनाइयों से परिचित हैं और वे उन कठिनाइयों को दूर कर भी लेते हैं। लेकिन यदि उन्हें बंगाल के सुन्दरबन में लाकर छोड़ दिया जाय तो वे नाविक जीवन से अपरिचित होने के कारण बड़े संकट में पड़ जायेंगे। इसी प्रकार समुद्र-तट पर रहने वाले लोग अच्छे मल्लाह और तैराक होते हैं।

ग्रेट ब्रिटेन की नौसेना इसीलिए अच्छी है कि वहाँ के लोग अच्छे नाविक होते हैं। ग्रेट-ब्रिटेन का कोई भी भाग समुद्र से सत्तर मील से अधिक दूरी पर नहीं है। इतिहास पर भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभाव को प्रगट करते हुए श्री श्वाइन फुर्थ ने लिखा है कि अफ्रीका में जब किसी स्थान में जन संख्या अधिक हो जाती है, तो आबादी का कुछ भाग अपने रहने की जगह को बदल देता है और फिर नये स्थान की परिस्थितियों के अनुसार नये धन्धे करने लगते हैं। भौगोलिक परिस्थितियों के परिवर्तन के कारण खेती करने वाले शिकार करके अपना पेट भरने लगते हैं और पशु-पालन करने वाले खेती करने लगते हैं। मध्य अफ्रीका के जिन भागों में लोहा मिलता है, वहाँ के लोगों ने लोहे के औज़ार और हथियार बनाने का काम शुरू कर दिया। रूसी विद्वान प्लेखनाफ ने इतिहास का अध्ययन करते समय यह देखा है कि जिन स्थानों में धातुएँ नहीं पाई जाती थीं, वहाँ के आदिम निवासी बाहरी सहायता के बिना प्रस्तर युग से बाहर नहीं जा सके। इसी प्रकार हम यह भी देखते हैं कि आदिम मछली मारने वाले लोगों तथा शिकार करने वालों को पशु-पालन तथा खेती के काम करने के लिए यह आवश्यक था कि अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियाँ मिले। लुइस मारगन के विचार से 'नवीन संसार और प्राचीन संसार अर्थात् अमेरिका और यूरोप एशिया आदि के सामाजिक विकास में जो भारी अन्तर है, उसे हम एक तरीके से समझ सकते हैं। वह यह है कि अमेरिका में ऐसे प्राणी नहीं थे जो पालतू बनाए जा सकें, तथा इन दोनों गोलार्द्धों के वनस्पति जगत् में भी अन्तर था। उत्तरी अमेरिका के लाल चमड़ी वाले लोगों के विषय में

लिखते हुए वाइटस ने लिखा है कि इनके पास कोई पालतू जानवर नहीं थे। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, क्यों कि यही मुख्य कारण है जिससे ये लोग विकास के इतने निम्नस्तर पर रह गये।'

भौगोलिक परिस्थितियों का हाथ इतिहास-निर्माण में कितना रहता है, इसका अध्ययन पश्चिमी विद्वानों ने पर्याप्त रूप से किया है। इन विद्वानों में से पीक और फ्लार, तथा जूलियन हक्सले का नाम मुख्य है। इन विद्वानों ने जिस दृष्टिकोण से इतिहास को देखा है, उसके आधार पर निम्नलिखित उदाहरण 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' से उपस्थित किए जाते हैं :—

मनुष्य की उत्पत्ति के भौगोलिक कारण—कहा जाता है कि जब आदिम जंगलों में से पानी हट गया और धरती निकल आई तो, आदिम मानव पेड़ों पर से उतर आए और फिर ज़मीन पर रहने लगे। यह अनुमान किया जाता है कि मनुष्य की उत्पत्ति हिमालय के उत्तर में हुई थी। ज्यों ज्यों धरती सूखती गई, जंगल दक्षिण की ओर खिसकते गये, किन्तु एक जगह पर जाकर उनका सामना अलंध्य पहाड़ों से हुआ, और एशिया से उनका सम्बन्ध टूट गया। इसलिए इन भूखंडों में मनुष्य सदृश अधिवासी या तो समाप्त होने के लिए वाध्य हुए या नई भौगोलिक परिस्थितियों के कारण वे ज़मीन पर रहने लगे और शिकार कर अपना पेट भरने लगे। इस विचार के विद्वानों के अनुसार पाँच लाख वर्ष पहले बरफ़ युग में मनुष्य किसी न किसी रूप में अवश्य रहा होगा। लेकिन अभी इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला गया है। इसलिए प्रमाण के अभाव में सिलसिलेवार इतिहास लिखना सम्भव नहीं हो सका है।

सहारा की सभ्यता का विनाश भौगोलिक कारणों से—जिस समय हिमानी युग की बरफ खत्म हो रही थी, उस समय उत्तरी अफ्रीका में 'आँधी की पेटी' थी। अर्थात् इस पेटी में आए हुए भूभागों में ऋतुपरिवर्तन बहुत तेज़ी से होता था। इस तरह तेज़ी के साथ बदलनेवाला मौसम मनुष्य की कार्य-शक्ति और सफलता के लिए परम उत्तेजक है। यह अनुमान किया जाता है कि इस आँधी की पेटी के कारण उस समय की सहारा मरुभूमि हरी-भरी और उर्वर थी। शायद अफ्रीका या दक्षिण एशिया से ही ईसा से २०,००० वर्ष पूर्व यूरोप को आधुनिक मनुष्य प्राप्त हुए थे। सहारा की यह समृद्धि अधिक दिनों तक न रह सकी। क्योंकि ज्यों-ज्यों हिमानी युग की बरफ उत्तर की ओर हटने लगी, त्यों-त्यों जलवायु की पेटियाँ भी उसके पीछे खसकने लगीं और सहारा प्रदेश सूखी पेटियों के अन्तर्गत आने लगा। इस प्रकार सहारा मरुस्थल में बदल गया। यदि सूखी पेटियाँ न आतीं तो सहारा एक हरा-भरा प्रदेश होता। जो सहारा हरा-भरा, उर्वर प्रदेश था, आज वहाँ छोटे-छोटे नखलिस्तान हैं। सहारा कभी उर्वर-प्रदेश था, इसका प्रमाण हमें छिटपुट नखलिस्तानों में पाये जाने वाले घड़ियालों और ताज़े पानी की मछलियों के अस्तित्व से मिलता है। सहारा के सूख जाने पर वहाँ के रहने वाले दक्षिण तथा उत्तर की ओर जाने के लिए बाध्य हुए।

जलवायु और खेती का प्रारम्भ—इस बीच में जो भूभाग सबसे उर्वर और उपजाऊ था और मनुष्य की कार्य-शक्तियों के लिए सबसे उत्तम था, वह भूमध्य सागर के इर्द-गिर्द की भूमि, इराक और तुर्किस्तान थे। इन देशों से सभ्यता

का विकास पुनः होने लगा। प्राचीन प्रस्तर युग के अन्तिम मनुष्य वृक्षहीन समतलों में खत्म होते हुए, शिकार का पीछा करते हुए, उत्तर की ओर बढ़ चले। अन्त में वे जंगल और समुद्र के बीच फँस गये, और बाल्टिक सागर के तट पर घोंघा, मछली और जंगली फलों को बीन कर खाने लगे। यही काम उनके जीवन का साधन बन गया।

प्रस्तर युग के दूसरे लोगों के जो वंशज उत्तरी अफ्रीका और स्पेन में रह गये थे, उन्होंने 'कास्पीय संस्कृति' का विकास किया। कैसपियन सागर के चारों ओर जिस सभ्यता और संस्कृति का विकास हुआ उसे कास्पीय संस्कृति कहते हैं। इसके सम्बन्ध में अधिक बातें इतिहास से ज्ञात होंगी। हम तो यहाँ केवल इतिहास-निर्माण में भूगोल पर विचार कर रहे हैं। इसलिए इतना ही अलम् होगा।

कास्पीय संस्कृति के विकास के बाद लोग उत्तर की ओर चले गये और पश्चिमी एशिया में पहुँच कर रुक गये। इस मत के अनुसार ज्यों-ज्यों जंगलों की कमी होती गई और बड़े मैदान मिलने लगे त्यों-त्यों जंगली पशुओं की कमी होती गई। जंगली पशुओं को मार कर लोग उनका मांस खाते थे। लेकिन जब जंगली पशुओं की कमी हो गई तो लोगों को मजबूर होकर फल-फूल खाना पड़ा। यह मनुष्य जाति के विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जंगलों की कमी जलवायु के कारण जो हुई, उसके कारण इतिहास के क्रम में परिवर्तन हुआ और विश्व इतिहास का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। मनुष्य कन्द-मूल फल खाने लगा और फिर अनुभव के आधार पर खेती की ओर झुका। अब वह जान गया कि कुछ ऐसी

चीज़ें हैं, जिन्हें बोकर उनकी फ़सल तैयार की जा सकती है। कुछ विद्वानों के अनुमान के अनुसार खेती का प्रारम्भ ईसा से लगभग पाँच हज़ार वर्ष पूर्व पूरब में हुआ था। इस सम्बन्ध में एक कथा प्रचलित है कि देवी इसिस ने शाम देश के हरमन पर्वत पर अनाज पाया, और उन्होंने इस अनाज को अपने पुत्र को दिया। हक्सले महोदय का विचार है कि इस कथा से दो बातें मालूम होती हैं। एक तो यह है कि सम्भवतः पुरुष के बजाय स्त्री ने खेती प्रारम्भ की हो, क्योंकि पुरुष शिकार में व्यस्त रहता था। दूसरी बात यह है कि खेती शामदेश के आसपास के प्रदेश से प्रारम्भ हुई।

इस प्रकार ईसा से लगभग पाँच हज़ार वर्ष पहले जो खेती का प्रारम्भ हुआ, वह फिलिस्तीन होते हुए ईराक में पहुँचा। लोगों ने खेत बनाए और अपने खेतों के पास घर बनाकर रहने लगे। फिलिस्तीन की गुफाओं में हँसिए मिले हैं। इन प्राचीन गुफाओं में हँसिए पाने के कारण विद्वानों का विचार है कि प्रारम्भ में खेती फिलिस्तीन में भी हुई। लेकिन कुछ दूसरे विद्वानों का कथन है कि हँसिए तो अनाज एकत्र करने के औज़ार हैं न कि अनाज पैदा करने के। इस सम्बन्ध में गाडने चाइल्ड का कथन है कि इन गुफाओं में रहने वाले लोग जिन्हें 'नाटुफियन' कहा जाता था, एक पिछड़ी जाति के लोग थे। इन लोगों ने किसी और जाति के लोगों से खेती करना सीखा था। कुछ विद्वानों ने यह मालूम किया है कि खेती भारतवर्ष में आर्यों के आने के पहले शुरू हो गई थी। आर्यों ने भारत में आकर भारत के पुराने रहने वालों से कई वस्तुओं की खेती करना सीखा। इस सम्बन्ध में विद्वानों

ने काफ़ी सबूत इकट्ठा कर लिए हैं, और उन सबूतों के आधार पर कहा जाता है कि आर्यों ने भारत के आदिम निवासियों से धान, इमली, नारियल, केला, पान, सुपारी आदि के बारे में सीखा ।

मिश्र के इतिहास की भौगोलिक परिस्थिति—हम इतिहास के अन्धकार युग से बढ़कर यहाँ पहुँच चुके हैं जहाँ से मिश्र के इतिहास का जन्म होता है । मिश्र के इतिहास के प्रारम्भ के पहले बरफ़ का युग समाप्त नहीं हो गया था, बल्कि उसका प्रभाव बार बार व्यक्त होता था । इसा से लगभग साढ़े चार हज़ार वर्ष पूर्व दुनिया में फिर बरफ का युग आ गया और सौ वर्ष तक बना रहा । इसके कारण ज़मीन के स्तर में परिवर्तन हुए । ज़मीन भी ऊँची हो गई और इसके कारण ईराक के आस पास इतनी बरफ़ गिरी कि कई बसे हुए भाग उजड़ गये । इसी बरफ़ युग में पिघली हुई बरफ़ की बाढ़ की कहानी ही शायद नूह की कहानी बन गई । मिश्र पर भी इस बरफ़ का प्रभाव पड़ा । इस बरफ़ के पहले नीलनदी का प्रदेश दलदल था और बस्ती के काबिल नहीं था । लेकिन बरफ़ के कारण मिश्र की यह दलदली ज़मीन ऊपर उठी और दलदल सूख गया । फिर तो यह ज़मीन बस्ती के योग्य हो गई । बरफ़ के हट जाने के बाद लोग मिश्र के इस प्रदेश में आकर बसने लगे । इस प्रकार मिश्र की सभ्यता शुरू होती है । मिश्र की यह सभ्यता अपने समय की अन्य देशों की सभ्यताओं से बढ़चढ़कर थी । इसका भी कारण मिश्र की भौगोलिक परिस्थितियों में परिवर्तन ही था ।

श्री हक्सले के अनुसार ईसा से चार हज़ार वर्ष पूर्व मनुष्य

ने लेखनकला, सिंचाई, और शराब बनाना सीख लिया था। एक हज़ार वर्ष तक यह सभ्यता बेरोक टोक बढ़ती रही। स्थूल रूप में यह सभ्यता मिश्र से लेकर शाम अर्थात् दजला-फ़रात नदियों के किनारे तक थी।

ईराक की सभ्यता के सम्बन्ध में हक्सले का मत है कि यह साढ़े तीन हज़ार वर्ष से पूर्व में थी। इस युग की सब से बड़ी प्राप्तियों में मेहराब का निर्माण, लिखित कानून और समुद्री जहाज़ हैं इसके बाद फिर ज़मीन की सतह बदली। ज़मीन की सतह ऊँची हुई और सूखे का एक नया युग आया। इस कारण प्राचीन सभ्यता अपने आदिम स्थानों में रह गई क्योंकि यहाँ की ज़मीन नीची हो गई। और जो भूभाग ऊँचा हुआ, वहाँ पर नई सभ्यता का विकास हुआ। मिश्र की सभ्यता ने इस युग में अधिक उन्नति की। हक्सले यह भी मानते हैं कि ईसा के तीन हज़ार वर्ष पहले स्टेपों (घास के मैदानों) में पहले पहल घोड़ों को पालतू बनाया गया। घोड़ों को पालतू बनाने के कुछ ही दिनों बाद सूखे का प्रादुर्भाव हुआ और लोग खाने की कमी के कारण घोड़ों सहित उन जगहों के रहने वालों पर टूट पड़े जहाँ खाने की कमी नहीं थी। इस प्रकार मिश्र और इराक़ की सभ्यता पर जो हमले हुए, उनका कारण स्टेपों में सूखा पड़ना था।

इस सूखे के कारण जहाँ खेती होती थी, वहाँ की आबादी बट गई और लोग दूसरी जगह जाने के लिए मज़बूर हुए। हक्सले का अनुमान है कि ईसा से तीन हज़ार वर्ष पहले तक यूरोप में अनाज पैदा करने वाले लोग नहीं रहते थे। इसके बाद हज़ार वर्ष में जर्मनी, बेल्जियम और फ्रांस के अधिकांश भागों में खेती करने वाले लोग बस गये। भूमध्यसागर इनके मध्यवर्ती होने

के कारण व्यापार का वाहन हो गया और ईजियन सागर के नाविक ईसा से बाईस सौ वर्ष पूर्व तक अतलांकित महासागर के किनारे पहुँच गये। इसी समय पूर्व की ओर भी लोग गये और चीन तथा भारत में एक नई संस्कृति का विकास हुआ।

संसार के जलवायु में ईसा से १८०० वर्ष पूर्व एक महत्त्व पूर्ण परिवर्तन हुआ। इस परिवर्तन के कारण संसार का जलवायु नम और ठंडा हो गया। ईसा से बारह सौ वर्ष पूर्व से दो सौ ईसवी तक नमी और ठंडक का एक नया दौर चलता रहा। इसकी पराकाष्ठा ईसा से चार सौ वर्ष पूर्व में पहुँची और फिर इसका पतन आरम्भ हुआ। पाँच सौ ईसवी तक यह नमी और ठंडक बिल्कुल समाप्त हो गई और एक ज़बरदस्त सूखा पड़ा। उसके कारण भूमध्य सागर से तेज हवाएँ चलने लगीं। और फिर वर्षा हुई। इस प्रकार बैबीलोनिया, असीरिया, तथा बाद में मिश्र, यूनान और रोम की सभ्यताओं का विकास हुआ। भूमध्यसागर सभ्यताओं का केन्द्र हो गया।

संसार की सभ्यताओं तथा इतिहास-निर्माण में भूगोल ने जो कार्य किया है, यह ऊपर दी गई बातों से ज्ञात हो जाता है। इसके अतिरिक्त भौगोलिक प्रभावों के कारण ज़मीन और पशुओं पर जो असर पड़ता है, वह भी महत्त्व पूर्ण है। हक्सले के अनुसार इनका कुछ व्यवाहारिक परिणाम उस समय उस देश के पशुओं, धरती तथा घास के मैदानों पर भी पड़ता है। इस सिलसिले में ज़मीन की रसायनिक बनावट और जलवायु का विशेष महत्त्व है। समय समय पर जानवर अजीब चीजों को खाने लगते हैं, जैसे वे हड्डियाँ चबाने लगते हैं, या मरे हुए जानवरों को खा जाते हैं। इसका जब अध्ययन किया गया तो

विद्वान् लोग इस नतीजे पर पहुँचे वे ऐसा अपने भोजन में किसी प्रकार की कमी पूरा करने के लिए करते हैं। जानवरों के खाने में जो कमी उत्पन्न हो जाती है, वह धरती में किसी प्रकार की कमी पैदा हो जाने से होती है। ज़मीन में 'कमी' के कारण जो परिस्थिति हो जाती है उसके उदाहरण स्वरूप हक्सले ने यह दिखाया है कि अफरीका के कुछ भागों में, जहाँ इस प्रकार खाद्य में खनिज पदार्थ की कमी है, वहाँ के बच्चे नमक के कंकड़ों को उसी प्रकार पसन्द करते हैं, और उसी प्रकार नमक पर टूटते हैं जैसे सभी बच्चे मिठाई पर टूटते हैं।

इसी प्रकार घास भी मनुष्य की उन्नति के लिए आवश्यक है। घास से केवल मांस ही नहीं, बल्कि ऊन, चमड़ा, दूध, मक्खन, पनीर, और हड्डियों, चमड़ों, सींगों से भिन्न २ प्रकार की बनी हुई चीजें मिलती हैं। ग्रेट ब्रिटेन में प्रतिवर्ष घास की उपजों का मूल्य चालीस करोड़ पौंड तक पहुँचता है। न्यूज़ीलैंड के लोग तो घास की कमाई खाते हैं।

इतिहास-निर्माण में भूगोल का जो स्थान है, उसे हमने भलीभाँति देख लिया। इसके आधार पर हमें भूगोल की शिक्षा इस प्रकार देना चाहिए कि बालकों में अन्य विषयों को भी भौगोलिक दृष्टि से देखने का अभ्यास हो जाय।

इतिहास और भूगोल

इतिहास-निर्माण में भूगोल के स्थान को देख लेने के पश्चात् अब इतिहास और भूगोल के सम्बन्ध पर विचार करना चाहते हैं। इतिहास जैसा कि हमें ज्ञात है किसी देश के उत्थान-पतन

की घटनाओं से सम्बन्ध रखता है। किसी भी देश के व्यक्ति और समाज के कार्य प्रणालियें के प्रभावों को देखता है। इस प्रकार प्रत्येक देश के समाज और व्यक्ति-गत अथवा नेतागत कार्यों को विवेचना तथा विवरण उपस्थित करना इतिहास का कार्य है। यही कारण है कि प्रत्येक देश का इतिहास दूसरे देश के इतिहास से भिन्न हैं क्योंकि सामाजिक विभिन्नताएँ और विषमताएँ इसका कारण हैं।

लेकिन भूगोल कुछ प्राकृतिक परिस्थितियों के आधार पर चलता है। यूरोप में इतिहास की दृष्टि से कई भाग हो सकते हैं। जितने भी यूरोपीय देश हैं, उनका अपना अलग अलग इतिहास है। लेकिन भूगोल के अपने प्रदेश हैं। एक भौगोलिक प्रदेश में कई देश आ सकते हैं। भौगोलिक वर्गीकरण राजनीतिक अथवा ऐतिहासिक आधार पर नहीं होता। वरन् प्राकृतिक स्थिति, पृथ्वी की बनावट, जलवायु, वनस्पति और पशु-पक्षी के आधार पर होता है। अतः इतिहास और भूगोल में पहला मौलिक भेद यही है।

इतिहास और भूगोल में काल और स्थान की दृष्टि से भी अन्तर पाया जाता है। इतिहास काल अथवा समय के आधार पर मुख्य रूप से चलता है। इतिहास की जितनी भी घटनाएँ हैं, वे किसी समय में हुई होंगी। पर सभी ऐतिहासिक घटनायें समान रूप से महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। भूगोल का ध्येय किसी व्यक्ति विशेष अथवा कोई घटना विशेष का वर्णन नहीं होता। साधारण मनुष्यों का साधारण परिस्थितियों में वर्णन होता है। इतिहास में हम पिछले हजारों वर्ष की पुरानीं घटनाओं तथा महत्व पूर्ण शासन सम्बन्धी सुधारों से प्रारम्भ कर वर्तमान काल तक आते

हैं। पर भूगोल में नवीन दृष्टि कोण से दस बीस वर्ष का समय प्र्याप्त समझा जाता है। इतिहास और भूगोल का अन्तर आज कल की परिस्थितियों के कारण और भी स्पष्ट हो जाता है क्यों कि वाणिज्य व व्यापार राजनीतिक सीमाओं को उलंघन कर समस्त संसार में फैल रहा है। भूगोल में हम जीवों तथा वनस्पतियें के निरीक्षण द्वारा सामान्य मनुष्यों के रहन सहन का साधारण परिस्थियों में अध्ययन करते हैं। पर यदि हम बहुत विस्तृत दृष्टिकोण लें तो भौगोलिक भूमिका और ऐतिहासिक भूमिका में कम अन्तर रहा जाता है। उदाहरण स्वरूप आज के इतिहास में यूरोप और अमेरिका का विशेष प्राधान्य है पर भूगोल की दृष्टि से यूरोप, अमेरिका, हिन्दुस्तान, चीन, अफरीका, आस्ट्रेलिया अदि सभी महत्वपूर्ण हैं।

आज का अधिकारीवर्ग भूगोल से बहुत ही लाभ उठा रहा है क्योंकि वह किसी स्थान का महत्व अथवा किसी उद्योग आदि पर निर्णय करते समय भौगोलिक परिस्थितियों का प्रयाप्त ध्यान रखता है। इतना ही नहीं कोई कानून बनाने में भी उसके भौगोलिक महत्व का ध्यान रखता है। सहारा के रेगिस्तान में वह लगान सम्बन्धी प्रस्ताव नहीं उपस्थित करेंगे। यदि दोआबा का प्रश्न आयेगा तो फौरन कहेंगे कि वहाँ इतना लगान लगने का कानून बनना चाहिए अथवा ऐसा टैक्स लगना चाहिए। और अधिक दूर जाने की आवश्यकता नहीं आज स्थान स्थान का महत्त्व उसकी भौगोलिक स्थित के कारण बहुत बढ़ गया है। अतः हमें आजकल के विवाद ग्रस्त प्रश्नों के सुलझाने में भौगोलिक ज्ञान लाभदायक होगा।

ब्रिटिश द्वीप समूह के उद्योगीकरण का कारण उसके

आविष्कारों के इतिहास में मिलता तो है पर उसकी जड़ का पता भौगोलिक अध्ययन से चलता है। आज ब्रिटेन के पास अपने देशवासियों के खिलाने भर का अन्न नहीं होता है यद्यपि वह बना हुआ माल काफी तैयार करता है। आज ब्रिटेन की बहुत कम भूमि में हल अथवा ट्रेक्टर चलते हैं। फिर आज एक अंग्रेज किसान एक एकड़ भूमि में कम परिश्रम और लागत से दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक अनाज पैदा कर लेता है। आज वह आदर्श किसान समझा जाता है। ब्रिटेन में अंग्रेज मज़दूरों की मज़दूरी सन् १८५१ से १८८१ के बीच के समय में सबसे अधिक थी पर इसी समय नये नये कल कारखानों का आविष्कार हुआ और वहाँ और भी अच्छी मज़दूरी पाने के कारण लोग कल कारखानों में चले गये और ब्रिटेन की खेती को इससे ज़बरदस्त धक्का लगा।

ब्रिटेन के पास भूमि की कमी थी अतएव वह ट्रेक्टरों आदि के होते हुए भी अधिक अन्न उपजाने में असमर्थ था। पर दूसरे देशों के पास अधिक भूमि होने के कारण उन लोगों ने आविष्कारों का पूरा लाभ उठाया और बहुत सस्ते दाम में अनाज बेचने लगे। इसका प्रभाव वहाँ की रही सही खेती पर भी पड़ा और इसका यह फल हुआ कि वहाँ बजाय खेती करने के उन्होंने कम मूल्य पर बाहर से अनाज तथा दूसरे कच्चे मालों को मगाना प्रारम्भ कर दिया। और अपनी खेती और भी कम कर उद्योगी करण की ओर और भी ध्यान दिया। ब्रिटेन भौगोलिक परिस्थितियों के कारण अपनी खेती न बढ़ा सका। ब्रिटेन अधिक अन्न उपजाओ का नारा लगा सकता था पर वह भौगोलिक परिस्थितियों के कारण असमर्थ था और है।

वहाँ कानून के द्वारा कच्चा माल पैदा करने वालों का प्रयत्न उसकी भौगोलिक स्थिति के विरुद्ध होगा। क्योंकि एक तो उसके पास भूमि की कमी है दूसरे उसकी आबादी बहुत घनी है। किसी देश के उद्योगी करण के प्रयत्न आदि ऐतिहासिक परिधि के अन्तर्गत बातें हैं। अतएव यहाँ पर भौगोलिक स्थिति का महत्त्व दिखाई देता है। ब्रिटेन के उद्योगीकरण का अध्ययन इतिहास और भूगोल दोनो ही को सहायता से कर सकते हैं और इससे इन दोनों का आपसी सम्बन्ध और भी स्पष्ट हो जाता है।

भूगोलवेत्ता और इतिहासकार दोनों ही संसार को अलग अलग दृष्टिकोणों से देखते हैं। संसार का विभाजन भी अपनी अपनी शैली से करते हैं। इतिहासकार संसार की एकता को दूसरे ढंग से देखेगा और भूगोलवेत्ता एक दूसरे ढंग से। भौगोलिक दृष्टि से संसार का विभाजन वनस्पतियों के भी आधार पर भी किया जाता है। इन स्थानों के सम्बन्ध में तथा उनकी वनस्पतियों के विषय में वहाँ के रहने वाले के रहन सहन के ढंगों द्वारा बतलाया जाता है। खोज करने वालों के जीवनचरित्रों से मनोरंजक कहानियों द्वारा भी उस स्थान का विशेष ज्ञान कराया जाता है। दक्षिणी अफरीका सम्बन्धी भौगोलिक ज्ञान का वहाँ की मिशनरियों के कार्यों द्वारा तथा उनकी लिखित पुस्तकों में वर्णित कहानियों द्वारा मिलता है। जैसे दक्षिणी अफरीका सम्बन्धी की जानकारो में कहानियाँ महत्त्व रखती हैं उसी प्रकार ये कहानियाँ भूमध्य सागर के तटवर्ती प्रदेशों के सम्बन्ध में भी महत्त्वपूर्ण हैं।

अन्त में यह भी कहा जा सकता है कि भूगोल और

इतिहास दोनों ही किसी समस्या के सुलझाने तथा स्पष्टीकरण में सहायक होते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से मध्य यूरोप और पश्चिमी यूरोप की कहानियों में आल्पस पहाड़ बहुत महत्त्वपूर्ण है भौगोलिक दृष्टि से उनका इतना महत्त्व अन्य पहाड़ों की तुलना में कुछ भी नहीं है।

भौगोलिक समन्वय

इतिहास और भूगोल का सम्बन्ध जान लेने के बाद अब हमें यह देखना है कि भूगोल द्वारा अन्य विषयों की शिक्षा कैसे दी जा सकती है। आधुनिक शिक्षा में जितने विषयों को स्थान दिया जाता है उनका चुनाव जीवन में उपयोगिता की दृष्टि से किया जाता है। समाज के एक अच्छे सफल और उपयोगी नागरिक के लिए उन बातों का ज्ञान आवश्यक है जिनका कि उसके वातावरण से सीधा सम्बन्ध है। कुछ परिस्थियाँ ऐसी होती हैं जिनका प्रभाव नियत काल के बाद क्षीण हो जाता है और नई परिस्थियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। भूगोल का प्राकृतिक वातावरण से घनिष्ट सम्बन्ध होने के कारण इन नई परिस्थितियों के उत्पत्ति का उस पर तुरन्त प्रभाव पड़ता है और उसके कारण जीवन सम्बन्धी जितनी अन्य बातें हैं उनके रूप में भी परिवर्त्तन हो जाता है। यही कारण है कि हम भूगोल द्वारा शिक्षा में समन्वय संभव पाते हैं। भौगोलिक समन्वय से शिक्षा के अन्य विषयों का दृष्टिकोण विस्तृत हो जाता है।

भूगोल और भाषा—भूगोल की शिक्षा द्वारा हमें भाषा

की शिक्षा में सहायता मिलती है। यों तो भाषा और साहित्य का निकटतम सम्बन्ध है और भाषा साहित्य के अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसीलिए भाषा की शिक्षा देते समय साहित्य स्वाभाविक रूप से उपस्थित हो जाता है। लेकिन अगर हम भौगौलिक प्रभावों को देखें और उनके आधार पर जीवन की समस्याओं को समझने की कोशिश करें तो यह आवश्यक हो जाता है कि भाषा की शिक्षा में भौगोलिक तथ्यों को स्थान दें। उदाहरण के लिये एक कविता लीजिये। उस कविता का विषय प्रकृति वर्णन है। यदि उस कविता में एक स्थान विशेष के प्राकृतिक वातावरण का चित्रण हो तो उस स्थान के भूगोल से अपने आप विद्यार्थी परिचित हो जाता है। हमारे देश के कुछ कवियों ने हिमालय, गंगा और कुछ अन्य नदियों को लेकर कवितायें लिखीं है। लेकिन उन कविताओं में जो प्रकृति वर्णन मिलता है वह भौगोलिक दृष्टि से अधूरा है। यदि कविगण प्रकृति चित्रण करते समय भौगोलिक वातावरण पर ध्यान रखें तो उनकी कविताओं द्वारा किसी प्रदेश की प्राकृतिक दशा का ज्ञान सरलता से प्रदान किया जा सकता है।

यदि कहानी का पाठ है तो बहुत सी भौगोलिक कहानियाँ हैं जिनमें कि देश २ के लोगों के जीवन सम्बन्धी सजीव चित्र मिलते हैं। इसके अतिरिक्त भौगोलिक अन्वेषणों की कहानियाँ हैं, उन्हें भी पढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार भूगोल और भाषा में शिक्षा की दृष्टि से समन्वय हो सकता है और हम किसी प्रदेश के मानवीय भूगोल का ज्ञान भाषा द्वारा दे सकते हैं।

प्रश्न यह उठता है कि भूगोल भी तो किसी न किसी भाषा में लिखी रहती है। इसलिए भूगोल पढ़ने के लिए किसी न किसी भाषा का ज्ञान आवश्यक है। लेकिन मैं तो यह चाहता हूँ कि भूगोल और भाषा की शिक्षा इस प्रकार होनी चाहिए कि समन्वय उपस्थित हो जाय। भाषा की शिक्षा के साथ भूगोल की शिक्षा और भूगोल की शिक्षा के साथ भाषा की शिक्षा होती रहे।

भूगोल और गणित—गणित आधुनिक शिक्षा का एक प्रमुख विषय है। इसका प्रारंभ अंकों के ज्ञान से होता है और फिर जोड़, बाकी, गुणा, भाग, भिन्न अनुपात आदि प्रश्नों के रूप में इसका विस्तार होता है। कोई गणित ले लीजिये और किसी तरह के प्रश्नों को पढ़िये तो तुरन्त मालूम हो जायगा कि प्रश्नो का सबंध जीवन से नहीं के बराबर है। बालक के वातावरण से भिन्न प्रश्नों को पूछकर गणित को नीरस बना दिया जाता है। यदि गणित के प्रश्नों की रचना बालकों के भौगोलिक ज्ञान के आधार पर किया जाय तो प्रश्न रुचिकर हो सकते हैं। उदाहरण के लिए बजाय इसके कि हम यह पूछें कि ५६८९ में से ४८६२ घटा दो हमें यह पूछना चहिए कि तुम्हारे स्कूल से तुम्हारा घर कितने डगों की दूरी पर है। और फिर इसी तरह नकशा बनाने में पैमाने का हिसाब आता है। उसे क्यों न हम गणित के प्रश्नों में शामिल करें। ऊपर की कक्षाओं में रेखागणित और बीजगणित की शिक्षा दी जाती है। अगर हम रेखागणित द्वारा नकशा बनवाये तो अधिक उचित होगा। किसी जगह की पैमाइश में रेखागणित सहायक होती है।

इसलिए रेखागणित के प्रश्नों द्वारा भौगोलिक समन्वय हो सकता है। भूगोल और गणित का सबंध किसी स्थान की उपज, आयात निर्यात, जन संख्या आदि विषयों से और भी स्पष्ट हो जाता है। तुलनात्मक भूगोल में भूगोल और गणित का सुन्दर समन्वय हो सकता है। यह मैं नही कहता कि पूरे गणित की शिक्षा भौगौलिक समन्वय से संभव है। लेकिन गणित का अधिक अंश भौगोलिक समन्वय के उपयुक्त अवश्य है।

भूगोल और विज्ञान—विज्ञान में हम प्राकृतिक नियमों का अध्ययन करते हैं, किसी तथ्य की जाँच करते हैं और तब किसी नतीजे पर पहुँचते हैं। फिर उसके आधार पर हम कोई सिद्धान्त निश्चित करते हैं। इस प्रकार विज्ञान के अध्ययन द्वारा कितने ऐसे सिद्धान्तों की खोज हुई है जिन के कारण जीवन में असीम परिवर्त्तन हुए हैं। लेकिन विज्ञान की शिक्षा जिस रूप में दी जाती है वह बालकों के कल्पना के योग्य नहीं है। शिक्षा का सिद्धान्त तो यह है कि किसी विषय की शिक्षा देने के पूर्व उसकी आवश्यकता का अनुभव कराया जाय, तभी बालकों का ध्यान उस विषय की ओर लगता है। भूगोल विज्ञान की शिक्षा में आवश्यकता तथा अभिप्राय के रूप में सहायक हो सकता है। विज्ञान के जितने भी रूप हैं उनका समावेश तो भूगोल में है ही। भूगर्भ शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, जीव शास्त्र तथा अन्य वैज्ञानिक शास्त्र भूगोल में इस प्रकार आ गये हैं कि बिलकुल पहिचाने नहीं जाते। भौगोलिक क्षेत्र में प्रवेश कर उनका रूप बदल गया है। इन्हीं वैज्ञानिक शास्त्रों को जो कि भौगोलिक

क्षेत्र में सम्मिलित हो चुके हैं भौगोलिक समन्वय का आधार बना सकते हैं। प्राइमरी कक्षाओं में ऋतुपरिवर्त्तन का ज्ञान भूगोल और विज्ञान दोनों विषयों में रखा गया है। दिन रात का होना, ग्रहण लगना, विज्ञान और भूगोल में रखे गये हैं। फिर क्यों न भौगोलिक समन्वय द्वारा उन दोनों विषयों में सम्पर्क स्थापित करें और शिक्षा को अभिप्राय-पूर्ण तथा मनोरंजक बना दें।

भूगोल और कला—बालकों के मानसिक विकास के लिए कला की शिक्षा आवश्यक है। इसलिये आधुनिक शिक्षा में कला को स्थान प्राप्त है। कला में स्वतंत्र भाव प्रकाशन, कहानी चित्रण, कविता चित्रण, वास्तविक चित्रण और स्मृति चित्रण बच्चों को सिखाया जाता है। कक्षा तीन चार और ऊपरी कक्षाओं के विद्यार्थियों से पोस्टर बनवाये जाते हैं। ऊपरी कक्षाओं के विद्यार्थी पशुओं, पक्षियों तथा मनुष्यों के चित्र भी बनाते हैं। लेकिन विद्यार्थियों का ध्यान नकल की ओर अधिक रहता है। किसी चीज की सूरत की सही सही नकल उतार देने में वे अपना कौशल समझते हैं। लेकिन होना तो यह चाहिए कि जिस प्रकार भाषा भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम है, उसी प्रकार कला भी अभिव्यक्ति का दूसरा माध्यम है। जितने भी प्रकार के चित्रण बच्चों को सिखाये जाते हैं उनका सम्बन्ध भौगोलिक पाठ से अवश्य होना चाहिए। कहानी चित्रण के लिए भौगोलिक कहानियाँ हैं, स्मृति-चित्रण के लिए भौगोलिक निरीक्षण है; वास्तविक-चित्रण के लिये भिन्न २ देशों के पशु-पक्षी तथा वनस्पतियां हैं। यदि मनुष्यों का

चित्र बनाना है तो जिस प्रदेश के भूगोल का अध्ययन हो रहा हो उसी प्रदेश के मनुष्यों का चित्र बनवाया जा सकता है। भूगोल और कला का समन्वय अत्यंत श्रेयस्कर और सुन्दर है। जिस भूगोल के पाठ में चित्र या माडल नहीं होता वह पाठ नीरस हो सकता है। इसलिए भूगोल की शिक्षा में कला बड़ी सहायक हो सकती है।

भूगोल और अर्थशास्त्र—अर्थशास्त्र के अंतर्गत हमारी वे सभी चेष्टायें आती हैं जिनके आधार पर जीवन निर्वाह का कार्य होता है। आदिम युग से मनुष्य किसी न किसी रूप में जीवन निर्वाह के लिए चीजों की अदला बदली करता रहा है। अर्थशास्त्र वस्तुओं की आवश्यकता और उन आवश्यकताओं की पूर्ति के निमित्त जितने कार्य होते हैं उनपर विचार करता है; और कुछ सिद्धान्तों को प्रतिपादित करता है। यदि किसी प्रदेश में किसी वस्तु की आवश्यकता है तो उसके लिए वहाँ की भौगोलिक परिस्थिति उत्तरदायी है। इसी के आधार पर इस प्रदेश की आर्थिक अवस्था का विकास होता है। लेकिन भूगोल और अर्थशास्त्र का जितना निकट संबंध है इसे अर्थ शास्त्र की शिक्षा देते समय व्यक्त नहीं किया जाता। भूगोल और अर्थशास्त्र के संबंध का प्रत्यक्ष रूप विश्व के वाणिज्य और व्यवसाय में मिलता है। व्यापारिक भूगोल भी अर्थशास्त्र और भूगोल के संबंध की एक दूसरी अभिव्यक्ति है। इस लिए भूगोल और अर्थ-शास्त्र में भौगोलिक समन्वय संभव है और इसका उपयोग शिक्षा में अवश्य होना चाहिये।

जीवन पर भौगोलिक प्रभाव

जीवन पर भौगोलिक प्रभाव हमें उस समय दिखाई पड़ता है जब कि हम दुनिया की आबादी का नक्शा देखते हैं। संसार के कुछ देश घने आबाद हैं और कुछ प्रदेश वीरान हैं। लेकिन अगर हम दुनिया की आबादी के नक्शे की तुलना दुनिया में वर्षा तथा बनस्पति के नक्शे से करें तो हमें ज्ञात होगा कि आबादी भौगोलिक प्रभावों पर निर्भर है। इतना ही नहीं जीवन के जितने भी अंग हैं उन सब पर भौगोलिक प्रभाव दिखाई पड़ता है। नीचे दिये गये उदाहरणों से जीवन पर भौगोलिक प्रभाव और भी स्पष्ट हो जायगा :—

(१) चीन और जापान सभ्य संसार से सैकड़ों वर्ष तक अलग रहे हैं। मध्य एशिया के ऊँचे पहाड़, पठार और रेगिस्तान की खोज भौगोलिक अन्वेषकों ने बहुत दिनों के बाद किया है। नहीं तो पहले चीन तक पहुँचना बहुत कठिन था। जापान के चारों ओर की सामुद्रिक परिस्थिति से लोग परिचित नहीं थे। इस प्रकार चीन उत्तर पश्चिम और दक्षिण में प्राकृतिक कठिनाइयों के कारण सभ्य संसार से बहुत दिनों तक अलग रहा। पूर्व में चीन सागर के बारे में जब नाविकों को ज्ञात हुआ तब धीरे २ दूसरे देशों से चीन का सम्पर्क बढ़ा। यों तो चीन का सम्पर्क भारत से बहुत पुराना है लेकिन चीन से यह सम्बन्ध सांस्कृतिक रूप में था क्योंकि भारतवर्ष आने के लिए चीनी यात्रियों को बहुत कष्ट झेलने पड़ते थे। कोई सीधा और सरल मार्ग न होने के कारण चीन और भारत का व्यापारिक संबन्ध न स्थापित हो सका। अब आयात निर्यात के साधन उपलब्ध हैं और चीन

उन्नति के मार्ग पर बढ़ रहा है। उत्तरी अमेरिका किस प्रकार समृद्ध देश बन गया है और किस तरह पश्चिमी और पूर्वी देशों से सम्बन्ध स्थापित हो गया है, इसे हम वर्तमान युग में भली भांति देख सकते हैं। पश्चिमी रहन सहन, विचारधारा, रस्म रिवाज़ आदि का प्रभाव पूर्वी देशों पर पड़ रहा है।

(२) दूसरा उदाहरण नारवे का है। नारवे एक पहाड़ी देश है और उस देश में इतना अन्न भी नहीं उत्पन्न होता कि वहाँ के लोगों के लिए पूरा पड़े। इसलिए नारवे के रहने वाले मछलियों का शिकार करते हैं। नारवे के प्राचीन इतिहास से यह हमें मालूम होता है कि पहले नारवे के लोग अपने देश में अन्न की कमी को पूरा करने के लिए पूर्वी ब्रिटेन और उत्तरी फ्रान्स के किनारों तक जाकर जहाज़ों को लूटा करते थे। यदि हम नारवे के लोगों के इस प्रकार डाका डालने का कारण जानना चाहें तो हमें वहाँ होने वाली अन्न की कमी से ज्ञात हो जायगा।

(३) तीसरा उदाहरण अफरीका का है। अभी उन्नीसवीं सदी तक लोग अफरीका के बारे में बहुत कम जानते थे। अफरीका के भूगोल का ज्ञान न होने के कारण इसका नाम अन्ध महाद्वीप पड़ गया था। अफरीका के अन्दर जाना बहुत कठिन था। सहारा का रेगिस्तान पार करना मौत के मुँह में जाना था। आज भी अफरीका में बहुत से ऐसे प्रदेश हैं जहाँ पर मनुष्य के चरण चिन्ह नहीं लगे। अफरीका की नदियाँ जिनमें कि जल प्रपातों की बहुलता है इस योग्य नहीं हैं कि उनके द्वारा अफरीका के अन्तर में पैठा जा सके। मध्य अफरीका में गहनतम जङ्गल है। ऊपर के इन तीन उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि भौगोलिक दशा का देश और समाज पर कितना प्रभाव पड़ता

है। विज्ञान के आविष्कारों के कारण मनुष्य ने कई प्राकृतिक कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लिया है लेकिन फिर भी भौगोलिक दशायें प्रबल हैं और उन पर सम्पूर्ण विजय प्राप्त करना मनुष्य के लिए असंभव है। उदाहरणार्थ जलवायु को लीजिए।

मनुष्य के रहन सहन और रस्मरिवाज़ पर जलवायु का प्रभाव बहुत पड़ता है। क्योंकि वर्षा और तापक्रम पर ही वनस्पतियों की उत्पत्ति निर्भर है।

जलवायु के आवश्यक अंगों में से अक्षांश होते हैं। अक्षांश की कमी और अधिकता के अनुसार जलवायु में परिवर्तन होता है। ध्रुव प्रदेश का रहने वाला बर्फ के घरों में रहता है, सील मछली का शिकार करता रहता है, रेनडियर पालता है, और चमड़े के वस्त्र पहिनता है। इसके विपरीत विषुवत रेखा के जङ्गली प्रदेश हैं। यहाँ के रहने वाले सुस्त और पिछड़े हुए हैं। प्रकृति ने खाने पीने की चीजों की इतनी बहुलता कर दी है कि इन प्रदेशों के निवासियों को भोजन के लिए तनिक भी प्रयास नहीं करना पड़ता। विकास की दृष्टि से शीतोष्ण जलवायु अपेक्षित है। शीतोष्ण प्रदेशों में न तो अधिक गर्मी पड़ती है न अधिक सर्दी। इस कारण इस प्रदेश के निवासियों को जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कार्य करना पड़ता है और उन्हें सांस्कृतिक विकास का भी अवसर मिलता है। न इतनी गर्मी पड़ती है कि ये लोग सुस्त हो जायँ और न इतनी सर्दी पड़ती है कि रात दिन भोजन एकत्र करने में लगे रहें।

ऊँचाई का प्रभाव तापक्रम पर पड़ता है और इसीलिए मनुष्य पर भी इसका असर पड़ता है। अफरीकी रोडेशिया प्रदेश के पठारों पर अंग्रेज लोग रह सकते हैं लेकिन समुद्री किनारे के

मैदान में मलेरिया के कारण रहना संभव नहीं। भारतवर्ष में पहाड़ों पर कई शहर बस गये हैं जिसके कारण अँगरेजों को रहने में सुभीता होता है। हिन्दुस्तान की गर्मी से बचने के लिए अँगरेजों ने इन शहरों कों बसाया। इस प्रकार जीवन और समाज में भी व्यापारिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति हुई। अतः किसी प्रदेश की उँचाई, 'विषुवत रेखा से दूरी' के कारण जलवायु पर जो प्रभाव पड़ता है, उसमें उपयुक्त परिवर्तन उपस्थित कर देती है। और इसके कारण जीवन की विषमता में कमी हो जाती है।

उन स्थानों में जहाँ कि तापक्रम में बहुत कम-बेशी होती है किसी प्रकार की उपज नहीं होतीं। केवल घास ही का सहारा रहता है। इसलिए इन प्रदेशों में रहने वाले लोग बंजरों का जीवन व्यतीत करते हैं। मवेशियों का झुंड लेकर चारागाह की तलाश में घूमना उनका काम हो जाता है। इन प्रदेशों में वर्षा भी बहुत कम होती है। इन्हीं सब कारणों से संसार के जितने भी घसीले प्रदेश हैं सभ्यता की दृष्टि से पिछड़े रहे हैं। लेकिन विज्ञान के आविष्कारों के कारण इन प्रदेशों को खेती के उपयुक्त बनाया जा रहा है।

उन देशों में जहां कि पहुँचना आसान है, सभ्यता का विकास अधिक हुआ है क्योंकि उनका सम्पर्क दूसरे देशों से आसानी से हो गया और इस प्रकार विचारों का आदान प्रदान होने लगा। जो लोग उन स्थानों में रहते हैं जहाँ कि पहुँचना कठिन है, सभ्यता की दृष्टि से पिछड़े रहते हैं। पहाड़ी प्रदेश के लोग मैदान में रहने वालों से सभ्यता को दृष्टि से पिछड़े रहते हैं। मैदानों में सड़कें और रेलों की सुविधायें हैं इसलिए एक

स्थान से दूसरे स्थान तक आना जाना सरलता से हो जाता है। मैदान की उपज एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाई जा सकती है। बड़े बड़े कारखानों की मशीने मैदानी प्रदेश में आसानी से यथास्थान पहुँचाई जा सकती है। लेकिन पहाड़ी प्रदेशों में सड़कों और रेलों के अभाव के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना सहज नहीं। इसलिए व्यापार अच्छी तरह नहीं हो पाता। पहाड़ों में ऐसे कारखाने नहीं खोले जा सकते जिनमें कि बड़ी मशीनों की जरूरत होती है इसीलिए स्विटज़रलैंड में घड़ियों के कारखाने हैं। घड़ियों के छोटे छोटे पुरजे होते हैं और उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना सरल होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि किसी प्रदेश में आने जाने की सुविधा होने के कारण जीवन पर प्रभाव पड़ता है। उन देशों में जहाँ कि नदियाँ हैं सिंचाई तथा नदियों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना संभव हो सकता है। हमारा तात्पर्य उन नदियों से है जिनमें कि जल पूरा हो और जो वर्ष भर जल से भरी रहें। ऐसी नदियाँ जिन प्रदेशों में होती हैं वहाँ की कृषि उन्नतिशील होती है। नदियों से नहरें निकाल कर सिंचाई तथा जलमार्ग की सुविधा उत्पन्न की जा सकती है अतः जल प्रपातहीन और वर्ष भर जल से भरी रहने वाली सरिताओं का प्रभाव जीवन पर पड़ता है।

यद्यपि जलवायु का प्रभाव अत्यधिक है और इसी के ऊपर किसी स्थान की उपज निर्भर करती है मगर फिर भी स्थल की बराबर की अवहेलना नहीं की जा सकती है। किसी स्थान पर पाई जाने वाली किसी धातु की खान का जीवन पर प्रभाव पड़ता है कोयला और लोहा जिस प्रदेश में पाया जाता है वहाँ

अन्य कठिनाइयों के होते हुए भी लोग बस जाते हैं। भारतवर्ष में तातानगर एक ऐसा ही उदाहरण है। जिन स्थानों की मिट्टी उपजाऊ होती है वहाँ भी जनसंख्या में वृद्धि होती है। इस प्रकार जीवन निर्वाह के लिए जिन प्रदेशों में अनुकूल परिस्थितियाँ होती हैं वहाँ सभ्यता का विकास होता है।

ऊपर की विवेचना के आधार पर हम निम्नलिखित सिद्धान्त बना सकते हैं कि किसी प्रदेश की सभ्यता का विकास निम्नलिखित पाँच भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर है :—

(१) शीतोष्ण जलवायु ; जिसमें कि उचित वर्षा उपज की दृष्टि से होती हो।

(२) मैदानी प्रदेश ; जिसमें वर्षभर जल से भरी नदियाँ हों और जिसमें आने जाने के साधन सरलता से प्राप्त हों।

(३) चौड़ा समुद्री तट ; जिसमें कि ऐसी नदियाँ बहती हों जिनके किनारे बन्दरगाह बनाना सम्भव हो।

(४) उपजाऊ मिट्टी ; जिसमें कि उत्तम खेती हो सकती हो।

(५) लोहा और कोयला तथा अन्य धातुयें, जिनकी उद्योगीकरण में आवश्यकता पड़ती हो, प्रचुर मात्रा में मिलती हों।

जीवन पर पड़ने वाले भौगोलिक प्रभाव की विवेचना इसलिए की गयी है कि भूगोल शिक्षण के समय भूगोल का अध्यापक जीवन पर पड़ने वाले भौगोलिक प्रभावों की ओर यथा स्थान संकेत करता जाय। क्योंकि भूगोल वह अध्ययन है जिसके द्वारा मनुष्य और पृथ्वी के संबंध का ज्ञान होता है। मनुष्य ने जिस प्रकार भौगोलिक परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित किया

है उसके पीछे उसकी यह चेष्टा छिपी है जिसके आधार पर संसार की सभ्यता और संस्कृति का विकास होता है। यदि बालकों को इस तथ्य का ज्ञान न कराया गया तो भूगोल का उद्देश्य पूरा न होगा। हमें बालकों में एक ऐसा भौगोलिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना है जो उन्हें संसार की एकता दिखा सके और उन्हें विश्व का सुनागरिक बना सके तभी विश्व में सुख और शांति की स्थापना होगी।

ठंडे रेगिस्तान का जीवन

जीवन पर पड़ने वाले भौगोलिक प्रभावों पर हमने सामूहिक रूप से विचार किया। अब हम संसार के भौगोलिक प्रदेशों के अनुसार जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को देखेंगे क्योंकि बिना प्रादेशिक भौगोलिक प्रभावों के ज्ञान के हम भौगोलिक कहानियों की आवश्यकतायें पूरी नहीं कर सकते। इसलिए हम ठंडे रेगिस्तान (टन्ड्रा) के जीवन पर जो भौगोलिक प्रभाव पड़ता है उस पर विचार करेंगे।

रेगिस्तान से साधारणतः हमें एक ऐसे प्रदेश का बोध होता है जो उजाड़ रेतीला और गरम हो। हमारी कल्पना में रेगिस्तान एक बहुत हीं गर्म प्रदेश के रूप में आता है लेकिन वास्तव में रेगिस्तान भौगोलिक अर्थ में वह प्रदेश है जहाँ किसी भी किस्म की पैदावार नाममात्र की हो तथा जीव जन्तु और मनुष्य बहुत ही कम रहते हों। इसलिए रेगिस्तान टन्ड्रा प्रदेश भी है जहाँ कि बर्फ के कारण न तो कोई पैदावार ही होती है

और न जीव जन्तुओं के लिए कोई सुविधा ही है। ऐसी दशा में टन्ड्रा एक ठंडा रेगिस्तान ही है।

यह तो हम जानते हैं कि लोग वहीं रहते हैं जहां अच्छी पैदावार होतीं है और हम यह भी जानते हैं कि अच्छी पैदावार के लिए उपजाऊ जमीन और अनुकूल जलवायु की आवश्यकता होती है। जब हम इस दृष्टि से उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव के टन्ड्रा प्रदेशों को देखते हैं तो हम पाते हैं कि उपज की दृष्टि से अनुकूल जलवायु नहीं है। इसलिए घोर शीत के कारण पैदावार का अभाव है। यदि हम प्राकृतिक दशा के अनुसार ठंडे रेगिस्तानी प्रदेश को देखें तो हमें ज्ञात होगा कि सभी प्रदेश बर्फ की चट्टानों से दबे रहते हैं। कहीं २ तो बर्फ ४०० फीट मोटी तह में जम जाती है। ठंडे रेगिस्तानी प्रदेश की नदियां और झीलें तथा आसपास के समुद्र जम जाते हैं। ऐसीदशा में बर्फ वहुत धीरे धीरे समुद्र की ओर खिसकती है और स्थान स्थान पर बड़े बड़े बर्फीले चट्टान पानी में तैरते दिखाई देते हैं। ऐसी है ठंडी रेगिस्तानों की प्राकृतिक दशा।

अब जलवायु को लीजिये। टन्ड्रा प्रदेश में जब गर्मी के दिन होते हैं तो तापक्रम ३० या ४० डिग्री (फा०) से अधिक नहीं होता। गर्मी के मौसम में बर्फ कुछ पिघल जाती है और तब स्थान स्थान पर दलदल, झीलें और पोखर बन जाते हैं। ठंडे रेगिस्तानी प्रदेशों के मुहाने भी इन्हीं दिनों खुल जाते हैं जिससे कुछ आयात निर्यात की सुविधा हो जाती है। झीलों और दलदलों के आसपास कुछ पेड़ पौधे भी उग आते हैं और चारो ओर सुन्दर और मनोहर प्राकृतिक वातावरण

का निर्माण हो जाता है। जब गर्मी का मौसम चला जाता है और ज़ाड़ा आ जाता है तब फिर बर्फ़ का साम्राज्य फैल जाता है।

उपज की दृष्टि से इस प्रदेश में सिवाय झड़बेरियों के और कुछ नहीं होता। इसका कारण यह है कि गर्मी में पड़ने वाली तीस या चालीस डिग्री (फा०) की गर्मी केवल दो तीन इंच बर्फ गलापाती है। इसलिए वे ही पौधे उग सकते हैं जिनकी जड़ें जमीन की गहराई में न जाती हो। नदियों के किनारे जहाँ की मिट्टी मुलायम हुई वहाँ कुछ बड़े पौधे भी उग आते हैं। झीलों और दलदलों के निकट भी कई तरह के पौधे उग आते हैं। पैदावार के नाम पर यहाँ काई होती है। यह काई कई तरह की होती है और इसे टन्ड्रा प्रदेश में पाये जाने वाले रेनडियर (बारह सिंघा) खाते हैं''। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं होता।

ठंडे रेगिस्तान के जीव जन्तुओं में हम पहले रेनडियर का नाम ले सकते हैं। रेनडियर एक प्रकार का बारहसिंघा है जो इस प्रदेश में अधिक संख्या में पाया जाता है। यह एक ऐसा पशु है जिसके शरीर का प्रत्येक भाग यहाँ के निवासियों के काम आता है। रेनडियर का माँस खाया जाता है, चम का कपड़ा पहिनते हैं और हड्डियों का हथियार बनाते हैं। वास्तव में रेनडियर ठंडे रेगिस्तान का ऊँट है। यह बर्फ पर चल सकता है और काई खाकर अपना पेट भर सकता है। रेनडियर के अतिरिक्त सफेद भालू, कुत्ते, लोमड़ियाँ भी पाई जाती हैं। नदियों में मछलियाँ मिलती हैं जिनमें की ह्वेल और सील मछली की अधिकता है।

अब यहाँ के रहने वालों को देखिये। यहाँ के रहने वालों का जीवन भौगोलिक प्रभावों का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। जो लोग समुद्रके निकट रहते हैं वे उसी स्थान की परिस्थितियों में जीवन निर्वाह करते हैं। अमेरिका के टन्ड्रा में थोड़े बहुत 'लाल हिन्दुस्तानी' (रेड इण्डियन) भी पाये जाते हैं। नारवे और रूस वाले ठंडे रेगिस्तान में 'लैप्स' और 'फिन्स' जाति के लोग रहते हैं। इन लोगों को खाने के लिए ठंडे रेगिस्तानी प्रदेश से रेनडियर ही मिलता है। अतः यहां के लोगों का मुख्य उद्यम रेनडियर का पालना है। जिसके पास जितने हो अधिक रेनडियर पाये जाते हैं वह उतना ही धनी समझा जाता है।

जब गर्मी का मौसम आता है, कुछ बर्फ पिघलने लगती है तो इनके दिन फिरते हैं। इन्हीं दिनों ये लोग वर्ष भर का भोजन एकत्रित करते हैं। कई प्रकार की झड़बेरियों को सुखा कर खाने के लिए रखते हैं। मछलियें तथा दूसरे जानवरों का शिकार करते है फिर उन्हें बर्फ में दबा कर रख देते हैं। ये तो इनका गर्मी के मौसम का कार्य-क्रम होता है। जाड़े के दिनों में इनका काम बालदार जानवरों को पकड़ना और उन्हें मार कर उनकी बालदार खाल उतार लेना है। अतः हम देखते हैं कि इनका जीवन बंजारों का सा है। इन्हें अपने खाने के लिए जगह जगह जाना पड़ता है। पशुओं के भोजन के लिए भी घूमना पड़ता है। यदि एक स्थान पर जमकर रहें तो उस स्थान में मिलने वाली चीजों से इनका पेट कुछ दिनों तक भर सकता हैं। जाड़े के दिनों में उन्हें एक ही स्थान पर रहना पड़ता है क्योंकि इन दिनों इन्हें कोई काम नहीं रहता और ये ठंडे रेगिस्तानी प्रदेश

के दक्षिणी भागों में चले जाते हैं। वहाँ पर जङ्गलों की आड़ में रहते हैं। उन जङ्गलों में छोटे मोटे जानवरों का शिकार करते हैं और इनके मवेशियों के लिए घास भी मिल जाती है। गर्मी के आरंभ होते ही ये फिर उत्तर की ओर चले जाते हैं।

ठंडे रेगिस्तानी प्रदेश के विषय में पढ़ाते समय हमें यह भी व्यक्त करना चाहिए कि भौगोलिक परिस्थितियों के कारण स्त्री और पुरुष के कार्यों में भी बँटवारा हो जाता है। पुरुषों का काम शिकार करना और खाने की चीज़ों को इकट्ठा करना है। लेकिन स्त्रियाँ शिकार के लिए नहीं जातीं। वे घर संभालती हैं और पशुओं को चराया करती हैं। जब कभी एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हैं तब खेमें को उखाड़ना और गाड़ना स्त्रियों का कार्य होता है। जाड़े के दिनों में जब पुरुष शिकार में व्यस्त रहते हैं तो घर में औरते रोयें और बालों के कपड़े बनाया करती हैं। इस प्रकार स्त्री और पुरुष अपने कार्यों का विभाजन कर लेते हैं। उन्हें ऐसा करने के लिए भौगालिक परिस्थितियों ने बाध्य किया।

ठंडे रेगिस्तानी प्रदेश में जब कि जीवन एक स्थान में नहीं बिताया जा सकता तब भला मकान कैसे बनेंगे? अत: इस प्रदेश के मकान एक प्रकार का खेमा होता है। यह बाँसों और जानवरों की खाल से बनाया जाता है। इस खेमे के ऊपरी भाग में एक छोटा सा सूराख होता है ताकि खेमें के भीतर जलने वाली आग से निकलता हुआ धुँआ बाहर निकल जाय। इस खेमें के भीतर जितने भी सामान होते हैं वह बहुत हल्के होते हैं। ऐसा इसलिए होता है कि एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने में सहूलियत होती है। यह खेमा जिसे कि 'कूम' कहते हैं, गर्मी के मौसम में इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन जाड़ों के

दिनों में या तो खेमों के ऊपर चमड़े के दो तीन चादरें चढ़ा दी जाती हैं या फिर बर्फ का घर बना लेते हैं। उत्तरी अमेरिका के टन्ड्रा प्रदेश के एस्किमों बर्फ का छोटा सा घर बनाते हैं और अन्दर जाने के लिए एक सुरंग सा बना लेते हैं। घर की बनावट इसीलिए ऐसी होती है कि उन्हें सर्दी से बचना है। हमें टन्ड्रा प्रदेश की शिक्षा देते समय केवल इतना ही नहीं कहना हैं कि यहाँ के घर किस प्रकार के होते हैं। बल्कि यह भी स्पष्ट करना है कि इनके कारण क्या है ?

ठंडे रेगिस्तानी प्रदेश के लोगों का मुख्य उद्यम शिकार करना है। इसलिए इन लोगों ने तरह २ के हथियार और औज़ार बना रखें हैं ! इनका एक औजार जिसे 'क्षरकोन' कहते हैं एक प्रकार का बल्लम होता है जो सील मछलियों के शिकार में काम आता है। इसके अलावा तीर कमान लोहे या पत्थर की कुदालियाँ और चाकू आदि भी इनके पास होते हैं। शिकार पर जाने के लिए इनके पास बेपहिये की गाड़ी होती है, जिसे कि 'स्लेज' कहते हैं। बेपहिये की गाड़ी क्यों होती है। यह तो बुद्धिमान अध्यापक बालकों को प्रश्नों द्वारा बतला देगा। स्लेज गाड़ी को बारहसिंघे या कुत्ते खींचते हैं। यही उस प्रदेश में पाये जाते हैं इसलिए उन्हीं को स्लेज़ में जोता जाता है।

ठंडे रेगिस्तानी प्रदेशों में न तो किसी प्रकार का स्थायी जीवन सम्भव है और न सभ्यता, संस्कृति का विकास। हम यह भलीभाँति जानते हैं कि सभ्यता और संस्कृति के इतिहास में आने जाने के साधनों का कितना महत्व है। जो प्रदेश बर्फ की चट्टानों से पटा हो, जहाँ सड़कों और रेलों का नाम नहीं, जिसकी नदियाँ जम कर बेकार हो गयी हैं वहाँ

किस प्रकार सभ्यता का प्रकाश फैल सकता है ! 'स्लेज' गाड़ी केवल सामान ढोने के और मामूली कामों के लिए काम में लाई जा सकती है । इसे आयात निर्यात का साधन नहीं बनाया जा सकता । इस प्रकार ठंडे रेगिस्तानी प्रदेशों की शिक्षा देते समय हमे यह बतलाना आवश्यक है कि यहाँ चीज़ों की उपज न होने के कारण लोग बंजारों की तरह रहते हैं । आयात निर्यात के साधनों के अभाव के कारण सभ्यता और संस्कृति का विकास नहीं हो सका है । यहाँ के रहने वाले रोज़ कुँआ खोदते है तब पानी पीते हैं । जिनके जीवन में इतनी कठिनाइयाँ हो वे किस प्रकार उन्नति कर सकते हैं । हाँला कि जमीन उपजाऊ है और उपज अच्छी हो सकती है लेकिन अत्यंत ठंडे जलवायु के कारण यह संभव नहीं है । ठंडे रेगिस्तानी प्रदेशों में जीवन का जो रूप है उसे देखते हुए भौगोलिक प्रभाव को कौन नहीं स्वीकार करेगा ।

गरम रेगिस्तान

पिछले अध्याय में हमने ठंडे रेगिस्तानों का प्रभाव देखा। और अब हमें गरम रेगिस्तानों के बारे में पढ़ाते समय जो भौगोलिक प्रभाव पड़ता है उसे भी स्पष्ट करना चाहिए। गर्म रेगिस्तान कर्क या मकर रेखाओं के आसपास पाये जाते हैं। और इनके बनने का खास कारण भयंकर गर्मी और जलवृष्टि की कमी है। गर्म रेगिस्तानों में पानी बहुत कम बरसता है क्योंकि इन प्रदेशों में पहुँचने वाली हवायें सूखी हुआ करती हैं। इसका कारण क्या है? इसे भी बतलाना आवश्यक है। इसके तीन मुख्य कारण हैं। (१) पहला यह कि यह प्रदेश पहाड़ों के पीछे है जहाँ हवा पहुँचते पहुँचते वाष्परहित हो जाती है। आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफरीका के पश्चिमी रेगिस्तान इसी प्रकार बने हैं। (२) दूसरा कारण यह है कि इन प्रदेशों में चलने वाली उत्तरी पूर्वी व्यापारिक हवायें सूखे स्थानों से आने के कारण वाष्परहित होती हैं; सहारा और अरब के रेगिस्तान इसके उदाहरण हैं। (३) तीसरा कारण यह है कि गर्म रेगिस्तानी प्रदेश ऐसे स्थानों में पाये जाते हैं जहाँ भाप से भरी हवाओं को रोकने के लिए ऊँचे पहाड़ नहीं होते। हिन्दुस्तान का 'थार' रेगिस्तान इसका उदाहरण है। इसके अतिरिक्त हम यह भी देखते हैं कि इन रेगिस्तानी प्रदेशों में रात और दिन तथा गर्मी और सर्दी के मौसमों में हवा की गर्मी एक विशेष प्रकार से परिवर्तित हो जाती हैं। रेगिस्तानी प्रदेशों में दिन के समय हवा की गर्मी १२०° तक जाती है। लेकिन रात में यही

गर्मी घट कर ५०° या ६०° हो जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि इन प्रदेशों में जो चट्टानें होती हैं वे दिन की गर्मी के कारण फैल जाती है लेकिन रात की सर्दी के कारण फिर सिमिटने लगती है। इसका यह नतीजा होता है कि चट्टाने टूटने लगती हैं। फिर धीरे धीरे बड़े टुकड़े छोटे होने लगते हैं। और हवा की रगड़ से घिस कर बालू हो जाते हैं। इस प्रकार संसार के गर्म रेगिस्तानों में बालू पाई जाती है।

लेकिन हमें यह न समझना चाहिए कि गर्म रेगिस्तान केवल बालू का मैदान है। भौगोलिक खोजों से यह मालूम हुआ है कि सहारा, अरब और आस्ट्रेलिया के रेगिस्तानों में रेत के अलावे पहाड़ियाँ भी होती हैं। सहारा के रेगिस्तान के पश्चिमी भाग में छोटे मोटे पहाड़ हैं और ट्यूनिस के आस पास पहाड़ी टीले हैं। इनके बीच झीलें तथा घाटियाँ हैं। थोड़े दिनों के लिए इस प्रदेश में छोटी मोटी नदियाँ भी बहने लगती है। गर्म रेगिस्तानों में ऐसे स्थान भी होते हैं जहाँ खजूरों के बाग से होते हैं और इनके आस पास पानी के गड्ढे भी होते हैं। पानी और खजूर के कारण थोड़ी आबादी भी हो जाती है और लोग गेहूं चावल तथा दूसरे अनाजों की खेती भी करते हैं। ऐसे हरे भरे प्रदेशों को नखलिस्तान कहते हैं। ये नखलिस्तान रेगिस्तानी प्रदेशों में खास महत्व रखते हैं। ये कारवाँ के रुकने के अड्डे हैं। इस प्रकार नखलिस्तान गर्म रेगिस्तानों के जीवन सरीखे हैं। रेगिस्तानी रात में आसमान बिलकुल साफ होता है और नक्षत्रों की जगमगाहट से सारा प्रदेश प्रकाशित हो उठता है। जब सूर्योदय होने का समय आता है तो एक विशेष प्रकार का सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। फिर धीरे २ ऊपर उठता हुआ सूर्य

अपनी किरणों से रेत को सुनहरा बना देता है। दोपहर के आते ही धूप जलने लगती है। एक अजीब सी खामोशी छा जाती है। ऐसे रेगिस्तानी प्रदेश में भला किस प्रकार का जीवन हो सकता है? अगर यह नखलिस्तान न होते तो शायद रेगिस्तान हमारे लिए एक पहेली होता।

नखलिस्तानों के साथ हमें यह भी बताना है कि यहाँ की खेती और पैदावार क्या है। नखलिस्तानों में खजूर, गेहूँ, चावल, मक्का और कहीं २ अंगूर, ईख और कपास भी पैदा होते हैं। मिश्र जो कि सहारा रेगिस्तान का ही एक भाग है नील नदी के जल के कारण इन चीजों की पैदावार के लिए प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त रेगिस्तानी प्रदेश में कुछ तरह की झाड़ियाँ नागफनी आदि होती हैं। इन्हें ही रेगिस्तानी ऊँट खाते हैं। जिस तरह से ठंडे रेगिस्तानों में रेनडियर का महत्व है उसी प्रकार ऊँट गर्म रेगिस्तानी प्रदेश में बड़े काम का है। ऊँट के पैर की बनावट ऐसी होती है कि उसका पैर रेत में नहीं धँसता। उसके नथुने ऐसे होते हैं जिनमें कि बालू नहीं घुसती। उसके पेट में एक पानी की थैली होती है जिसके कारण वह कई दिनों तक बिना पानी पिये रह सकता है। ऊँट से दूध पीने को मिलता है और उसका गोश्त भी खाते हैं। नखलिस्तान में भेड़, बकरी, घोड़े और दूसरे जानवर भी पाले जाते हैं। साथ ही हम यह न समझें कि यहाँ किसी प्रकार के खनिज पदार्थ नहीं पाये जाते। दक्षिणी अमेरिका के अटकामा मरु प्रदेश में शोरे की, फारस के मरु प्रदेश में नमक की, और आस्ट्रेलिया तथा अफरीका के कालाहारी मरु प्रदेश में सोने और हीरे आदि की खानें हैं।

जब पैदावार की यह हालत है तब आबादी कैसी होगी ? जीवन निर्वाह के लिए जहाँ इतनी कमी है वहाँ बहुत कम लोग रहेंगे। अगर इनके पेशे पर विचार करें तो हम देखते हैं कि इन्हें 'जारों की तरह भोजन की तलाश में घूमना पड़ता है। ये लोग दो चार दिन के लिए कहीं अपने खेमें लगा लेते हैं और फिर उसके बाद इनका कारवाँ दूसरे स्थान के लिए चल पड़ता है। जिस प्रकार ठंडे मरु प्रदेश के लोग अपने पास कम और हल्का सामान रखते हैं उसी प्रकार यहाँ के लोग भी कम और हल्के सामान रखते हैं। कुछ लोग परिस्थितियों से 'ग आकर चोरी और डाका डालने का काम करने लगे हैं। लेकिन जो लोग नखलिस्तान में रहते हैं उन्हें खाने पीने की सहूलियत होती है। इसलिए ये लोग रहने के लिए लकड़ी, मिट्टी और पत्थर की कोठरियाँ बना लेते हैं। भेड़ों और ऊँटों के बालों से कम्बल और गलीचे बनाते हैं। इस तरह यहाँ के लोगों में कुछ सभ्यता और संस्कृति भी दिखाई पड़ती है।

गर्म रेगिस्तानी प्रदेशों के विषय में पढ़ाते समय भौगोलिक प्रभावों की इन मोटी २ बातों को व्यक्त करना आवश्यक है। और इसके आधार पर हमें कुछ निष्कर्ष भी निकलवाना चाहिए। भौगोलिक परिस्थितियों का अध्ययन कराते समय कल्पना के द्वारा उन्हें इस योग्य बनाना चाहिए कि वे जीवन पर पड़ने वाले भौगोलिक प्रभाव के आधार पर किसी प्रदेश की आर्थिक अवस्था तथा राजनीतिक प्रगति समझ लें। तुलनात्मक पद्धति के आधार पर हमें ठंडे और गर्म रेगिस्तानी प्रदेशों की विशेषताओं की ओर उनका ध्यान ले जाना चाहिए। यदि हम ठंडे और गर्म मरू प्रदेशों की तुलना करें तो हम देखते हैं कि

इन प्रदेशों में भोजन की कमी है। लेकिन ठंडे मरू प्रदेशों में पानी की उतनी कमी नहीं है जितनी की गर्म मरू प्रदेश में। ठंडे और गर्म रेगिस्तानी प्रदेशों के लोगों में सभ्यता और संस्कृति की दृष्टि से भी कुछ समानता है। इस प्रकार तुलना करके हम गर्म रेगिस्तानी प्रदेशों की भूगोल की शिक्षा भलीभाँति दे सकते हैं।

घास के मैदान

उत्तरी ध्रुव प्रदेश तथा कर्क और मकर रेखा के निकट पाये जाने वाले उष्ण मरु प्रदेशों के अध्ययन के पश्चात् हम उस प्रदेश की ओर बढ़ते हैं जिसे घास के मैदानी प्रदेश कहते हैं। जब पानी थोड़ा अधिक बरसने लगता है और जलवायु शीतोष्ण हो जाता है तब घास के मैदानी प्रदेश आ जाते हैं। इन प्रदेशों में इतनी वर्षा हो जाती है कि घास तो अच्छी तरह उग जाय लेकिन बड़े बड़े पेड़ न बढ़ सकें। इन प्रदेशों में न 'टन्ड्रा' जैसी सर्दी पड़ती है और न सहारा जैसी गर्मी। संसार में जितने भी घास के मैदानी प्रदेश हैं वे उष्ण कटिबन्ध के अंतिम और शीतोष्ण कटिबन्ध के प्रारंभिक भाग में पाये जाते हैं। उष्ण कटिबन्ध के अंतिम भाग में जो घास के मैदान पाये जाते हैं उन्हें 'सेवाना' कहते हैं। शीतोष्ण कटिबन्ध के प्रारंभिक भाग में जो घास के मैदानी प्रदेश हैं उन्हें स्टेपीज़ कहते हैं। 'सेवाना' घास के मैदान की स्थिति का अध्ययन करने से हमें यह ज्ञात होता है कि यह मैदान उष्ण कटिबन्ध के जंगली प्रदेश तथा गर्म रेगिस्तानी प्रदेश के मध्यगामी है!

अब हम पहले स्टेपीज़ घास के मैदानी प्रदेश को लेते हैं। इस प्रदेश में जाड़े के मौसिम में बर्फ गिरती है और फिर वसन्त ऋतु की गर्मी से पिघल जाता है। तब कुछ दिनों के लिए जमीन साफ हो जाती है। जब गर्मी का मौसिम आता है तब पेड़ पौधे मुरझा जाते हैं। इसलिए यहाँ ऐसी ही घास उगती है जो कि एक दो महीने में ही उग और बढ़ कर ६ फुट ऊँची

हो जाती है। स्टेपीज़ की प्राकृतिक दशा पढ़ाते समय विद्यार्थियों का ध्यान उनकी उँचाई निचाई की ओर जरूर ले जाना चाहिए। अगर हम एशिया के स्टेपीज़ की प्राकृतिक दशा देखें तो हमें ज्ञात होगा कि यह ऊँचे नीचे मैदान हैं जिनमें कहीं कहीं पहाड़ियाँ भी हैं। प्राकृतिक दृश्य की ओर जब ध्यान जाता है तो वह उदास और आकर्षणहीन दिखाई पड़ता है। हाँलाकि गर्मी के मौसिम के प्रारम्भ में स्टेपीज हरे भरे रहते हैं लेकिन जब गर्मी पूरी तरह से आ जाती है तब यहाँ की हरियाली पीली हो जाती है। इन घास के मैदानों में पशु-पक्षी ऐसे होते हैं जिनका जीवन निर्वाह घास द्वारा हो सकता है। भेंड़, बकरी, गाय, भैंस, ऊँट, खच्चर और घोड़े इन प्रदेशों के प्रसिद्ध पशु हैं। जंगली जानवरों में खरगोश लोमड़ी और सियार का नाम लिया जा सकता है।

स्टेपीज की प्राकृतिक दशा, जलवायु, वनस्पति और पशु-पक्षी के विषय में जान लेने के बाद हमें यहाँ के निवासियों पर विचार करना है। यहाँ के लोगों का खास काम जानवरों को चराना है। घास के मैदानों में यही काम सब से अच्छी तरह से हो सकता है। यहाँ के लोगों का जीवन पशुओं पर निर्भर है इनकी सारी आवश्यकतायें भेंड़ों से पूरी हो जाती है। जिस प्रकार ठंडे रेगिस्तानी प्रदेश में रेनडियर है और गर्म रेगिस्तानी प्रदेश में ऊँट, उसी प्रकार स्टेपीज में भेड़ है। भेड़ के ऊन से कम्बल, कपड़े और खेमे बनते हैं। खाने के लिए दूध और गोश्त मिलता है। गर्मी के दिनों में यहाँ के लोग अधिकतर दूध ही पीते हैं। इस प्रकार हमने देखा कि स्टेपीज के रहने वालों का जीवन किन भौगोलिक परिस्थितियों से प्रभावित है और जिसे स्टेपीज के भूगोल की शिक्षा देते समय बतलाना अत्यन्त आवश्यक है।

जंगली प्रदेशों का जीवन

रेगिस्तानी और घास के मैदानों के कारण जो जीवन पर प्रभाव पड़ता है उसे जान लेने के बाद अब हम जंगलीं प्रदेशों में जीवन पर जो प्रभाव पड़ता है उसे देखेंगे। कोई प्रदेश जंगली क्यों होता है? इस प्रश्न का उत्तर हमें रेगिस्तानों के बनने के कारण से मालूम हो सकता है। जिस प्रदेश में जलवृष्टि की अधिकता होती है वहाँ घासपात और पेड़ पौधे उगने लगते हैं। अगर हम जलवायु के अनुसार संसार के विभिन्न प्रदेश देखें तो हमें ज्ञात होगा कि जहाँ १० इंच या उससे कम वर्षा होती है और सर्दी या गर्मी बहुत पड़ती है वह प्रदेश रेगिस्तानी हो जाते हैं। जहाँ १० से १५ या ३० इंच वर्षा होती है और शीतोष्ण जलवायु होता है वहाँ घास के मैदानी प्रदेश होते हैं। जिन प्रदेशों में ५० या ६० इंच से अधिक वर्षा होती है और तापक्रम ५०° या उससे अधिक होता है वहाँ जंगल पाये जाते हैं। साथ ही यह भी जरूरी है कि जंगली प्रदेश में बराबर साल भर वर्षा होती रहे। जहाँ कुछ महीनों के लिए वर्षा होती है और शेष महीनों में सूखा पड़ा रहता है वहाँ जंगली प्रदेश नहीं बन पाते।

जब हम संसार में जंगली प्रदेशों को देखते हैं तो हमें विषुवत रेखा के दोनों ओर फैले हुए उष्ण कटिबन्ध के अंतर्गत जो स्थल है वहाँ जंगल दिखाई पड़ते हैं। क्योंकि यहाँ तापक्रम ५०° से अधिक रहता है और वर्षा साल भर होती है। दूसरे प्रकार के जंगल भी मिलते हैं जो कि ठंडे रेगिस्तानी प्रदेशों के

दक्षिण में पाए जाते हैं। ऐसे जंगलों को शीतोष्ण वन कहते हैं। संसार में शीतोष्ण वन उत्तरी अमेरिका के टूंडा प्रदेश के दक्षिण में तथा स्कैण्डीनेवियन-पठार और साइबेरिया में जाते हैं। साइबेरिया में शीतोष्ण वन को 'टैगा' कहते हैं।

शीतोष्ण वनों के जलवायु के सम्बन्ध में भी हमें स्पष्ट ज्ञात होना चाहिए। बहुधा भूगोल के अध्यापक महोदय शीतोष्ण वन की कल्पना करते समय यह नहीं समझते कि ये प्रदेश जाड़े के मौसिम में काफी सर्द और गर्मी के दिनों में काफी गर्म हो जाते हैं। वर्षा यहाँ बारह इंच से पचीस इंच तक हो जाती है। यहाँ की ज़मीन में बालू, मिट्टी और कंकड़ होते हैं। अत: ज़मीन की बनावट ऐसी नहीं होती कि पेड़ सरलता से उग सके। इसलिए हम देखते हैं कि शीतोष्ण-वन के वृक्षों की बनावट पर भी भौगोलिक-प्रभाव पड़ा है। इन वृक्षों का तना नीचे की ओर मोटा और ऊपर पतला होता जाता है। एकदम ऊपर वृक्ष नोकीले हो जाते हैं। अत: जब तेज़ हवा बहती है तो पेड़ गिरते नहीं। हवा के कारण इन वृक्षों की डालियाँ बहुत छोटी छोटी होती हैं।

इस प्रकार के शीतोष्ण वनों का जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता होगा? यह तो हम जानते ही हैं कि जंगलों में रहने वाले जंगली कहलाते हैं क्योंकि जंगलों में रहना सभ्यता से दूर रहना है। फिर भी मनुष्य जहाँ भी उसे किसी प्रकार की सुविधा मिल जाती है, रहने लगता है। कहीं कहीं इन जंगलों की गहनता ऐसी हैं कि वहाँ मनुष्य का रहना अत्यन्त कठिन है। लेकिन जहाँ वन गहन नहीं थे, उन स्थानों के वृक्षों को काट कर मैदान बना दिए गये। इन मैदानों में खेती करते हैं और

मवेशियों को चराते हैं। अतः इन वन प्रदेशों में कहीं तो असभ्य जंगली रहते हैं और कहीं खेती करने वाले किसान। गहन वनों में रहने वाले बालदार जानवरों का शिकार करते हैं तथा लकड़ी काटते हैं। यही इनके दो पेशे हैं। पश्चिमी देशों में 'फर-कोट' पहिनने का रिवाज़ है। इसलिए 'फर' (जानवरों के रोयें) बहुत पसन्द किए जाते हैं। गहन-वनों में रहने वाले लोग इन्हीं जानवरों का शिकार करते हैं।

इन वनों की लकड़ी से भी कई चीज़ें बनती हैं। अत: इन वनों की लकड़ी काटना भी एक उद्यम है। सितम्बर के महीनों में लकड़ी काटने वाले इन वनों में जाते हैं और जाड़े के मौसिम में लकड़ी काटते हैं। जाड़े के मौसिम में लकड़ी क्यों काटने जाते हैं? इसका उत्तर भी भौगोलिक प्रभाव की दृष्टि से है और हमें बालकों को यह बतलाना होगा। जाड़े के मौसिम में लकड़ी आसानी से कट जाती है और बर्फ के ऊपर फिसल सकती हैं। जाड़े के दिनों में नदियाँ जम जातीं हैं। इसलिए लकड़ियों को नदियों के जमे बर्फ पर खींच कर लाते हैं। जब गर्मी पड़ने लगती हैं तब नदियों का बर्फ पिघल जाता है। फिर लकड़ियाँ पानी में तैरती हुई निश्चित स्थान में पहुँच जाती है। लकड़ियों के ढोने का सारा खर्च इस प्रकार बचा लिया जाता है। इसीलिए जाड़े के मौसिम में लकड़ी काटने का काम किया जाता है।

शीतोष्ण वन-प्रदेशों में रहने वाले लोगों के जीवन पर भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव इस प्रकार पड़ता है कि इनके पेशे और जीवन-निर्वाह के तरीके एक विशेष प्रकार के हो जाते हैं। भौगोलिक परिस्थितियों के कारण इनके रहन-सहन के ढंग भी प्रभावित होते हैं। इसलिए हमें जब कभी शीतोष्ण वनों का

पाठ पढ़ाना हो, तब भौगोलिक दशा, ज़मीन की बनावट, जलवायु, वनस्पति तथा पशु-पक्षी का वर्णन करते हुए जीवन पर भौगोलिक प्रभाव की ओर ध्यान ले जाना चाहिए। जिन प्रभावों का वर्णन किया गया है, वे संकेत मात्र हैं और भूगोल का सफल अध्यापक इन संकेतों के आधार पर बालकों की रुचि के अनुसार भूगोल को मनोरंजक बनाता है।

———

झाड़-वन प्रदेश

शीतोष्ण-वन प्रदेश के बाद झाड़-वन प्रदेश शुरू होता है। इन वनों के लिए जलवायु ऐसी होती है जिसमें कि वर्षा शीतोष्ण वन-प्रदेश से अधिक है। गर्मी की मात्रा भी इन प्रदेशों में बढ़ जाती है। इसलिए यहाँ के वनों में पाये जाने वाले वृक्षों की पत्तियाँ चौड़ी, चिपटी और पतली हुआ करती है जो पतझड़ के मौसिम में गिर जाती हैं। पत्तियों की यह विशेषता जलवायु के कारण हैं।

झड़-वन प्रदेशों में अब खेती करने के लिए मैदान बनाए जा रहे हैं। जंगलों को काट कर ज़मीन को खेती के योग्य बनाते हैं। फिर इन खेतों में जौ, गेहूँ, राई और ओट की खेती होती है। पहले जब कि सभ्यता का विकास हो रहा था, तब मनुष्य इन जंगलों में नहीं आया। लेकिन जब लोहा पाया गया और उसके हथियार बने, तब मनुष्य उन्हें लेकर जंगलों की ओर बढ़ा। इस प्रकार धीरे धीरे आबादी बढ़ी और ज़मीन की ज़रूरत बढ़ी। मनुष्यों के लिए भोजन की माँग बढ़ी। इसलिए जंगलों को काट कर खेत बनाए गये। कौन जानता है कि एक दिन झाड़-वन प्रदेश बिल्कुल खेत ही में बदल दिए जाँय। लेकिन अभी तो ऐसा नहीं हो रहा है और आशा है कि भविष्य में भी न होगा, क्योंकि वैज्ञानिक खोजों के द्वारा कई प्रकार के उपायों को ढूँढ़ निकाला गया है।

झाड़-वन प्रदेश की भौगोलिक दशा के अनुसार लोगों के जीवन पर जो प्रभाव पड़ता है, उसे हमें देखना चाहिए। उद्यम

की दृष्टि से यहाँ के लोगों के तीन पेशे हो सकते हैं। एक तो लकड़ी काटना, दूसरे खेती करना और तीसरे मवेशी पालना। मवेशी-पालने के लिए बड़े चारागाहों की ज़रूरत होती है। मवेशी-पालने के साथ और भी कई पेशे आ जाते हैं। जैसे दूध, मक्खन और गोश्त का व्यापार। डिब्बों में मक्खन, दूध, और गोश्त भर कर अन्य देशों में भेजना यहाँ के लोगों का खास व्यापार बन गया है। इस प्रकार हम देखते है कि झाड़-वन प्रदेश की भौगोलिक दशा के कारण यहाँ के लोगों ने जीवन निर्वाह के कैसे कैसे साधन ढूढ़ निकाले हैं।

जो वन-प्रदेश विषुवत् रेखा के समीप हैं, उनकी विशेषता यह है कि वर्षा की अधिकता के कारण वे अत्यन्त गहन हैं। ये वन-प्रदेश अफ्रीका की काँगो नदी के बेसिन और दक्षिणी अमेरिका के अमेज़न नदी के बेसिन में पाये जाते हैं। विषुवत् रेखा के वन-प्रदेशों की गहनता के कारण यहाँ सभ्यता का विकास अन्य प्रदेशों की अपेक्षा बहुत कम हुआ है। इन प्रदेशों में न तो आयात-निर्यात की सुविधा है और न स्वास्थ्य के अनुकूल जलवायु ही। यहाँ तो बड़े बड़े जंगली जानवर रहते हैं जो जंगलों में निडर घूमा करते हैं। ऐसी परिस्थिति में सभ्य जगत् के लोग कैसे रह सकते हैं। काँगों बेसिन में बौने (पिग्मी) रहते हैं। इसी प्रकार अमेज़न नदी के जंगली प्रदेश में भी जंगली लोग रहते हैं। पेड़ों पर झोपड़ी बना कर रहना, भोजन के लिए जानवरों का शिकार करना इन प्रदेशों के लोगों का काम है। यदि इन जंगलों में आयात और निर्यात की सुविधाएँ बढ़ाई जा सकें तो इनका भविष्य उज्जवल हो जाय। झाड़-वन प्रदेशों की पैदावार व्यापारिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण

है। जंगलों को साफ कर चारागाही और खेती का प्रबन्ध किया जा सकता है। यहाँ के रहने वालों की भी दशा सुधारी जा सकती है। लेकिन जो 'सभ्य' जातियाँ इन झाड़-वन प्रदेशों के आधार पर जीती हैं, उनका स्वार्थ यहाँ के रहने वाले लोगों को असभ्य और अशिक्षित बनाए ही रखने में है। यदि यहाँ के रहने वाले अपनी दशा को समझने लगें तो अफ्रीका और अमेज़न के प्रदेशों से यूरोपीय जातियों को भागना पड़ेगा। यूरोपीय जातियों ने झाड़-वन प्रदेशों को अपनी आवश्यकताओं की सहज पूर्ति के लिए अविकसित छोड़ रखा है। ऐसा वे अपनी भौगोलिक परिस्थिति के कारण करते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह तो नहीं है कि जिन देशों में किसी बात की कमी हो, वे दूसरे देशों को अपने अधिकार में करके उनका शोषण करें। भूगोल लोकतंत्र की सत्ता के स्वीकार करता है और सब के लिए समान अधिकार प्रदान करता है। अतः भूगोल को शोषण और अन्याय का आधार नहीं बनाया जा सकता।

ऊँचे पठारी और पहाड़ी प्रदेश

पहाड़ी और ऊँचे पठारी प्रदेश का भौगोलिक अध्ययन प्रारम्भ करने के पहले अध्यापक को चाहिए कि वह जलवायु पर किसी स्थान की ऊँचाई का जो प्रभाव पड़ता है, अच्छी तरह समझा दे। बहुधा यह देखा गया है कि अध्यापक संसार के विभिन्न प्रदेशों की शिक्षा इस प्रकार देने लगता है कि बच्चे उन प्रदेशों की विशेषता पहले ही से जानते हों। अध्यापक विद्यार्थियों को केवल यह बतला कर संतोष कर लेता है कि ऊँचे पठारी और पहाड़ी प्रदेश कहां पाये जाते हैं। इसका कारण भूगोल के मानवीय पक्ष की अवहेलना है। इसलिए प्रत्येक प्रदेश की भौगोलिक दशा का अध्ययन इस दृष्टि से किया जाय कि उसका प्रभाव स्पष्ट हो जाय।

ऊँचे पठारी और पहाड़ीं प्रदेश अपनी उँचाई के कारण अक्षांश के प्रभाव से प्रायः मुक्त होते हैं। विषुवत् रेखा के निकट में जो पहाड़ी प्रदेश हैं, वे अपनी उँचाई के कारण विषुवत् रेखा के ताप से उतना प्रभावित नहीं होते जितना कि मैदानी प्रदेश। ऐसा क्यों होता है? यह प्रश्न विद्यार्थियों से पूछना चाहिए। यहां पर जलवायु के प्रमुख कारणों की पुनरावृत्ति हो जाती है और उनका ज्ञान किसी स्थिति विशेष के आधार पर और भी पुष्ट हो जाता है।

ऊँचे पठारी और पहाड़ी प्रदेश में पाई जाने वाली वनस्पतियों का वर्णन करने के साथ संक्षेप में यह बतलाना

उचित होगा कि विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ किन परिस्थितियों में पाई जाती हैं और उनपर जलवायु का क्या प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार अधिक वर्षा वाले मैदानी प्रदेशों से लेकर रेगिस्तानी प्रदेशों तक की वनस्पतियों के वर्णन के आधार पर पठारी और पहाड़ी प्रदेश की वनस्पतियों का वर्णन प्रस्तुत किया जाता है। इस तरह वनस्पतियों को प्रस्तुत करने में अधिक समय की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों के विषय में संसार के प्राकृतिक भूगोल की शिक्षा देते समय विस्तार-पूर्वक समझाया गया है। अतः किसी प्रदेश की वनस्पतियों के सम्बन्ध में अन्य प्रदेशों की वनस्पतियाँ केवल तुलनात्मक अध्ययन के लिए प्रस्तुत की जाती हैं। तुलना के आधार पर किसी प्रदेश की प्रमुख विशेषताएँ भलीभाँति समझाई जाती हैं।

पहाड़ी प्रदेश की जलवायु और वनस्पतियों के देखते हुए वहाँ के निवासियों के उद्यम की कल्पना की जा सकती है। जंगलों को काटना, लकड़ी चीरना, मवेशी पालना, साधारण खेती करना और ऊनी कपड़े बुनना आदि हो सकता है। अल्मोड़ा और नैनीताल के ज़िले संयुक्त प्रान्त के पहाड़ी प्रदेश हैं। इस प्रदेश के निवासी जंगल की लकड़ियाँ काटते हैं, मवेशी पालते हैं, खेती करते हैं, ऊनी कपड़े बुनते हैं। आने जाने के साधन की कमी होने के कारण पहाड़ी प्रदेश का विकास नहीं हो पाता। जब तक अच्छी सड़कें नहीं होतीं, तब तक पहाड़ी प्रदेशों की आर्थिक अवस्था नहीं सुधरती। एक पहाड़ी प्रदेश कितना विकसित हो सकता है, यह हम स्विट्ज़रलैंड में देख सकते हैं। स्विट्ज़रलैंड पहाड़ी देश है। यहाँ के निवासियों ने स्विट्ज़रलैंड की नदियों और झीलों की

सहायता से बिजली उत्पन्न की और वह बिजली सम्पूर्ण प्रदेश के लिए पर्याप्त होती है। स्विटज़रलैंड की सड़कें भी अच्छी हैं। इस प्रकार स्विट्ज़रलैंड के निवासियों ने आयात निर्यात की सुविधाएँ एकत्रित करके अपने देश का विकास किया। पर पहाड़ों की ऊँचाई तो वे कम नहीं कर सकते। इसलिए मैदानी प्रदेश से पहाड़ी प्रदेश में बड़ी और भारी मशीनों को ले जाना सम्भव नहीं है। यही कारण है कि स्विटज़रलैंड में घड़ी बनाने का काम होता है। घड़ी के छोटे छोटे पुर्जों के ले जाने और ले आने में पहाड़ों की ऊँचाई बाधक नहीं होती। इस उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी पहाड़ी प्रदेश में कपड़े बुनने के कारखाने या मोटर बनाने के कारखाने क्यों नहीं हो सकते।

पहाड़ी प्रदेश का प्रभाव वहाँ के निवासियो के स्वास्थ्य पर अच्छा पड़ता है। पहाड़ों पर रहने के कारण उन्हें खूब मेहनत करना पड़ता है। नैपाल के गोरखे इसीलिए बहुत मज़बूत होते हैं। पहाड़ों में आने जाने की सुविधा न होने के कारण यहाँ के रहने वाले दूसरे देशों से सम्पर्क स्थापित नहीं कर पाते। इसलिए इन्हें सभ्यता और संस्कृति के विकास में पीछे रहना पड़ता है। हिमालय प्रदेश में भूटान बीसवीं सदी की सभ्यता से उतना प्रभावित नहीं हुआ, जितना कि भारतवर्ष।

पठारी प्रदेश का जीवन पर प्रभाव लगभग पहाड़ी प्रदेश जैसा ही होता है। लेकिन जलवायु के कारण यह प्रदेश अपने निवासिर्थों को वह सुविधाएँ नहीं प्रदान करता जो कि मैदानी प्रदेश में रहने वालों को उपलब्ध हैं। तिब्बत एक पठारी देश है। इसके चारों ओर हिमालय पहाड़ है। इसलिए तिब्बत सूखी हवाओं के कारण उजाड़ बन गया है। यहाँ की धरती

ऊसर है। अतः उपज की कमी होने के कारण जनसंख्या नगण्य है और आने जाने की सुविधा न होने से दूसरे देशों से भी उतनी सहायता नहीं पहुँचाई जा सकती जितनी की अपेक्षित है। इसी प्रकार संसार के जितने अन्य पठारी प्रदेश हैं, उनका अध्ययन करने से जीवन पर पड़ने वाले भौगोलिक प्रभाव को व्यक्त किया जा सकता है।

समतल प्रदेश

पहाड़ी और पठारी प्रदेशों के बाद संसार के समतल प्रदेशों का भौगोलिक अध्ययन करते समय हमें यह ज्ञात होगा कि अनुकूल भौगोलिक परिस्थितियों के कारण समाज का विकास होता रहता है। सभ्यता और संस्कृति के विकास और प्रगति के लिए समतल मैदानी प्रदेश अनुकूल और उचित वातावरण प्रस्तुत करते हैं। मैदान की उपजाऊ मिट्टी नदियों की देन हैं। जलवृष्टि और जलवायु का प्रभाव भी मानव जीवन पर इस प्रकार पड़ता है कि अनेक धन्धों के लिए अवसर मिलते हैं। खेती, चारागाही, उद्योग-धन्धे, तथा अन्य सामाजिक कार्य जिनका आर्थिक महत्त्व भी है, उन सब का अध्ययन समतल-प्रदेश के भौगोलिक अध्ययनमें मिलता है।

मैदानी प्रदेश के भूगोल को पढ़ाते समय अध्यापक को चाहिए कि वह पहाड़ी प्रदेश से इसकी तुलना करे। जिन कठिनाइयों के कारण पहाड़ी प्रदेशों का सामाजिक और आर्थिक विकास नहीं हो पाता, उनका अस्तित्त्व मैदानी प्रदेश में नहीं है। इस प्रकार की तुलना से विद्यार्थियों की समझमें मैदानी प्रदेश का जीवन पर जो प्रभाव पड़ता है, आ जाता है। अतः जब हम मैदानी और पहाड़ी प्रदेश की तुलना करते हैं तो देखते हैं कि पहाड़ी प्रदेश के निवासी आने जाने की सुविधायें न होने के कारण एक दूसरे से मिलते-जुलते नहीं। इसका परिणाम यह होता है कि उनका सांस्कृतिक-विकास नहीं हो पाता। वे नई-नई चीज़ों को देख और सीख नहीं पाते। विज्ञान के इस युग में

जब कि नये-नये आविष्कारों के कारण जीवन में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहा है, पहाड़ी प्रदेश के लोग आने-जाने की सुविधाओं के अभाव के कारण इन परिवर्तनों से प्रभावित नहीं हो पाते। इस प्रकार उनमें शिक्षा की कमी रह जाती है।

मैदानी प्रदेश में आने जाने की सुविधाओं के कारण नये नये लोगों से मिलने-जुलने का अवसर मिलता है। इस प्रकार नई-नई बातों को सुनने और समझने के कारण मैदानी-प्रदेश के निवासियों का बौद्धिक विकास होता है। बौद्धिक विकास होने के कारण वे सामाजिक जीवन की सुविधाओं में वृद्धि करते हैं। नये-नये विचार, जिनसे संसार के लोग प्रभावित होते हैं, इसी प्रकार के वातावरण म उनका विकास होता है।

पहाड़ी प्रदेश के लोग बहुधा अपने रहन-सहन के ढङ्ग, भाषा और अन्य सामाजिक प्रणालियों में परिवर्तन के पक्ष में नहीं होते। इसका कारण पहाड़ी-प्रदेश में आबादी का दूर-दूर होना है। एक पहाड़ी गाँव में रहने वाले बहुत ही कम होते हैं। एक गाँव से दूसरे गाँव में दूरी भी काफी होती है। इसलिए इसके रहन-सहन, रस्म-रिवाज़ में परिवर्तन या संशोधन के अवसर उपस्थित नहीं होते। लेकिन मैदानी प्रदेश के लोग किसी विशेष प्रकार की बोली, पोशाक, और रस्म-रिवाज़ के बन्धन में बँधे नहीं होते। निरन्तर विभिन्न प्रकार के रीतियों, भाषाओं, और लोगों से सम्पर्क होने के कारण मैदानी प्रदेश के लोग अपने रहन-सहन के तौर-तरीक़े में परिवर्तन कर लेते हैं।

पहाड़ी प्रदेश की प्राकृतिक दशा के कारण पहाड़ों के निवासी निर्भय होकर पहाड़ी-प्रदेश में रहते हैं। उन्हें किसी प्रकार के

हमले का डर नहीं रहता। इसलिए निर्भयता और स्वावलम्बन उनके चरित्र के प्रमुख अंग होते हैं। लेकिन मैदानी-प्रदेश के रहने वाले लोगों को शत्रुओं और लुटेरों का भय सदा रहता है। इसलिए निर्भय होकर रहना उनके लिए कठिन है। उन्हें अपनी रक्षा के लिए सामाजिक ंगठन करना पड़ता है। अतः मैदानी-प्रदेश में जीवन, सहयोग और सहायता पर निर्भर होता है। यहाँ अकेले बिना किसी प्रकार की सहायता प्राप्त किए रहना असम्भव है।

पहाड़ी और मैदानी प्रदेश की तुलना में उद्योग-धन्धों की दृष्टि से एक विशेष अन्तर है। पहाड़ों में बड़े-बड़े कारखाने खोलना सम्भव नहीं है। लेकिन मैदानी-प्रदेश में बड़े-बड़े कारखाने खोले जा सकते हैं। इसका प्रभाव यह पड़ता है कि पहाड़ में मज़दूरी कम होती है। लेकिन मैदानी प्रदेशों में मज़दूरी अधिक मिलती है। मैदानी प्रदेशों में कारखानों की संख्या अधिक होने के कारण मज़दूरों की मांग अधिक होती है।

इस प्रकार की तुलना करके मैदानी-प्रदेश के भूगोल को पढ़ाना चाहिए। गंगा नदी के मैदान और दक्षिणी पठार की तुलना में जीवन को ध्यान में रखना चाहिए। समतल प्रदेश के भौगोलिक प्रभाव का जो अध्ययन इस प्रकार किया जाता है, वही ठीक होता है। नवीन भूगोल के अध्यापक को संसार के विभिन्न प्रदेशों की शिक्षा देते समय भौगोलिक दृष्टिकोण से वर्तमान स्थिति को समझाना चाहिए।

भूगोल का पाठ-संकेत

भूगोल का कोई भी पाठ हो, जब तक अध्यापक उसकी पूरी तैयारी नहीं कर लेता, तब तक बालकों की रुचि पाठ में न होगी। शिक्षण-संस्थाओं में छात्राध्यापकों को पाठ-संकेत तैयार करने पड़ते हैं। उस समय उनके सामने वास्तविक कठिनाई उपस्थित होती है। पाठ-संकेत की तैयारी में अनुभव, निरीक्षण, कल्पना और मानसिक चेतना की आवश्यकता होती है। लेकिन जिस समय छात्राध्यापक महोदय भूगोल का पाठ-संकेत बनाने बैठते हैं, उस समय उन्हें अपने ऊपर विश्वास नहीं होता। उनका विचार हो जाता है कि कहीं मैं ग़लती न कर बैठूँ। अतः पूरे पाठ-संकेत में 'सन्देह' की भावना व्याप्त हो जाती है। लेकिन सफल अध्यापक को इस बात का विश्वास होता है कि वह जो कुछ पढ़ाने जा रहा है, और जिस ढंग से पढ़ाने जा रहा है, ठीक है। उसे ऐसा विश्वास इसलिए होता है कि उसे अपने अनुभव, निरीक्षण और कल्पना पर भरोसा है। वह छोटे बालक के मनोविकास को भली भाँति समझता है। इसलिए उसका ढंग बालकों की मनोवैज्ञानिक स्थिति के अनुकूल होता है। वह प्रश्न इस प्रकार पूछता है कि बालक अपने आप उत्तर देने के लिए उत्सुक हो उठते हैं। अतः भूगोल के पाठ-संकेत की तैयारी के समय अध्यापक को अपनी योग्यता में विश्वास होना चाहिए। यह विश्वास अपने आप नहीं हो जाता है। यह विश्वास भूगोल के अध्ययन से प्राप्त होता है। जिस अध्यापक ने भूगोल का अध्ययन भली भाँति किया है, उसे आत्मविश्वास अवश्य प्राप्त होता है।

भूगोल के पाठ-संकेत में सबसे पहले **उद्देश्य** निश्चित किया जाता है। उद्देश्य निश्चित करते समय यह देखना चाहिए कि पाठ किस कक्षा के लिए है और पाठ का विषय क्या है ? जिस कक्षा के लिए पाठ है, उस कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की आयु कितनी है ? उस आयु वाले बालकों की मनोवैज्ञानिक दशा कैसी है ? उनका मनोविकास कितना है और किस दिशा में होना चाहिए ? जो पाठ पढ़ाया जाने वाला है, वह किस मनोवैज्ञानिक आवश्यकता की पूर्ति कर सकता है ? जब इन प्रश्नों पर सोच-विचार किया जायेगा, तब भूगोल के पाठ का उद्देश्य प्रगट हो जायेगा।

भूगोल के पाठ-संकेत में उद्देश्य लिखते समय भूगोल के **साधारण** उद्देश्य और भूगोल-पाठ के **विशेष उद्देश्य** दोनों को लिखना चाहिए। भूगोल की शिक्षा का उद्देश्य क्या है ? भूगोल की शिक्षा का साधारण उद्देश्य है जीवन पर पड़ने वाले भौगोलिक प्रभावों का अध्ययन। इसलिए भूगोल के पाठ-संकेत का साधारण उद्देश्य होगा जीवन पर पड़ने वाले भौगोलिक प्रभावों का ज्ञान कराना। भौगोलिक परिस्थितियों से जीवन प्रभावित होता है। मनुष्य भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार अपना रहन-सहन बनाता है। इस प्रकार भूगोल के पाठ का एक विशेष उद्देश्य होगा। वह इस तथ्य की ओर निर्देश करेगा कि पाठ के द्वारा किस विशेष आवश्यकता की पूर्ति होती है। जब मनुष्य को अपनी परिस्थितियों का ज्ञान हो जाता है, तब वह इस बात का प्रयत्न करता है कि वह यथाशक्ति भौगोलिक परिस्थितियों द्वारा जो रुकावटें उत्पन्न कर दी गई हैं, उनसे उसको कम से कम हानि हो, और वह अधिक से अधिक

उन्नति कर सके। इस प्रकार भूगोल के पाठ का एक उद्देश्य होता है भौगोलिक परिस्थितियों का इस प्रकार वर्णन करना कि जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव भली भाँति समझ में आ जाँय। फिर किसी पाठ विशेष का उद्देश्य होता है किसी भौगोलिक परिस्थिति से जीवन के सामञ्जस्य का अध्ययन करना। यदि किसी प्रदेश के जलवायु का पाठ है तो उसकी शिक्षा के द्वारा एक तो हम उस प्रदेश के जलवायु का अध्ययन करते हैं और दूसरे उस प्रदेश पर जलवायु के प्रभाव को जानते हैं। जलवायु के प्रभाव के प्रकाश में हमें उस प्रदेश की सभ्यता और संस्कृति, तथा आधुनिक विकास की धारा भली भाँति समझ में आ जाती है। अतः भूगोल के पाठ-संकेन में उद्देश्य को दो भागों में बाँट देना चाहिए। एक तो उद्देश्य का साधारण भाग होगा, और दूसरा विशेष। साधारण भाग में भौगोलिक परिस्थितियों तथा उनके प्रभावों का ज्ञान होगा। उद्देश्य के विशेष भाग में भूगोल के पाठ द्वारा जो भौगोलिक ज्ञान प्राप्त होता है, उसके द्वारा जीवन और समाज की जो आवश्यकता पूर्ति होती है, उसका उल्लेख होना चाहिए।

भूगोल के पाठ-संकेत के उद्देश्य के बाद **'पूर्व ज्ञान'** आता है। बालकों में जो 'पूर्व ज्ञान' होता है, वही अध्यापक की निधि है। जिस अध्यापक को बालकों के 'पूर्व ज्ञान' की वास्तविक जानकारी होती है, वह ऊटपटांग प्रश्न नहीं पूछता। उसके प्रश्न तो उलझनों को सुलझाने वाले होते हैं। इसलिए भूगोल के पाठ-संकेत की तैयारी करते समय बालकों के 'पूर्व ज्ञान' को भली भाँति जाँच कर लेना चाहिए। अध्यापक एक पाठ कक्षा में पढ़ा देता है, लेकिन विद्यार्थी उसे भूल जाता है। भूले हुए

पाठ को अध्यापक 'पूर्व ज्ञान' मान लेता है। फल यह होता है कि अध्यापक महोदय को निश्चित घड़ी पर धोखा होता है। यदि 'पूर्व ज्ञान' की ठीक ठीक जाँच कर ली जाय तो भूगोल की शिक्षा सरल और मनोरंजक हो जाय। इसका कारण यह है कि भूगोल का एक पाठ दूसरे पाठ से सम्बन्धित होता है। दूसरा पाठ पहले पाठ का विकसित रूप होता है। एक कड़ी से दूसरी कड़ी और फिर इसी प्रकार भूगोल का पाठ चलता है। इसलिए जबतक पिछले पाठ अर्थात् 'पूर्व ज्ञान' की स्थिति ठीक न होगी, तब तक भूगोल के पाठ की शिक्षा सफलतापूर्वक नहीं दी जा सकती।

पाठ-संकेत में 'पूर्व-ज्ञान' के पश्चात् **सहायक-सामग्री** का स्थान है। भूगोल की शिक्षा में सहायक सामग्री की अत्यन्त आवश्यकता होती है। प्रारम्भिक कक्षाओं में भूगोल की शिक्षा देते समय विविध प्रकार की सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिए। भौगोलिक कहानी पढ़ाते समय ऐसे चित्रों का प्रदर्शन अत्यन्त आवश्यक है, जिनके द्वारा बालकों को किसी देश के निवासियों के मकान, वस्त्र तथा रूप-रंग का ज्ञान हो सके। छोटे बालक जब तक चित्र नहीं देखते, तब तक उनकी कल्पना में भौगोलिक कहानी को पूरा स्थान नहीं मिलता। इसलिए भूगोल के पाठ में सहायक सामिग्री के प्रयोग का अधिक महत्त्व है। ऊपरी कक्षाओं में श्यामपट पर नकशा भी बनाना चाहिए। इस नकशे में जलवायु, उपज, जनसंख्या तथा उद्योग-धन्धे सम्बन्धी तथ्यों को अंकित करना चाहिए। इस प्रकार की सहायक सामग्री के प्रयोग द्वारा भूगोल का पाठ सजीव हो जाता है और विद्यार्थियों को पाठ भी भली भाँति समझ में आ जाता है।

भूगोल के पाठ-संकेत में **समन्वय** का क्या स्थान है? क्या समन्वय आवश्यक है? आधुनिक शिक्षा में समन्वय का बड़ा महत्त्व है। इस समन्वय के सम्बन्ध में आधुनिक शिक्षा-विशेषज्ञों ने एक स्वर से कहा है कि शिक्षा में समन्वय को अवश्य स्थान मिलना चाहिए। इसलिए समन्वय से किसी का विरोध नहीं हो सकता। पर कठिनाई तब उपस्थित होती है, जब समन्वय का समय उपस्थित होता है। आजकल प्रत्येक शिक्षालय में समय के अनुसार पढ़ाई होती है। हर एक विषय के लिए समय निश्चित होता है। पाठ-संकेत में 'समय' का भी उल्लेख करना पड़ता है। अध्यापक इस बात का प्रयत्न करता है कि पाठ समय पर ही समाप्त हो। अतः जब ऐसी परिस्थिति हो तब समन्वय कहाँ से सम्भव हो सकता है।

समन्वय के सम्बन्ध में एक दो ग़लत धारणायें भी हैं। उदाहरण के लिए भूगोल के पाठ में समन्वय के लिए वातावरण का उल्लेख कर दिया जाता है। वातावरण का उल्लेख कर देना तो ठीक ही है, पर वातावरण की किन वस्तुओं की शिक्षा उस पाठ विशेष से सम्भव है और दी जा सकती है, इस पर ध्यान नहीं दिया जाता। इसलिए फल यह होता है कि अध्यापक महोदय पाठ की प्रस्तावना करते समय उनके दैनिक जीवन सम्बन्धी एक दो प्रश्न कर देते हैं और अपने सन्तोष के लिए वातावरण से समन्वय स्थापित कर देते हैं। 'आज तुमने क्या खाया है?' 'तुम कहाँ रहते हो?' जैसे प्रश्नों से वास्तविक समन्वय उपस्थित नहीं होता। एक विषय का समन्वय दूसरे विषय से होता है। भूगोल का समन्वय, साधारण-विज्ञान, स्वास्थ्य-विज्ञान, कृषि, साधारण ज्ञान और नागरिक शास्त्र से

अधिक सम्भव है। इसलिए भूगोल से समन्वय स्थापित करते समय यह देखना आवश्यक है कि बालकों को वास्तव में भूगोल के अतिरिक्त किसी अन्य विषय का भी ज्ञान होता है या नहीं।

समन्वय के पश्चात् पाठ-संकेत में **प्रस्तावना** का स्थान है। प्रस्तावना प्रश्नों के रूप में प्रस्तुत की जाती है। ये प्रश्न मूलपाठ की समस्या तो उपस्थित करते ही हैं, पर साथ ही पूर्व ज्ञान की जाँच भी कर लेते हैं। लेकिन बहुधा यह देखा गया है कि प्रस्तावना के प्रश्नों पर अधिक विचार नहीं किया जाता। इसलिए फल यह होता है कि पाठ मनोरंजक नहीं होता।

प्रस्तावना के प्रश्नों के सम्बन्ध में यह स्मरणीय है कि पहला प्रश्न इस प्रकार पूछा जाय कि उसका सम्बन्ध बालकों के वातावरण से हो। इसके बाद दूसरा प्रश्न पहले प्रश्न के उत्तर के आधार पर पूछना चाहिए। पाठ-संकेत में प्रस्तावना के प्रश्न के उत्तर की भी कल्पना करना चाहिए। यह भली भाँति सोच लेना चाहिए कि विद्यार्थी किस प्रकार का उत्तर देंगे। इस तरह विचार करने से प्रश्नों की बनावट के गुणदोष स्पष्ट हो जायेंगे, और प्रथम प्रश्न के सम्भावित उत्तर के आधार पर प्रस्तावना का दूसरा प्रश्न भी पूछा जा सकेगा। भूगोल में एक प्रश्न का दूसरे प्रश्न से वास्तविक सम्बन्ध हो जाता है।

प्रस्तावना के दूसरे प्रश्न के सम्भावित उत्तर के आधार पर तीसरा प्रश्न इस प्रकार पूछना चाहिए कि मूलपाठ की समस्या उपस्थित हो जाय। बहुधा अध्यापकगण प्रस्तावना के प्रश्नों के क्रम का विचार नहीं करते और मूलपाठ के आरम्भ में लिखते हैं, "अच्छा बच्चों आज हम तुम्हें हिन्दुस्तान के जलवायु के बारे में बतायेंगे।" विद्यार्थीगण यह नहीं समझ पाते कि सहसा

गुरू जी को क्या हो गया कि वे हिन्दुस्तान के जलवायु की बातें करने लगे। इसलिए अध्यापक को चाहिए कि प्रस्तावना के अन्तिम प्रश्न में मूलपाठ की समस्या उपस्थित करे।

भूगोल के **मूलपाठ** के सम्भन्ध में अधिक कठिनाई नहीं पड़ती क्योंकि पुस्तकों की सहायता प्राप्त होती है। लेकिन जब से भौगोलिक कहानियों को पाठ्यक्रम में स्थान मिला है, तब से मूलपाठ की भी कठिनाई उपस्थित हो गई है। 'संसार के रहने वाले' नामक पुस्तक में भौगोलिक कहानियाँ नहीं है, वरन् उसमें तो किसी देश का साधारण भौगोलिक ज्ञान है। इसलिए बालकों को 'संसार के रहने वाले' पुस्तक में कहानियों का आनन्द नहीं मिलता। 'संसार के लोग' में वास्तविक भौगोलिक कहानियाँ हैं। इनमें एक कहानी कहने वाला है जो अपने अनुभव के आधार पर किसी भौगोलिक प्रदेश का वर्णन प्रस्तुत करता है, और एक बालक उस कहानी को सुनता है। बालक अपने मनोविकास की स्थिति के अनुसार कौतूहल प्रगट करता है जो कि कक्षा के बालकों की मनोवैज्ञानिक दशा के अनुकूल होता है। इस प्रकार की भौगोलिक कहानियों की रचना का प्रयास अध्यापक को स्वयं करना चाहिए। भूगोल के अन्य पाठों में कठिनाई उपस्थित नहीं होती और अध्यापक बड़ी सरलता से पाठ की तैयारी करके पढ़ा सकता है।

भूगोल के पाट-संकेत में अभ्यासार्थ प्रश्न और श्यामपट लेख साधारण शिक्षण विधि के अनुसार होना चाहिए। इसलिए इनके सम्बन्ध में कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं है। पर इतना तो देखना आवश्यक ही है कि पाठ के जो उद्देश्य निश्चित किए गये थे वे पूरे हुए कि नहीं। इस प्रकार भूगोल का पाठ-संकेत वास्तव में भूगोल की शिक्षा में सहायक होगा।